

भारतीय नारियल पत्रिका



प्रकृति और जलवायु को
समझकर खेती करें

नारियल बाग में
ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXVIII

संख्या : 3

अक्टूबर - दिसंबर 2017

कोची-11



नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बेंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँच: राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुवनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकाता, आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नैर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आंध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पिन्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) धली (तमिलनाडु) तथा साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) में हैं। केरल के आलुवा के पास वाष्वकुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

□ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। □ नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। □ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। □ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। □ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

परामर्श मंडल :

अध्यक्ष

डा. बी. एन. एस. मूर्ति

सदस्य

डा. एस.के. मल्होत्रा

ओम प्रकाश

संपादक मंडल

सदस्य

डा. ए.के. नंदी

डा. अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सरदिंदु दास

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु रानी एन.

डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266,

2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

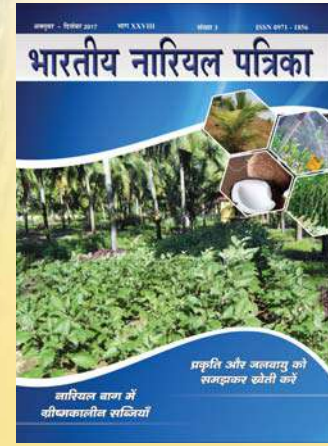
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.	नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा
एक प्रति	10 रु.	सर्वश्री पाइको प्रिंटिंग प्रेस, कोची-18 में मुद्रित
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.	



इस अंक में

प्रकृति और जलवायु को समझकर खेती करें दीप्ति नायर एस.....	2
नारियल बाग में ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ आर ज्ञानदेवन.....	4
नारियल विकास और यंत्रीकरण ए.सी.मैथ्यु, एम.आर. मणिकंठन, बी. हेब्बार.....	8
नारियल पौध का रोपण उचित गहराई में करें के.एस.षण्मुखम.....	13

केरल की जान है नारियल और नारियल तेल भारत की शान भी टी.राजमोहन.....	18
नारियल बागों में मासिक कार्य.....	23
समाचार.....	32
बाज़ार समीक्षा.....	55
बाज़ार रिपोर्ट.....	59



प्रकृति और जलवायु को समझकर खेती करें

दीप्ति नायर एस

सहायक निदेशक, नाविबो, मुख्यालय, कोची

जलवायु परिवर्तन और उसके फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में उत्पन्न संकट स्थिति आजकल के बहुर्चिंचित विषय हैं। वर्ष 2014 दिसंबर में पेरु के लिमा में संपन्न जलवायु सम्मेलन में विश्व राष्ट्रों ने जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए अपना योग्य उपायों के बारे में 12 दिनों तक लंबी परिचर्चाएँ कीं। वर्ष 2016 में पेरिस में संपन्न जलवायु उच्च सम्मेलन में विश्व के राष्ट्रों ने इस संबंध में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। हालांकि हम ने वर्ष 1992 से लेकर चर्चाएँ शुरू कीं फिर भी अब तक इस दिशा में कोई खास कदम नहीं उठा पाए हैं।

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य मौसम में सालभर के आवर्ती बदलावों से नहीं है बल्कि एक वर्ष की वर्षा दो महीनों में ही बरस जाना, बाद में गर्मियों में कड़ी सूखा, वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि, कड़ाके की सर्दी, तूफान, अतिवर्षा आदि सभी जलवायु परिवर्तन के लक्षण हैं। अमलतास पेड़ का अप्रैल के बजाय जनवरी में फूलना भी जलवायु परिवर्तन का परिणाम है।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र में उत्पादन में 70% तक कमी आने की गुँजाइश है। इसके अलावा फसलों में फूल न आना या फूलने के बाद भी फल न लगना आदि अजीब घटनाएँ दुनिया में कई जगह घट चुकी हैं। इस के निवारणात्मक उपायों का परिणाम दिखाई देने तक जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हमारे दैनिक जीवन को भी इसके अनुकूल ढालना अनिवार्य बन गया है।

धरती के वातावरण में हरित गृह गैस के नाम से जाननेवाले कार्बन मोनोक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरो फ्लूरो कार्बन आदि गैसों की मात्रा जब बढ़ जाती है, ये सूरज की तेज रश्मियों का ताप वायुमंडल में ही ठहरने देते हैं और इससे वायुमंडलीय तापन होता है।

प्रश्न यह उठता है कि ये गैस कहाँ से उत्पन्न होते हैं? हरित गृह गैसों का उत्पादन सबसे ज्यादा उद्योग, परिवहन, ऊर्जा आदि क्षेत्रों से होता है। परंतु कृषि एवं वन क्षेत्रों के विभिन्न कार्यकलापों से ही 31% हरित गृह गैस उत्पन्न होते हैं। हमारी कार्य प्रणालियों में नियोजित परिवर्तन लाने से हरित गृह गैसों का उत्पादन कम किया जा सकता है। इसके साथ वायुमंडल में मौजूद कार्बन मोनोक्साइड का भंडारण दूसरे रूप में किया जा सकता है। इससे वायुमंडल में उत्सर्जित कार्बन की मात्रा काफी कम हो जाती है। इस तरह कार्बन का भंडारण मात्र कृषि से ही किया जा सकता है। अतः हरित गृह गैसों की मात्रा कम करने में कृषि क्षेत्र अहम भूमिका निभा सकती है।

हमें विचार करना है कि नारियल की खेती में इस तरह की गतिविधियाँ कैसे अमल में लाई जा सकती हैं।

मिट्टी में जैविक तत्व बनाए रखना

सभी जैविक अपशिष्टों में कार्बन निहित है जिसे जलाने पर वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड का फिर से उत्सर्जन होता है। इसके बजाय अगर इन अपशिष्टों को मिट्टी में ही मिलाए जाने पर उसका परिणाम क्या होगा? नारियल पेड़ से जो

अपशिष्ट मिल जाते हैं उन्हें काटकर पेड़ के थाले में डालकर मिट्टी से ढक दिया जाए तो धीरे धीरे ये अपशिष्ट सड़कर मिट्टी में मिल जाते हैं। किसान के लिए असली फायदा यह नहीं है कि इस प्रक्रिया से हरित गृह गैस उत्पादित होने की परिस्थिति टल जाती है बल्कि किसान की मिट्टी फिर से जीवंत हो जाती है। मिट्टी की संरचना बेहतर हो जाती है। मिट्टी की नमी बनाई रखने की क्षमता बढ़ जाती है। मिट्टी में अधिक सूक्ष्म जीवाणु पैदा हो जाते हैं। आखिर इन सब का परिणाम होगा उत्पादन में वृद्धि।

अंतरा खेती को बढ़ावा देना

नारियल की खेती में अंतरा फसलों की बड़ी भूमिका होती है। नारियल बाग में ज़मीन का अधिकतम उपयोग करने और किसानों की आय में वृद्धि लाने से बढ़कर अंतरा खेती के ज़रिए सौर ऊर्जा का अधिकाधिक उपयोग करके कार्बन का भंडारण होता है। वार्षिक फसलों से बढ़कर बहुवर्षीय फसलों की खेती ही जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए उत्तम होती है। उदाहरण के तौर पर नारियल के बागों में कोको, जायफल, कटहल आदि की खेती की जा सकती है। नारियल बागों में कंदमूल फसलें, केला, सब्जियाँ आदि उगाना भी फायदेमंद होगा।

जैव उर्वरकों का प्रयोग

यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग निर्धारित मात्रा में ही किया जाता है। जहाँ तक मुमकिन हो जैव उर्वरकों का ही प्रयोग करें। मिट्टी के जैविक तत्व पौधों के जड़ों को मज़बूत बनाता है। इसके परिणामस्वरूप पौधे की उत्पादकता बढ़ जाती है।

मिट्टी को आवरण देना

मिट्टी के ऊपर सदा पौधों का आवरण होने से हरित गृह गैसों का उत्पादन नहीं होता है। अक्सर मिट्टी के नाइट्रोजन उर्वरकों से नाइट्रस ऑक्साइड वायुमंडल में फैलता है। नारियल बागों में पेड़ों के बीच की जगह सब्जियाँ, कंदमूल फसलें आदि उगाएं। नारियल पेड़ों के थालों में लोबिया लगाकर पौधे बढ़ने के बाद जोतकर मिट्टी में मिला दें। ये सब कार्य हम कर सकते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है तथा उच्च उत्पादकता सुनिश्चित हो जाती है।

किस्में : उच्च गुणवत्तायुक्त तथा उत्पादन क्षमतायुक्त किस्में लगानी चाहिए। इससे जलवायु परिवर्तन रोका जा सकता है।



नारियल बाग में अंतरा फसल के रूप में सब्जियाँ

पलेवा करना

नारियल पेड़ के थालों में नमी बनाए रखने के लिए पलेवा करना उत्तम उपाय है। इससे मिट्टी की जैविक संरचना भी सुधर जाती है।

नियमित रूप से सिंचाई करना

नियमित रूप से सिंचाई करने से मिट्टी की नमी बनाई रखती है। यहीं नहीं सूखे को रोक कर मिट्टी में मौजूद खनिज तत्वों को वायुमंडल में फैलने से रोकने में सहायक बनता है।

सारे किसान एक जुड़ होकर जलवायु परिवर्तन को बदलने के लिए उपयुक्त कृषि रीतियाँ अपनाने हेतु प्रतिज्ञाबद्ध रहेंगे तो कार्बन डाइ ऑक्साइड वायुमंडल में फैले बिना उसका मिट्टी और पौधों में भारी मात्रा में भंडारण कर सकते हैं। इस तरह संग्रहित कार्बन की ठीक मात्रा का पता लगायी जा सकती है। जितनी मात्रा में कार्बन का भंडारण होता है उसके हिसाब से कीमत भी दी जाने लगी है। वैश्विक तापन एवं जलवायु परिवर्तन को हमें प्रकृति के करीब लाने के ज़रिए के रूप में देखा जा सकता है। किसानों को इसके लिए संगठित प्रयास करना चाहिए।



स्प्रिंकलर विधि से नारियल बाग की सिंचाई



नारियल बाग में ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ

आर ज्ञानदेवन

उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, कोची-11

भारतीय चिकित्सा परिषद की सिफारिशों के अनुसार प्रति दिन हमें 280 ग्राम सब्जियाँ खाना ज़रूरी है। कम से कम औसतन 120 ग्राम सब्जियाँ प्रतिदिन खाने से ही हम सेहतमंद रह सकते हैं। इसलिए हमारे भोजन में सब्जियों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। अतः सब्जियों का उत्पादन बढ़ाने की अत्यंत आवश्यकता है। नारियल उत्पादक राज्यों में नारियल बागों में नारियल पेड़ों के बीच उपलब्ध जगह सब्जियों की खेती करने के लिए अत्यंत उपयुक्त है। भारत जैसे देश में जहाँ की अधिकतर जनता शाकाहारी हैं; सब्जियों का महत्व

और भी बढ़ जाता है। इतना होते हुए भी हमारे देश में अन्य देशों की तुलना में सब्जियों का उपयोग बहुत ही कम है।

इस आलेख में पच्चीस वर्ष से अधिक आयु के नारियल पेड़ों के बागों में सफलतापूर्वक वाणिज्यिक आधार पर खेती के लिए उपयुक्त ग्रीष्मकालीन सब्जियों के बारे में बताया जा रहा है। नारियल बाग में अंतराफसल के रूप में सब्जियाँ उगाने से बाग से प्राप्त आय तथा रोज़गार के अवसर में 3 से 4 गुनी वृद्धि होती है। ह्रस्वकालीन फसल होने के कारण सब्जियों की खेती करने के बाद जो जैव अपशिष्ट प्राप्त होते हैं वह

बाग में ही जोतकर मिला देने से मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ जाती है। अंतराफसल के रूप में सब्जियाँ लगाने से बाग में खरपतवार भी कम हो जाता है। इस तरह बाग साफ सुथरा भी रखा जा सकता है। इससे नारियल पेड़ों को रोग कीटों के प्रकोप से बचाया जा सकता है। बारिश के मौसम में तथा गर्मियों के प्रारंभ (फरवरी से मार्च तक) में नारियल बाग में अंतरा फसल के रूप में कई सब्जियाँ उगायी जा सकती हैं। नारियल पेड़ों के बीच कद्दू, खीरा, बैंगन, करेला, चिचिंडा और परवल उगाए जा सकते हैं।

खीरा

गर्मियों में नारियल बाग में उगाने के लिए उपयुक्त सब्जी है खीरा। खेती के लिए मुटिकोट, सौभाग्या और सलाद खीरा आदि किस्में उत्तम हैं। नारियल पेड़ों के बीच, क्यारियों के बीच 2 मीटर और पौधों के बीच 1.5 मीटर दूरी छोड़कर 60 से मी आकार के गड्ढे खोदकर खीरा लगाया जा सकता है। पौधे लगाने से पहले गड्ढे गोबर और केंचुआ खाद से भर दें। एक गड्ढे में चार या पाँच बीज बोकर दो हफ्ते के बाद अंकुरित पौधों में से तीन तंदुरुस्त पौधों को छोड़कर बाकी निकाल दें। फल मक्खियाँ और भृंग खीरे के मुख्य कीट होते हैं। इन्हें जैव कीटनाशियों के प्रयोग से रोका जा सकता है। बीजाई के 45-55 दिनों बाद 5 से 7 दिनों के बीच फसल की तुड़ाई की जा सकती है। एक एकड़ नारियल बाग से 3000 से 5000 किलो तक खीरा मिल जाता है।

कद्दू

नारियल बाग में गर्मी के मौसम याने जनवरी से मार्च तक खेती के लिए



उपयुक्त सब्जी है कद्दू। अबिली किस्म खेती के लिए उत्तम है। नारियल बाग में कद्दू के पौधे लगाने से खरपतवार अपने आप कम हो जाता है। गड्ढों के बीच दो मीटर की दूरी छोड़कर 60 से मी. आकार के गड्ढे बना दें और उसमें जैव उर्वरक या गोबर डाल दें। एक गड्ढे में 4-5 बीज बोए जाते हैं। अंकुरित पौधों में से तीन तंदुरुस्त पौधों को छोड़कर बाकी निकाले जाते हैं। बीजाई के तकरीबन तीन महीने के बाद फसल की पहली तुड़ाई की जा सकती है। एक एकड़ नारियल बाग में से 6 से 7 टन तक कद्दू मिल जाता है।

परवल

नारियल बाग में सफलतापूर्वक परवल की खेती की जा सकती है। इसके तने को काटकर कलमें लगाई जाती हैं। मई, जून, सितंबर महीनों में परवल की कलमें लगाई जा सकती हैं। इसके फलों का रंग हल्का हरा होता है। अच्छी तरह फल लगने वाले पौधों में से ली गई 30-40 से. मी लंबी कम से कम तीन गाँठ वाली कलमें लगाने के लिए उपयुक्त हैं। नारियल बाग में नारियल पेड़ों के दो कतारों के बीच आपस में 7 मीटर की दूरी छोड़कर क्यारियाँ बनाकर पौधों के बीच 3 मीटर की दूरी छोड़कर परवल की कलमें लगाई जा सकती हैं। परवल की खेती के लिए रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता नहीं है। एक गड्ढे में 2.5 किलोग्राम की दर पर गोबर डालना चाहिए। कलम के नीचे से जब नई बेल अंकुरित होने लगती है तब उसे फैलाने के लिए मचान बनाना चाहिए। पौधे लगाने के 2-3 महीने के बीच फलों





ज़िमीकंद

की तुड़ाई की जा सकती है। एक वर्ष में तकरीबन 35 बार फसल ली जा सकती है। अगर पौधों को दूसरे वर्ष में भी बढ़ने देता है तो बारिश के मौसम में मज़बूत लताओं को छोड़कर अन्य सभी बेलों को काट कर निकाल देना चाहिए जिसमें पहले वर्ष के दौरान फल लगे थे। मचान को फिर से मज़बूत बनाना चाहिए। उसके बाद पौधों के थाले खोलकर खाद मिला देना चाहिए। एक एकड़ से लगभग 2000 किलोग्राम परवल प्राप्त होते हैं। एक एकड़ नारियल बाग से 160000 रुपए की आय प्राप्त होती है जबकि इसकी खेती के लिए मात्र 80000 रुपए का खर्च होता है। अर्थात् परवल की खेती करने से खर्च के मुकाबले दुगुनी आय प्राप्त होती है। अच्छी तरह देखभाल करने पर 2 साल तक इससे अच्छी फसल प्राप्त होती है। इसके बाद बड़ी शाखाओं को काटकर निकालके नई कलमें लगानी चाहिए।

ज़िमीकंद

ज़िमीकंद नारियल बाग में खेती के लिए उपयुक्त फसल है। नारियल पेड़ के नीचे से 2 मीटर की दूरी छोड़कर बाकी जगह गड्डों के बीच तकरीबन 90 से.मी. की दूरी पर ज़िमीकंद लगाया जा सकता है। 60 सें.मी. लंबा, 60 सें.मी. गहरा और 45 सें.मी. चौड़ा आकार के गड्डों में ज़िमीकंद लगा दें। लगाने से पहले गड्डों में ऊपरी रेत गोबर या केंचुआ खाद के साथ मिलाकर डालना चाहिए। गड्डे के मध्य भाग में घनकंद रखकर मिट्टी से ढक दिया जाता है। ज़िमीकंद की ज्यादातर जड़ें मिट्टी की ऊपरी परत में पाए जाने की वजह से ज़िमीकंद अधिक गहराई में मत लगा दें।

ज़िमीकंद लगाने के लिए उत्तम समय फरवरी-मार्च के महीने है। इस समय लगाने से मानसून के पहले की गर्मियों की बारिश में ज़िमीकंद अंकुरित होता है। लगाने के समय एक गड्डे के लिए 2.5 किलोग्राम के हिसाब से गोबर या केंचुआ खाद मिलायें। ज़िमीकंद के लिए रासायनिक ऊर्वरकों की ज़रूरत नहीं है। रोग कीटों का प्रकोप भी बहुत कम है। बीजाई के 8-9 महीनों में फसल की खुदाई की जा सकती है। एक एकड़ नारियल बाग से तकरीबन 3000 ज़िमीकंद प्राप्त होते हैं। एक ज़िमीकंद

का वज़न लगभग 8 किलोग्राम होगा। एक किलो के लिए औसतन 10 रुपए मिल जाने पर एक हेक्टर नारियल बाग से 2.40 लाख रुपए प्राप्त हो सकता है।

बैंगन

अंतराफसल के रूप में बैंगन की खेती फरवरी- मार्च और सितंबर- अक्टूबर महीनों में की जा सकती है। नारियल बाग में सूर्या, हरिता जैसी बैंगन किस्में लगाई जा सकती हैं। नारियल पेड़ों के बीच दो फीट की दूरी पर ज़मीन की सतह के नीचे क्यारियाँ बनाकर पौधों के बीच दो फीट की दूरी छोड़कर बैंगन के पौधे लगाए जा सकते हैं। प्रत्येक पौधे के लिए छाया देनी चाहिए और जड़ पकड़ने पर इसे हटा देना चाहिए। गोबर और केंचुआ खाद बैंगन के लिए उत्तम खाद हैं। इस फसल के मुख्य कीट फल एवं तने को छेदने वाली इल्ली है। तंबाकु का घोल या नीम- लहसुन मिश्रण छिड़ककर कुछ हद तक इस कीड़े का नियंत्रण किया जा सकता है। पौधों को बाग में लगाने के 55 से 60 दिनों बाद फसल की तुड़ाई की जा सकती है। हर पाँच दिनों के बीच फसल ली जा सकती है। लगातार दो महीने तक फसल मिल जाती है। कई किसानों को 10 सेंट नारियल बाग से 600 से 800 किलो तक बैंगन प्राप्त हुए हैं।

करेला, चिंचिंडा

करेला एवं चिंचिंडा नारियल बाग में नारियल के बीच अंतराफसल के रूप में खेती की जाने वाली दो प्रमुख



करेला

सब्जियाँ हैं। नारियल पेड़ों को सहारा बनाकर इन फसलों के लिए मचान लगाया जा सकता है। सितंबर से दिसंबर तक और मई- जून में बरसात के मौसम में इन फसलों की खेती की जा सकती है। प्रीति, प्रियंका जैसी करेला किस्में और कौमुदि, बेबी आदि चिचिंडा किस्में नारियल पेड़ों के बीच लगाई जा सकती हैं। नारियल पेड़ों के बीच दो मीटर की दूरी छोड़कर 60 सें.मी. आकार एवं 30-45 सें.मी. गहराई में गड्ढे खोदकर बीजाई की जा सकती है। बीज बोने से पहले थाले में गोबर या कंपोस्ट भरकर मिट्टी से मिला देना चाहिए। इसके बाद 4-5 बीज बोए जा सकते हैं। इस बात पर ध्यान रखा जाए कि प्रत्येक गड्ढे में पौधे जो अंकुरित होते हैं उन में से तीन तंदुरुस्त पौधों को ही रहने दें। पौधों में जब बेल आने लगती हैं तब पौधों के लिए मचान बना देना चाहिए।

इन सब्जियों का मुख्य कीट फल मक्खी है। इनके प्रकोप के नियंत्रण के लिए फलों को पोलिथीन, कपड़े, कागज़ आदि से बने कवर से ढक देना चाहिए। इसके अलावा केले के फंदे से भी इस कीट का सफल नियंत्रण किया जा सकता

है। केले को छिलका निकाले बिना तीन चार टुकड़ों में तिरछा काट देना चाहिए। एक कागज़ में कुछ कीटनाशी



चिचिंडा

का दाना छिड़ककर केले के टुकड़े के कटे हुए हिस्से को उस पर दबाना चाहिए और दबाए गए भाग को ऊपर की तरफ करके नारियल खोपड़ियों में रखकर मचान में इधर उधर लटकाना चाहिए। फल मक्खियाँ इस फंदे में फँसकर मर जाती हैं। एक एकड़ नारियल बाग में अंतराफसल के रूप में करेले और

जगहों में खेती करना चाहिए। घर के आँगन में नारियल बागों में सब्जियों की खेती करने की जो आदत हम ने समय के चलते भुला दी थी उस आदत को हमें वापस अपनानी होगी। इसके अलावा नारियल बाग की मिट्टी और पर्यावरण की गुणवत्ता सुधारने में भी यह सहायक है।

नारियल विकास बोर्ड के पटना क्षेत्रीय कार्यालय का नया पता

किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय

नारियल विकास बोर्ड

बीएमपी तालाब के सामने, जगदेवपथ, फुलवारी रोड़

डाक-बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.), पटना-800014



नारियल विकास और यंत्रीकरण

ए.सी.मैथ्यु, एम.आर.मणिकंठन, बी.हेब्बार

केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड-671124

भूमिका

नारियल की खेती एवं उद्योग के क्षेत्र में कुशल कामगारों की कमी नारियल किसानों और उद्यमियों के सामने बड़ी समस्या बन कर खड़ी है। अधिक ऊँचाई में बढ़ने वाले पेड़ होने के कारण नारियल की तुड़ाई, पेड़ के शिखर की सफाई एवं कीट-रोग प्रबंधन संबंधी गतिविधियाँ चलाने के लिए कुशल कामगारों की ज़रूरत होती है और आज भी नारियल किसानों के लिए यही सबसे बड़ी चुनौती खड़ी कर देती है। इस क्षेत्र में अनुभवी कामगारों की कमी और समय पर इनकी सेवा मिलने में विलंब आने के कारण अधिकांश किसान नारियल की खेती में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं।

नारियल आधारित उद्योगों में दूसरे उद्यमों की अपेक्षा अधिक श्रमशक्ति की ज़रूरत होती है। खोपरा और नारियल तेल को छोड़कर अन्य नारियल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन से उद्यमी पीछे हटने का प्रमुख कारण है इस क्षेत्र में यंत्रीकरण का अभाव। नारियल खेती में किसानों के लिए फायदेमंद और बाज़ार में उपलब्ध कुछ उपस्करों के बारे में आगे बताया जा रहा है।

खेती के लिए भूमि की तैयारी

खेती के क्षेत्र में नए कदम रखने वाले किसानों के संबंध में सबसे बड़ा खर्चीला काम ज़मीन को समतल बनाके

खेतीयोग्य बनाना है। यदि ढलवाँ भूमि हो तो सीढ़ीनुमा आकार में पट्टियों का निर्माण करके खेती योग्य बनाना भी काफी श्रम वाला काम है। ज़मीन को इसप्रकार तैयार करने से भविष्य में पानी और मिट्टी के बेहतर संरक्षण में और खेती संबंधी प्रक्रियाएं आसान बनाने में मदद मिल जाती है। खेती के लिए ज़मीन तैयार करने की प्रक्रियाओं में मुख्यतः झाड़ी को काटकर निकालना, गहरी जुताई करना, ढाल की लंबाई को तोड़कर एवं छोटा कर के ज़मीन को समतल बनाना, रास्ता बनाना, यदि ज़रूरी हो तो बाँध बनाना जैसे कार्य शामिल हैं। मिट्टी खोदने और वहाँ से हटाने के लिए उपयुक्त कई उपस्कर आजकल बाज़ार में उपलब्ध हैं। इनमें से ट्रैक्टर चालित मिट्टी खोदने वाले उपस्कर और मिट्टी हटाने वाला उपस्कर (डोज़र) नारियल किसानों के लिए उपयुक्त है। यदि अधिक मात्रा में मिट्टी हटाने की ज़रूरत पड़ती है तो इसके लिए खास बनाए गए मिट्टी खोदने वाले उपस्कर भी बाज़ार में उपलब्ध हैं।

नारियल पौध लगाने के लिए गड्ढा खोदना

नारियल पौध लगाने के लिए एक मीटर गहरा, एक मीटर चौड़ा और एक मीटर लंबा गड्ढा बनाने की ज़रूरत होती है। सामान्यतः गड्ढे खोदने का कार्य श्रम शक्ति से हो रहा था। इस आकार का गड्ढा खोदने के लिए आज भी कोई

उपस्कर उपलब्ध नहीं है। किंतु 45 सें.मी. तक व्यास वाले गोलाकार के गड्ढे खोदने वाले यांत्रिक उपस्कर बाज़ार में उपलब्ध है। इसका प्रयोग करके चार या उससे अधिक गड्ढे एक के पास एक करके बनाकर श्रम शक्ति से इसके किनारे खुरचकर हटाने से एक घन मीटर आकार के गड्ढे बनाए जा सकते हैं। इससे गड्ढे खोदने के लिए जो खर्च लगता है वह कम किया जा सकता है।

सिंचाई

यंत्रिकरण से नारियल किसानों को सबसे ज्यादा फायदा सिंचाई क्षेत्र में हुआ है। पर्याप्त मात्रा में पानी की उपलब्धता नारियल किसानों को राहत दिलाने वाली बात होती है। साल के हर महीने फूलने और फलने वाले नारियल जैसी फसलों के उच्च उत्पादन के लिए हमेशा पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करना अनिवार्य होता है। इसके लिए सिंचाई के विभिन्न तरीके उपलब्ध हैं। किसानों को अपनी कृषि भूमि के लिए अनुकूल सिंचाई विधि अपनानी चाहिए।

सिंचाई के विभिन्न तरीके

बाढ़ सिंचाई

तमिलनाडु जैसे राज्यों में आज भी समतल कृषि भूमि में सिंचाई के आसान तरीके के रूप में यह अपनाया जाता है। इस सिंचाई विधि में ज़मीन को समतल बनाना अनिवार्य होता है इसलिए केरल जैसे उच्च-निम्न भूभाग वाले इलाकों में यह तरीका व्यावहारिक नहीं होता है। यही नहीं पूरा खेत पानी में भीग जाने के कारण पानी का नुकसान भी काफी अधिक होता है।

थाला सिंचाई

यह नारियल पेड़ के चारों ओर थाला बनाकर उसमें सिंचाई करने की विधि है। नारियल पेड़ के लिए आवश्यक पानी नाला बनाकर गुरुत्वाकर्षण से या उच्च दाब के ज़रिए नल से बहाकर थाले तक ले जाया जाता है। बाढ़ सिंचाई की अपेक्षा थाला सिंचाई में पानी की बचत काफी अधिक होती है। उच्च-निम्न कृषि भूमि में नाला बनाकर पानी बहाने का तरीका बिलकुल उपयुक्त नहीं है। ऐसे भूक्षेत्र के लिए दाब सिंचाई



सबसे फायदेमंद होता है। केरल जैसे राज्यों में होज़ पाइप का प्रयोग करके नारियल पेड़ के थालों की सिंचाई करने का तरीका आज भी प्रचलित है। किंतु इस सिंचाई विधि की सबसे बड़ी कमी यह है कि इसके लिए किसी व्यक्ति की सेवा अनिवार्य हो जाती है। इस सिंचाई विधि में प्रति ताड़ के लिए चार दिनों में एक बार 200 लीटर पानी या हफ्ते में एक बार 400 लीटर पानी देने की आवश्यकता होती है।

फव्वारा(स्प्रिंकलर)सिंचाई

नल से उच्च दाब में बहने वाला पानी लगभग एक आदमी के कद की ऊँचाई में स्थापित स्प्रिंकलर से बाहर छिड़का कर सिंचाई की जाती है। बाग में लगाए गए छिद्रदार नलों में से पानी का छिड़काव करके भी सिंचाई की जा सकती है। किंतु इस विधि में पूरी कृषि भूमि भीग जाने के कारण पानी के नुकसान के साथ साथ खरपतवार भी अधिक



बढ़ने लगता है जो कि इस सिंचाई विधि की कमियाँ हैं। पंप के सहारे सीधे या ज़मीन से ऊँचाई पर स्थापित टंकी में पानी भरकर वहाँ से नल के ज़रिए सिंचाई की जाती है। सिंचाई करते समय हरेक बार 20 मि.ली. मोटी परत में (प्रति हेक्टर 200000 लीटर) पानी देना चाहिए।

इस सिंचाई विधि के मुख्य संघटक हैं पंप, मुख्य नली, उप नलियाँ, स्प्रिंकलर आदि।

कुएं और तालाब से पानी निकालने के लिए किसान लोग आमतौर पर अपकेन्द्री (सेंट्रिफ्यूगल) पंप का उपयोग करते हैं।

सामान्यतः सिंचाई के लिए उपयोग की जाने वाली नलियाँ पीवीसी से बनायी जाती हैं। पीवीसी पाइप का प्रयोग करते समय यह ध्यान देना चाहिए कि यह हमेशा मिट्टी के नीचे ही लगाया गया हो। यदि मिट्टी के ऊपर लगाया गया है तो सूरज की तेज अल्ट्रा वायलट किरणों पड़कर नलियाँ जल्दी टूट सकती हैं।

यदि मिट्टी के ऊपर नलियाँ स्थापित करना हो तो इसके लिए एचडीपीई नलियाँ लगाना उचित है। स्वचालित सिंचाई और सुदूर से नियंत्रित (मोबाइल फोन और कंप्यूटर के ज़रिए नियंत्रित) सिंचाई तकनीक स्प्रिंकलर सिंचाई के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है जिससे कि श्रम शक्ति भी अत्यधिक कम की जा सकती है।

ड्रिप सिंचाई

ऐसे नारियल बागों के लिए जहाँ अधिक अंतरा फसल न लगाए गए हों, सबसे उत्तम सिंचाई तरीका ड्रिप सिंचाई है। पानी के स्रोतों से पंप के सहारे उच्च दाब पर पानी बिना छिद्र वाले नलियों के ज़रिए नारियल पेड़ के नीचे भाग तक ले जाकर ड्रिपर का प्रयोग करके उच्च दाब को वायुमंडलीय दाब तक पहुँचाकर बूँद बूँद के रूप में सिंचाई की जाती है।

बिना छिद्र वाली नली से थाले तक पहुँचने के कारण पानी का नुकसान बिलकुल भी नहीं होता है। कृषि भूमि का मात्र छोटा सा हिस्सा ही भीग जाता है, जिस वजह से वाष्पीकरण के कारण पानी का नुकसान भी बहुत कम होता है और साथ साथ खरपतवार के बढ़वार को भी रोका जा सकता है। दूसरी



ड्रिप सिंचाई

सिंचाई विधियों की अपेक्षा ड्रिप सिंचाई से लगभग 50 प्रतिशत तक पानी की बचत हो सकती है।

नारियल पेड़ को हर रोज़ 32 लीटर पानी देने की आवश्यकता है। मखरली और लाल मिट्टी में बढ़ने वाले नारियल पेड़ों के लिए प्रति ताड़ 4 ड्रिपर और तटीय इलाकों की बलुई मिट्टी में बढ़ने वाले नारियल पेड़ों के लिए 6 ड्रिपर अपेक्षित हैं। ये ड्रिपर पेड़ से एक मीटर की दूरी पर थाले में लगाने चाहिए। हालाँकि बाज़ार में विविध प्रकार के ड्रिपर उपलब्ध हैं फिर भी एक मि.मीटर भीतरी व्यास वाले माइक्रोट्यूब लगाना सबसे फायदेमंद होता है। इस सिंचाई विधि की सबसे बड़ी कमी ड्रिपर का अवरोधन है। इसप्रकार का अवरोधन सबसे कम माइक्रो ट्यूबों में होता है। समुचित मात्रा में पानी देने में माइक्रोट्यूब अक्सर असफल हो जाता है, यह भी इसकी एक कमी है।

फर्टिगेशन

भले ही ड्रिप सिंचाई विधि में प्रारंभिक खर्च काफी अधिक होती है, फिर भी प्रचालन व्यय दूसरी सिंचाई विधियों की अपेक्षा अत्यधिक कम होता है। इसे और लाभकर बनाने और उर्वरकों का प्रयोग कम करने तथा आसान बनाने के लिए फर्टिगेशन एकदम उचित विधि है। इस विधि में बारी बारी से सिंचाई के साथ उर्वरकों का प्रयोग भी किया जाता है।

फर्टिगेशन में प्रयोग करने के लिए उर्वरक तरल रूप में बाज़ार में उपलब्ध है। किंतु इन रसायनिकों का भाव इतना अधिक होता है कि इसका खर्च उठाना आम किसानों के बस की बात नहीं होती है। किंतु बाज़ार में प्रचुरता में उपलब्ध यूरिया, डीएपी (डाइ अमोनियम फोस्फेट), म्यूरिएट ऑफ पोटेश आदि पानी में जल्दी घुलने वाले रासायनिक है। ये रासायनिक एक टंकी में आवश्यक मात्रा में पानी में घोलकर छानने के बाद सिंचाई करते समय प्रयोग किया जा सकता है।

सिंचाई के लिए आवश्यक सामग्रियाँ एवं यांत्रिक उपस्कर

इसमें पहले प्रकार में ऐसे पंप होते हैं जिनमें पानी के दबाव पर होने वाले घट-बढ़ के अनुसार पंप किए जाने वाले पानी की मात्रा में भी परिवर्तन (दाब बढ़ने के साथ बाहर निकाले जाने वाले पानी की मात्रा कम होती है) होता है। दूसरे प्रकार में दाब में घट-बढ़ होने के बावजूद भी बाहर निकलने वाले पानी की मात्रा में कोई अंतर नहीं होता है। इसमें सबसे प्रचलित है विस्टन पंप जो सड़क के किनारे पीने का पानी निकालने और अन्य ज़रूरतों के लिए बोरवेल के साथ लगाए गए हैं।

किंतु सिंचाई के लिए व्यापक तौर पर पहले प्रकार के पंपों का उपयोग होता है। इसमें सबसे अहम अपकेन्द्री (सेंट्रिफ्यूग) पंप हैं जिसमें प्रचालन व्यय और घिसाई से होने वाला नुकसान कम होता है। किसी डीज़ल/पेट्रोल/मिट्टी के तेल के इंजन का प्रयोग करके या बिजली चालित मोटर का प्रयोग करके इसे चलाया जा सकता है। जहाँ बिजली उपलब्ध है उन जगहों में बिजली से चालित मोटर के सहारे इसे चलाना आसान और लाभकर होता है। सेंट्रिफ्यूग पंप का प्रयोग करते समय इस पर ध्यान दें कि इसे पानी की सतह के निकट स्थापित करना चाहिए। भले ही इसमें पानी बाहर निकालने की क्षमता होती है फिर भी पानी खींच लेने की क्षमता इसमें कम होती है। सेंट्रिफ्यूग पंप चलाने के लिए पंप के अंदर और पानी खींचने के लिए स्थापित नली में हमेशा पानी होना चाहिए। इसप्रकार पंप के अंदर पानी भरा रखने के लिए ही कुएं से पानी खींचने वाली नली के अग्रभाग पर फुटवाल्व लगाया जाता है।

अत्यधिक गहरे खुले कुएं से पानी पंप करने के लिए जेट पंप का उपयोग किया जाता है। खींचे जाने वाले पानी का

एक हिस्सा वापस कुएं की ओर बहाकर ही इतनी ऊँचाई में पानी पहुँचाया जाता है। दक्षता अत्यंत कम होने के कारण इन पंपों का उपयोग विरले ही होता है।

गहरे कुएं और बोरवेलों से पानी पंप करने के लिए पानी के नीचे स्थापित पनडुब्बी(सबमर्सेबल) पंपों का प्रयोग किया जाता है। जितनी ऊँचाई में पंप करना होता है, उसके अनुसार विविध स्तर के पनडुब्बी पंप बाज़ार में उपलब्ध है।

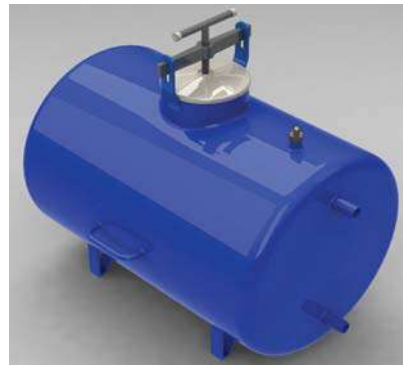
पानी के स्रोतों से नारियल बाग तक की ऊँचाई एवं दूरी, बाग के लिए आवश्यक पानी की मात्रा, सिंचाई करने के उपस्कर, ड्रिपर तथा स्प्रिंकलर चलाने के लिए अपेक्षित दाब आदि के मद्देनज़र कृषि भूमि के लिए आवश्यक पंप एवं इसके पावर का निर्णय करना चाहिए। खरीदे गए पंप और स्थापित सिंचाई व्यवस्था अच्छी तरह कार्य करने के लिए इन बातों पर ध्यान देना अनिवार्य है।

फिल्टर

फिल्टर सिंचाई व्यवस्था का अनिवार्य उपस्कर है। पानी में मौजूद ठोस अवशिष्टों की मात्रा के अनुसार विविध प्रकार के फिल्टर बाज़ार में उपलब्ध हैं।

रेत भरे फिल्टर

यह फिल्टर 1.5-3.5 मि.मी. व्यास वाली रेत भरी बंद टंकी है। टंकी के ऊपर लगाई गई एक नली से पानी अंदर जाता है। यह पानी मिट्टी से होकर बहकर टंकी के नीचे लगाई नली से बाहर निकल जाता है। पानी में मौजूद कीचड़, जैव पदार्थ आदि को रेत छान लेती है। निश्चित अंतराल में फिल्टर और इसमें मौजूद रेत धोकर साफ कर लेना चाहिए। स्वचालित रूप से सफाई करने की क्षमता वाले फिल्टर भी आजकल उपलब्ध है।



रेत भरे फिल्टर

नारियल विकास बोर्ड के सचिव डा.ए.के.नंदी सेवानिवृत्त हुए



डा.ए.के.नंदी, सचिव 31 दिसंबर 2017 को बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड में अपनी सेवा 7 अक्टूबर 1992 को प्रबीउ फार्म, त्रिपुरा में वरिष्ठ फार्म प्रबंधक के रूप में प्रारंभ की थी। तत्पश्चात वे क्षेत्रीय कार्यालय, पटना और राज्य केन्द्र, ओडिशा सहित बोर्ड के विविध कार्यालयों में उप निदेशक के पद पर कार्यरत रहे। वे बोर्ड के मुख्यालय कोची में सचिव के पद पर 12 मार्च 2010 को नियुक्त हुए। आप ने कृषि में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है और पश्चिम बंगाल के विश्वभारती विश्वविद्यालय से उन्होंने कयर गूदे का कंपोस्ट के रूप में पुनर्चक्रण और कयर गूदा एवं कयर गूदा आधारित जैव खादों का प्रयोग करके नारियल आधारित खेती प्रणाली का प्रबंधन विषय पर पीएचडी की उपाधि हासिल की है। डा. नंदी ने केन्द्र सरकार में अपनी सेवा केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्था में वर्ष 1988 में शुरू की थी।

स्क्रीन फिल्टर

इस फिल्टर में एक सरंध्र नली के चारों ओर बाँधी गई जाली से पानी बहाकर उसमें निहित मैल हटाया जाता है। पानी में मौजूद गंदगी की मात्रा के अनुसार इन फिल्टरों की सफाई की जानी चाहिए।

हाइड्रो साइक्रोन फिल्टर

कीप समान आकार वाली टंकी से पानी बहाए जाने पर वह चारों ओर घूमने लगता है और पानी में मौजूद भारी रेत जैसे अवशिष्ट बाहर गिर कर टंकी के निचले भाग पर जमा हो जाता है। रेत जैसी भारी वस्तुएं अधिक मात्रा में मौजूद पानी साफ करने के लिए यह फिल्टर एकदम उपयुक्त है।

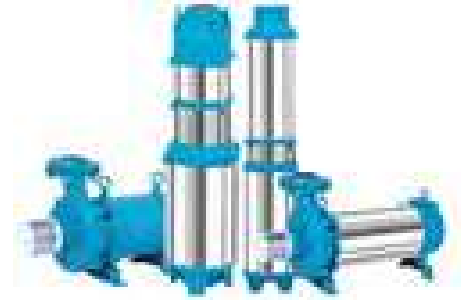


हाइड्रो साइक्रोन फिल्टर

सिंचाई के उपस्कर खासतौर पर ड्रिपर, स्प्रिंकलर आदि का अवरोधन रोकने के लिए फिल्टर की ज़रूरत होती है।

मिट्टी में मौजूद पानी की मात्रा के अनुसार सिंचाई नियंत्रित करने की विधि

इस उपस्कर का सबसे महत्वपूर्ण संघटक मिट्टी में निहित पानी की मात्रा का पता लगाने वाला सेंसर है। इस विधि



में मिट्टी में निहित पानी जब निश्चित मात्रा से कम हो जाता है तब सिंचाई करके पानी की मात्रा पूर्व स्थिति में बरकरार रखा जाता है। इस सिंचाई विधि में अधिक खर्च और उन्नत प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है।

स्वचालित सिंचाई विधियाँ

स्वचालित सिंचाई विधि में निश्चित समय पर निश्चित मात्रा में सिंचाई की जाती है। बाज़ार में उपलब्ध टाइमर का प्रयोग करके सिंचाई करने वाले पंप या सिंचाई पाइप पर लगे सोलिनोइड वाल्व चालू करके स्वचालित सिंचाई सुसाध्य किया जाता है। इस विधि में यह नहीं देखा जाता है कि नारियल पेड़ के लिए पानी की ज़रूरत है या नहीं। फिर भी किसान लोग अपने तज़ुर्बे से या विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा करके सिंचाई करने का समय, सिंचाई की अवधि आदि नियत करके सिंचाई कर सकते हैं। इस विधि की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें अधिक खर्च नहीं होता है और साथ साथ अधिक देखभाल करने की भी ज़रूरत नहीं होती है।



नारियल पौध का रोपण उचित गहराई में करें

के.एस.षण्मुखम

भूतपूर्व मुख्य कृषि विशेषज्ञ

द फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स ट्रावणकोर लिमिटेड, कोची, केरल

नारियल पेड़(कोकोस नूसिफेरा एल) 100 साल तक जीवित बहुवर्षी फसल है। यह ऐसा बहुउपयोगी ताड़ है जो मानवराशि के लिए किसी दूसरी फसल की अपेक्षा अधिक उपयोगी उत्पाद प्रदान करता है। यह, कल्पवृक्ष याने मनोकामना पूरा करने वाला स्वर्गीय वृक्ष के नाम से जाना जाता है। नारियल पेड़ भारत में 1.2 करोड़ से भी अधिक लोगों को आहार और जीविका सुरक्षा प्रदान करता है।

नारियल पेड़, बहुवर्षी फसल होने के नाते दशकों तक ज़मीन से जुड़ा रहता है और इसलिए नए नारियल बागों की स्थापना करते समय अत्यधिक ध्यान और सावधानी बरतना अनिवार्य होता है। बाग की स्थापना की प्रारंभिक स्थिति में यदि कोई भूल-चूक हुई हो तो नारियल

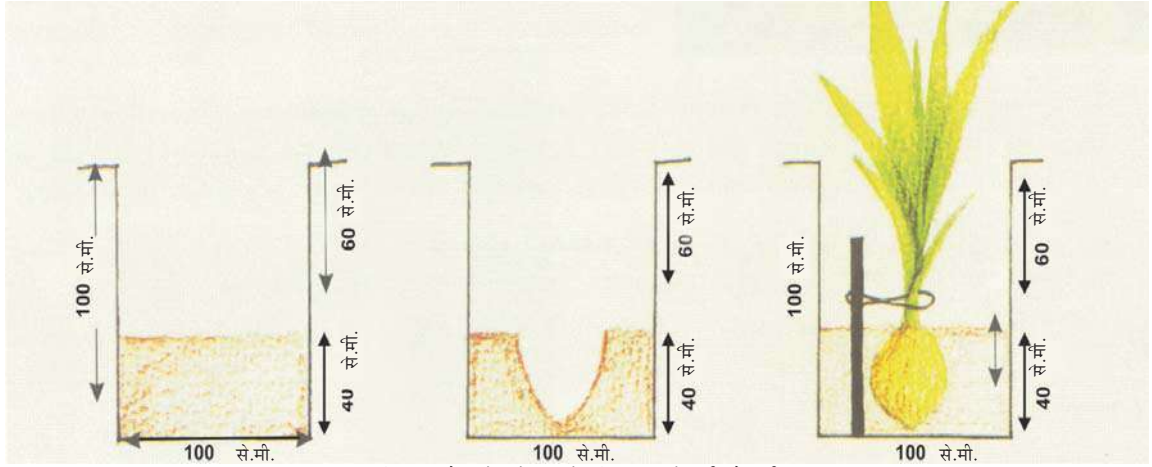
पेड़ के पूरे जीवनकाल तक इसका नुकसान बना रहता है जिसके फलस्वरूप किसानों को काफी अधिक आर्थिक नुकसान हो सकता है। अतः स्थान का चुनाव, पौध का चयन, पौधों के बीच की दूरी, गड्ढे की तैयारी, रोपण की गहराई और छोटे ताड़ों की देखभाल ध्यानपूर्वक करना बहुत ज़रूरी होता है। इन प्रक्रियाओं में कोई समझौता या ढीलापन बिलकुल भी स्वीकार्य नहीं है।

नारियल के लिए रोपण गड्ढों की तैयारी

नारियल पौध का रोपण करने के लिए 1मी. x 1मी. x 1मी. आकार के गड्ढे रोपण के 2 से 3 महीने पहले खोदे जाते हैं और सूरज की तेज़ गरम किरणों इन गड्ढों में पड़ने के लिए उन्हें

वैसे ही छोड़ा जाता है जिससे मिट्टी के हानिकारक सूक्ष्मजीवाणुओं का नाश होता है।

जब गड्ढे खोदे जाते हैं, 40 सें.मी. गहराई की ऊपरी मिट्टी गड्ढे के एक छोर पर अलग से रखी जाती है ताकि बाद में गड्ढे भरने के लिए इसका प्रयोग किया जा सके। 60 सें.मी. गहराई तक की निचली मिट्टी खोदकर बाहर निकालकर गड्ढे के चारों ओर छोटा बाँध जैसा बना दिया जाता है ताकि बारिश का पानी गड्ढे में गिरकर इसमें जमा न हो जाए। सब्बल चलाकर गड्ढे के निचले भाग की मिट्टी ढीली की जाती है। एक या दो बार गड्ढे में सूखी पत्तियाँ और डालियाँ डालकर जला दिया जाता है ताकि मिट्टी में मौजूद रोगाणु



नारियल पौध के रोपण के लिए गड्ढे की तैयारी

और दीमक मर जाए जिससे कि नारियल पौध पर इनका प्रकोप नहीं हो। ठोस मखरली मिट्टी वाले क्षेत्रों में मिट्टी को नरम बनाने के लिए रोपण के पहले प्रति गड्ढा 2 किलोग्राम नमक डाला जाता है ताकि मुलायम जड़ें आसानी से मिट्टी में घुस सकें।

बलुई मिट्टी में और उन क्षेत्रों में जहाँ सूखे की स्थिति बनी रहती है, गड्ढे के निचले भाग पर नारियल छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके दो परतों में रखना फायदेमंद होता है। ये छिलके बारिश के मौसम में अपने वजन से छह गुना अधिक पानी सोख लेते हैं और सूखे की स्थिति में छोटे पेड़ों के लिए पानी छोड़ देते हैं। गड्ढे के ऊपर से 60 सें.मी. छोड़ते हुए नीचे से 40 सें.मी. ऊँचाई तक ऊपरी मृदा, नदी की रेत और वर्मि कंपोस्ट समान अनुपात में मिश्रित करके डाले जाते हैं। नदी की रेत का प्रयोग दीमक का प्रकोप रोकने के लिए सहायक है। तीन दिनों के

अंतराल में दो बार के हिसाब से गड्ढों में पानी डाला जाता है और मिट्टी का मिश्रण एक हफ्ते के लिए अच्छी तरह जम जाने के लिए छोड़ दिया जाता है।

मिट्टी के मिश्रण में बीजफल रखने के बराबर का एक छोटा छिद्र बनाया जाता है और नारियल पौध उस छिद्र में इस प्रकार लगाया जाता है कि मात्र बीजफल के छिलके का सबसे ऊपरी हिस्सा बाहर दिखाई दे सके। नारियल पौध के चारों ओर की मिट्टी अच्छी तरह दबाकर जमाया जाता है ताकि नारियल पौध मजबूती से वहाँ टिके रहे। इसप्रकार नारियल पौधों को 1मी. x 1मी. x 1मी. आकार के रोपण गड्ढों में 60 सें.मी. गहराई में रोपण किया जाता है। जैसे जैसे नारियल पौध बढ़ जाता है और तना मोटा होने लगता है रोपण के गड्ढों को धीरे धीरे भरा जाता है।

रोपण गड्ढों का आकार

नारियल पौधों के रोपण हेतु गड्ढे का आकार सामान्यतया मिट्टी की

संरचना और भौम जल स्तर की गहराई पर निर्भर होता है। अधिकांश ज़मीन के लिए एक घन मीटर के गड्ढे उपयुक्त माना जाता है। हल्की मिट्टी में जहाँ जल स्तर गर्मियों के दौरान काफी नीचे गिर जाता है 1मी. x 1मी. x 1मी. आकार के रोपण के गड्ढे अनुशंसित है। ठोस मखरली मिट्टी में और जहाँ गरमी में भौम जल काफी गहराई में होता है, गहरे गड्ढे खोदना अधिक फायदेमंद होता है। सामान्यतया मिट्टी जितनी ठोस और भारी होती है, गड्ढे का आकार उतना बड़ा होना चाहिए। ठोस मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. आकार (लंबाई, चौड़ाई और गहराई) के बड़े गड्ढों की आवश्यकता होती है।

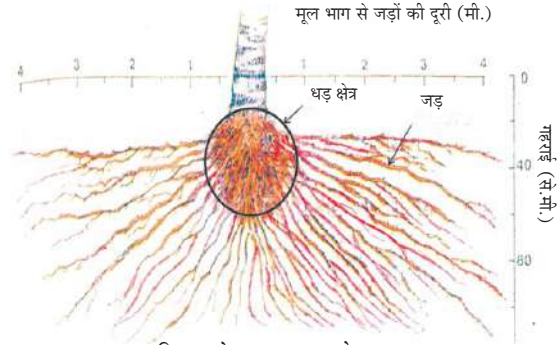
नारियल पौधों के रोपण की गहराई

नारियल पौधों के रोपण में जिस गहराई में पौध का रोपण किया जाता है, इसकी अत्यधिक अहमियत होती है। रोपण की गहराई मिट्टी की संरचना, मिट्टी की गहराई और जल स्तर की

ऊँचाई तथा अन्य पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर होती है। सामान्य नियम के रूप में नारियल पौध का रोपण ऐसी गहराई में करनी चाहिए कि पेड़ का पूर्ण विकसित धड़ (नारियल पेड़ के जड़ निकलने वाला भाग) पूरी तरह मिट्टी के नीचे दबे रहे। रोपण की गहराई के अनुसार धड़ क्षेत्र का विकास होता है जो कि सतही रोपण की तुलना में 60 सेंटी मीटर गहराई में रोपण करने पर 123 प्रतिशत और 90 सेंटी मीटर गहराई में रोपण करने पर 129 प्रतिशत तक विकसित होता है।

जितना बड़ा धड़, जड़ जमाव भी उतना बेहतर

नारियल एकबीजपत्री फसल होने के कारण इसकी कोई मुख्य जड़ नहीं होती है किंतु तने के फूले हुए मूलभाग जिसे धड़ कहा जाता है, से उत्पन्न डोर समान आनुषंगिक जड़ों की घनी वृद्धि होती है। नारियल पौध जब 3 से 4 साल की हो जाती है धड़ का विकास पूरा हो जाता है। इस स्थिति में धड़ उल्टे शंकु के आकार का हो जाता है और यह पूरी तरह से मिट्टी के नीचे हो जाता है। काफी गहराई में लगाए गए ताड़ों में धड़ 80 से 100 सें.मी. ऊँचा होता है किंतु कम गहराई में लगाए गए ताड़ों में यह 30 सें.मी. या इससे कम होता है। सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि धड़ जितना बड़ा होता है, अधिक संख्या में जड़ों के साथ जड़ जमाव भी उतना बेहतर होता है। अच्छी बढ़वार वाले नारियल पेड़ के धड़ से 4000 से 7000 हजार तक जड़ें उत्पादित होती हैं। अतः



नारियल पेड़ का धड़ और जड़

1मी x 1मी x 1मी आकार के गड्ढे खोदना वाँछनीय होता है, जिससे कि पूर्ण विकसित धड़ के लिए पर्याप्त जगह प्राप्त हो जाता है और धड़ पूरी तरह मिट्टी के नीचे दबे रहता है। अधिकांश जगहों में रोपण के लिए एक घन मीटर का गड्ढा उपयुक्त माना गया है।

गहरा रोपण नारियल के लिए बेहतर

बहुवर्षी और ऊँचाई में बढ़ने वाले ताड़ होने के कारण धड़ का समुचित बढ़वार और जड़ प्रणाली का अच्छा विकास सुनिश्चित करने के लिए समुचित गहराई में नारियल पौध का रोपण करना अनिवार्य होता है, जिसके फलस्वरूप पेड़ मिट्टी में मज़बूती से जम जाता है और सूखे की स्थिति झेलने में भी यह सक्षम हो जाता है। नारियल पौध की गुणवत्ता जितनी महत्वपूर्ण होती है उतनी ही महत्वपूर्ण है नारियल पौध के रोपण की गहराई भी। रोपाई जितनी गहरी होती है पेड़ की बढ़वार भी उतनी बेहतर होती है और इसका कारण यह है कि गहरे रोपण में जड़ प्रणाली का संपूर्ण विकास होता है।

विभिन्न गहराइयों में नारियल पौध के रोपण की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए बहुत पहले ही केरल के पीलिकोड स्थित नीलेश्वरम-1 नारियल अनुसंधान स्टेशन में 1923 में और तमिलनाडु के वेप्पांकुलम के क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान स्टेशन में 1961 में परीक्षण आयोजित किए गए।

नीलेश्वरम -1 नारियल अनुसंधान स्टेशन में आयोजित परीक्षण में, चार गहराइयों में, याने 0 सें.मी. (सतही रोपण), 30 सें.मी., 60 सें.मी. और 90 सें.मी. गहराई में, नारियल पौधों का रोपण किया गया। हरेक विधि में तीन कतारों में 12 पेड़ लगाए गए। सभी विधियों में नारियल पौधों का रोपण करने के पहले 90 घन सेंटीमीटर के गड्ढे खोदकर इसे अपेक्षित गहराई के अनुरूप भरा गया। परीक्षण के लिए पश्चिम तटीय लंबी किस्म चुनी गई और इसके लिए मखरली मिट्टी का उपयोग किया गया।

सतही रोपण में धड़ क्षेत्र अधिक विकसित नहीं हुआ और जड़ प्रणाली भी गहरी न होकर मिट्टी की सतही

परत में ही फैलती रही। ये जड़ें गर्मी के महीनों में जल्दी सूख गईं। सतही रोपण किए गए नारियल पौधों की बढ़वार संतोषजनक नहीं रही और इसकी मृत्यु दर भी काफी उच्च थी। 60 सें.मी. गहराई में रोपण किए गए नारियल पौधों का धड़ काफी बड़े रूप में विकसित हुआ और अधिक संख्या में जड़ों के साथ जड़ प्रणाली भी अत्यंत बेहतर रही जिससे सूखे की स्थिति झेलने में नारियल पौध सक्षम रही और मृत्यु दर भी कम रही। इस परीक्षण के नतीजे सारणी 1 में दिए गए हैं।

वर्ष 1961 में क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान स्टेशन, वेप्पांकुलम में भी नारियल पौध के रोपण की समुचित गहराई का पता लगाने के लिए समान परीक्षण चलाया गया। इस परीक्षण में चार विभिन्न गहराइयों में, याने 0 सें.मी. (सतही रोपण), 30 सें.मी., 60 सें.मी. और 90 सें.मी. गहराई में, रोपाई करने का पेड़ की वृद्धि पर जो प्रभाव पड़ता है उस की तुलना की गई। सतही स्तर से नारियल पौध के गर्दन तक की दूरी को रोपण की गहराई मानी गई। इस परीक्षण के नतीजे सारणी 2 में दिए गए हैं।

सारणी 1: नारियल पौध के अतिजीवन पर रोपण की गहराई की भूमिका

सतही स्तर से रोपण की गहराई	जून 1923 में रोपित नारियल पौध	अप्रैल 1925 तक मृत नारियल पौध
सतही रोपण	31	12
30 सें.मी गहराई में रोपण	32	9
60 सें.मी. गहराई में रोपण	31	1
90 सें.मी. गहराई में रोपण	32	4

वेप्पांकुलम परीक्षण के नतीजों से नारियल पौध के गहरे रोपण की अहमियत और आवश्यकता तथा सतही रोपण की अनुपयुक्तता बेहतर तरीके से साबित हो गया। इस परीक्षण में, 60 सें.मी. गहराई में रोपण किए गए ताड़ों में सतही रोपण किए गए पेड़ों की तुलना में पैदावार में 23.90 प्रतिशत की वृद्धि पाई गई और इन ताड़ों में पुष्पण भी 10 महीने पहले हुआ।

एक घन मीटर के गड्ढों में 60 सें.मी. गहराई में नारियल पौध का रोपण करना अत्यंत लाभदायक होता है क्यों

कि इससे धड़ क्षेत्र बड़ा हो जाता है जो कि पूरी तरह मिट्टी के नीचे दबे रहता है और अधिक संख्या में जड़ों के साथ बेहतर जड़ प्रणाली भी सुनिश्चित होती है। इस प्रकार की अच्छी जड़ प्रणाली मिट्टी से अधिक मात्रा में पानी और पौष्टिक तत्वों का अवशोषण सुनिश्चित करती है जिससे कि ताड़ों की बढ़वार बेहतर होती है और उच्च पैदावार भी मिलने लगती है। बेहतर जड़ प्रणाली से मिट्टी में जड़ों की पकड़ मज़बूत होती है जिससे कि चक्रवाती तूफानों के हमले को भी यह झेल जाता है। सतही और

सारणी 2 : पेड़ की बढ़वार के पैरामीटरों पर रोपण की गहराई का प्रभाव

रोपण की गहराई	धड़ क्षेत्र वर्ग मीटर	धड़ पर जड़ों की संख्या	पुष्पण पूर्व आयु(महीने)	प्रति ताड़ फलों की उपज	तूफान से प्रभावित ताड़ों की प्रतिशतता	
					उखड़े पेड़	झुके पेड़
सतही	0.400	3055	76	50	10	5
30 सें.मी.	0.560	3840	70	55	10	5
60 सें.मी.	0.892	6142	66	62	शून्य	शून्य
90 सें.मी.	0.916	7427	66	62	शून्य	शून्य

30 सें.मी. गहराई में किए गए रोपण में चक्रवातों के हमले से जड़ से उखड़े गए पेड़ और झुक गए ताड़ों की प्रतिशितता क्रमशः दस और पाँच रही, जबकि गहरे रोपण किए गए किसी भी ताड़ पर चक्रवात के हमले का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा।

चक्रवात के हमले से ताड़ों के उखड़ने और झुकने का कारण मिट्टी में जड़ों का पकड़ दुर्बल होना है जो कि सीमित धड़ क्षेत्र से निकलने वाली

जड़ों की संख्या कम होने के कारण होता है और यह कम गहराई में रोपण किए गए ताड़ों के मामले में सर्वदा होता रहता है। वर्ष 1952 और 1955 में चक्रवाती तूफानों से तमिलनाडु के पूर्वतटीय क्षेत्रों में सतही रोपण किए गए हज़ारों नारियल पेड़ों के उखड़ने और तबाह होने का मुख्य कारण मिट्टी में जड़ों की पकड़ का दुर्बल होना पाया गया।

जड़ों का उत्पादन, पुष्पण की आयु और फलों की पैदावार के मामले में 60 सें.मी. गहराई में रोपण करने की तुलना में 90 सें.मी. गहराई में रोपण करने से कोई खास लाभ प्राप्त नहीं होता है। इसके मद्देनज़र यह कहा जा सकता है कि सामान्य परिस्थिति में 60 सें.मी. गहराई में रोपण करना सर्वाधिक उपयुक्त होता है और इसलिए नारियल किसानों को 60 सें.मी. गहराई में रोपण करने की अनुशंसा दी जाती है।

सेवानिवृत्ति

श्री जी. बालकृष्ण कुरुप्प



श्री जी.बालकृष्ण कुरुप्प, उच्च श्रेणी लिपिक, मुख्यालय, कोची 31 अक्टूबर, 2017 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 35 वर्षों से अधिक बोर्ड की सेवा की है।

श्री वी.के. सोमसुंदरन



श्री वी.के.सोमसुंदरन, आशुलिपिक ग्रेड II, मुख्यालय, कोची 30 नवंबर, 2017 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 32 वर्षों से अधिक बोर्ड की सेवा की है।

श्री एस.के. अजितकुमार



श्री एस. के. अजितकुमार 31 अक्टूबर, 2017 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 23 वर्षों से अधिक बोर्ड की सेवा की है।

श्री अवधेश प्रसाद सिंह



श्री अवधेश प्रसाद सिंह 31 दिसंबर, 2017 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 30 वर्षों से अधिक बोर्ड की सेवा की है। वे प्रबीड फार्म, मधेपुरा, बिहार में कार्यरत थे।

श्रीमती पी.वी.फिलोमिना



श्रीमती पी.वी.फिलोमिना 31 दिसंबर, 2017 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुईं। उन्होंने 23 वर्षों से अधिक बोर्ड की सेवा की है।



केरल की जान है नारियल और नारियल तेल भारत की शान भी

टी.राजमोहन

प्रोफसर एवं अध्यक्ष (सेवानिवृत्त)

जैवरासायनिक विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम

नारियल और नारियल तेल केरलवासियों के आहार का अभिन्न अंग है। नारियल और नारियल तेल केरल के लिए इतने पसंदीदा हैं कि सदियों से ये हमारे दिल के करीब हैं। किंतु एक दौर ऐसा रहा कि समाज में नारियल और नारियल तेल के बारे में गलतफहमी फैली हुई थी कि खून में ये कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ाते हैं। किंतु केरलवासियों के खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा और हृद्रोग का खतरा बढ़ाने में नारियल और नारियल तेल की भूमिका का कोई ठोस सबूत आज तक प्राप्त नहीं हुआ है।

सब गलत अफवायें

यह विश्वास प्रचलित है कि नारियल तेल में कोलेस्ट्रॉल निहित है। किंतु नारियल

तेल हो या कोई अन्य वनस्पति तेल, इनमें कोलेस्ट्रॉल निहित नहीं है। कोलेस्ट्रॉल वनस्पतिजन्य पदार्थ नहीं है। इनसानों और अन्य जानवरों की कोशिकाओं में खासतौर पर जिगर में आवश्यकतानुसार कोलेस्ट्रॉल का उत्पादन होता है। हम जो मांसाहार खाते हैं कोलेस्ट्रॉल इसमें भी निहित होता है। एक तंदुरुस्त व्यक्ति के खून में प्रति 100 मिली लीटर में 150 से 250 मिली ग्राम तक कोलेस्ट्रॉल निहित होता है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बहुत कम होने से भी खतरा हो सकता है।

नारियल तेल शक के शिकंजे में

अमरीका के एनसल कीस नामक अनुसंधानकर्ता ने सबसे पहले नारियल

तेल के खिलाफ आरोप लगाया था। उनके अध्ययन के अनुसार यह सूचित हुआ कि संतृप्त वसाएं खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ाती हैं और असंतृप्त वसाएं खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा घटाती हैं। नारियल तेल में 90.86 प्रतिशत संतृप्त वसाएं और 9.14 प्रतिशत असंतृप्त वसाएं निहित हैं।

नारियल तेल में विविध संघटन के संतृप्त वसा अम्ल निहित हैं। संघटन की विभिन्नता के अनुसार हमारे शरीर में इनके कई गुणकारी प्रभाव होते हैं।

पहले चलाए गए अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधि की और भी कई कमियाँ थीं। परीक्षण जानवरों पर अध्ययन के लिए अधिकतर हाइड्रोजनीकृत नारियल

तेल का प्रयोग किया जाता था। इस प्रक्रिया में नारियल तेल में निहित असंतृप्त वसा अम्ल परिवर्तित होकर पूरी तरह संतृप्त वसा अम्ल बन जाते हैं। दूसरी एक बड़ी कमी भी हो जाती है कि कम मात्रा में ही सही नारियल तेल में निहित लिनोलिक अम्ल जैसे अनिवार्य वसा अम्ल इस प्रक्रिया में पूरी तरह नष्ट हो जाता है। इस अनिवार्य वसा अम्ल का शरीर में उत्पादन नहीं होता है। यह आहार से ही प्राप्त होना चाहिए। अन्यथा खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ जाती है। हृदयरोग का खतरा भी बढ़ जाता है। किसी भी हाइड्रोजनीकृत वनस्पति तेल का उपयोग शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ाता है। पर्याप्त मात्रा में लिनोलिक अम्ल देकर जानवरों पर अध्ययन चलाया गया। तब उनमें कोलेस्ट्रॉल की मात्रा में वृद्धि या हृदय रोग का खतरा नहीं पाया गया।

नारियल तेल की खूबियाँ

यह एक सामान्य अवधारणा है कि संतृप्त वसा अम्ल खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ाते हैं। किंतु जब संतृप्त वसा अम्लों का वर्गीकरण करके जाँच की जाए तो दूसरा चित्र सामने आएगा। अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि नारियल तेल में 15 प्रतिशत तक निहित ह्रस्व श्रृंखला वसा अम्ल कोलेस्ट्रॉल घटाता है। लारिक अम्ल सहित 63 प्रतिशत तक निहित ह्रस्व-मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल रक्तवाहिकाओं के ज़रिए बहुत जल्द जिगर तक पहुँचकर ऊर्जा के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। इनकी एक खासियत यह भी है कि ऊर्जा के

रूप में परिवर्तित होने के लिए इन्हें कार्निटिन की ज़रूरत नहीं पड़ती है। किंतु सभी दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों को इसकी ज़रूरत पड़ती है। इन कारणों से ह्रस्व एवं मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल रक्तवाहिकाओं में जमाव के कारण होने वाले हृदय रोग के कारण नहीं बनते हैं।

तीन संतृप्त वसा अम्लों को खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ने के कारक बताए जाते हैं, ये हैं लारिक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल और पामिटिक अम्ल। नारियल तेल में ये क्रमशः 47.31, 17.00 और 8.65 प्रतिशत के हिसाब से निहित हैं। नारियल तेल में अधिक मात्रा में पाए जाने वाले लारिक अम्ल को हृदय रोग का कारक बताए जाने पर भी हाल के कुछ अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि स्वास्थ्य संरक्षण में इसके कई गुणकारी प्रभाव होते हैं। नए अनुसंधानों के नतीजों से यह पता चला है कि लारिक अम्ल और ग्लिसेरॉल सम्मिलित मोनोलोरिन बच्चों और वयस्कों में रोगप्रतिरोधी क्षमता बढ़ाते हैं, जिससे इसकी अहमियत बढ़ती जा रही है। हृदय रोग को रोकने की संभावना भी यहाँ सामने आ रही है। रक्तवाहिकाओं में वसा और अन्य पदार्थ जमकर हृदय रोग होता है। इस प्रक्रिया में कुछ

वायरसों की भूमिका पर भी शक की जाती है। यदि यह साबित हो जाता है कि इन वायरसों को नष्ट करने की क्षमता मोनोलोरिन में होती है तो हृदय रोग को रोकने वाले पदार्थ के रूप में नारियल तेल की ख्याति बढ़ जाएगी। इस दिशा में भी अनुसंधान चलाया जा रहा है।

नारियल तेल में कोई कमी नहीं है

नारियल तेल में अनिवार्य वसा अम्ल लिनोलिक अम्ल बहुत कम मात्रा में (2%) निहित है। इस कमी को हमारे दूसरे खाद्य पदार्थ पूरा करते हैं। नारियल तेल की यह कमी भी हमारे लिए वरदान है। क्योंकि लिनोलिक अम्ल अधिक मात्रा में निहित तेलों (सूरजमुखी तेल, सोयाबीन तेल, सफोला तेल) की खपत करने से खून में हृदय रोग से लड़ने में सहायक अच्छा कोलेस्ट्रॉल कम हो जाता है। एक दूसरा प्रमुख तथ्य यह भी है कि अधिक मात्रा में लिनोलिक अम्ल निहित खाद्य तेलों का उपयोग



हमारे खून में प्लेटलेटों के जमने का कारण बन जाता है। इसने खून के थक्के बनकर हृदय रोग होने का खतरा पैदा होता है। यह शरीर की ऑक्सीकरण प्रक्रिया बढ़ाता है। इस प्रकार उत्पन्न ऑक्सीकृत एलडीएल खतरनाक बनकर रक्तवाहिकाओं के निकटस्थ कोशिकाओं में कोलेस्ट्रॉल जम जाने और तद्वारा हृदय रोग होने का कारण बन जाता है। यही नहीं अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अधिक मात्रा में लिनोलिक अम्ल निहित असंतृप्त तेल की खपत हमारी पैंक्रियास याने अग्न्याशय ग्रंथी से स्रावित इंसुलिन का खून में प्रवेश कम करता है। यह मधुमेह रोगियों के लिए खतरनाक है। क्योंकि इंसुलिन ही खून में ग्लूकोस की मात्रा कम करता है। अनुसंधानों से साबित हुआ है कि नारियल तेल मधुमेह रोगियों के लिए गुणकारी है।

यह गलत अवधारणा है कि नारियल तेल हृदय रोग का खतरा बढ़ाता है। दूसरी ओर हृदय रोग से लड़ने में सक्षम समझे जाने वाले अन्य खाद्य तेल हृदय रोग के साथ साथ कैंसर, मधुमेह जैसी बीमारियाँ भी साथ लाते हैं।

केरलवासियों के आहार की विशेषताएं

केरलवासी रोज़ाना आहार के साथ 50ग्राम नारियल की खपत करते हैं। इसमें से प्राप्त 20 ग्राम नारियल तेल और सीधे उपयोग से 10 से 15 ग्राम तक नारियल तेल खा लेते हैं याने कि रोज़ाना मात्र 30 से 35 ग्राम नारियल तेल। यह हमारे ऊर्जादायी आहार का 15 प्रतिशत मात्र है। मात्र इस संघटक

के आधार पर केरलवासियों के आहारक्रम की आलाओ चाना करना सही नहीं है। आहार के अन्य संघटकों (कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन एवं खनिज

पदार्थ) की मात्रा, संरचना, आहारिय रेशे, जलवायु, शारीरिक मेहनत, आराम-मनोरंजन, हमारी मानसिक स्थिति, आनुवंशिक विशेषताएं, आदतें (शराब पीना, सिगरेट पीना) आदि कई संघटक खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा और हृदय रोग की संभावनाओं पर प्रभाव डालते हैं। दूसरे इलाकों के लोगों की अपेक्षा केरल के लोगों के आहारक्रम काफी भिन्न है।

केरल विश्वविद्यालय के जैवरसायनिक विभाग द्वारा चलाए गए अनुसंधानों से यह साबित हुआ है कि नारियल और नारियल तेल निहित आहारक्रम काफी अच्छा है। जानवरों पर और आगे इनसानों पर दो चरणों में चलाए गए परीक्षणों से नारियल तेल के खिलाफ होने वाले कुप्रचार समाप्त करने में सहायक ठोस सबूत सामने आया है। सफेद चूहों पर चलाए गए अध्ययनों में नारियल तेल और मूँगफली तेल में कोई भिन्नता प्रकट नहीं हुई। बल्कि नारियल की खपत गुणकारी पायी गयी। नारियल खिलाए गए चूहों के खून का कोलेस्ट्रॉल स्तर कम होते पाया गया।



आगे चलाए गए अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ कि इसकी प्रमुख वजह इसमें निहित प्रोटीन और आहारिय रेशे हैं।

जानवरों पर चलाए गए परीक्षणों के फलस्वरूप आगे का अध्ययन इसका पता लगाने के लिए जारी रखा कि केरलवासियों में नारियल तेल और नारियल की खपत से खून का कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है या नहीं और यह हृदय रोग का कारण बन जाता है या नहीं। इसके लिए विभिन्न रहन-सहन, खान-पान वाले तंदुरुस्त स्वयंसेवियों को केरल के पाँच जिलों से चुना गया। उनकी सेहत और खून की विस्तृत जाँच की गई। उसके पश्चात चार चरणों में छह-छह हफ्तों में अध्ययन शुरू किया गया। पहले चरण में खाने में नारियल के बिना मात्र नारियल तेल, दूसरे चरण में नारियल तेल और नारियल तथा आगे मूँगफली तेल और अंतिम चरण में मूँगफली तेल और नारियल दूसरे आहार के साथ दिए गए। प्रत्येक चरण के बाद एक महीने के लिए सामान्य आहार खाने की भी अनुमति दी गई। इस प्रकार 200 लोगों के

अध्ययन के नतीजों की अच्छी तरह जाँच-परख करने से यह ज्ञात हुआ कि नारियल के साथ (नारियल तेल की सीधी खपत सहित) औसत 35 ग्राम तक नारियल तेल की खपत आहार के साथ करने से शरीर के लिए मात्र गुणकारी प्रभाव होता है। यह शरीर के लिए हानिकारक नहीं है। नारियल के बिना नारियल तेल और मूँगफली तेल की खपत की तुलना करने पर यह पता चला है कि खून के कोलेस्ट्रॉल स्तर पर कोई अंतर नहीं आता है। किंतु नारियल तेल के साथ नारियल का उपयोग गुणकारी साबित हुआ। यह अच्छा कोलेस्ट्रॉल एचडीएल बढ़ाते और खतरनाक कोलेस्ट्रॉल एलडीएल कम करते पाया गया। दूसरी खासियत यह था कि इनमें से 80 प्रतिशत लोगों के खून का कोलेस्ट्रॉल स्तर 220 मिली ग्राम (100 मिली लीटर खून में) से कम पाया गया यदि नारियल के खिलाफ प्रचलित अफवाह सच होते तो इन लोगों के खून के कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ना चाहिए था। इनमें भी खान-पान की भिन्नता के अनुसार विविध विभागों (जैसे शाकाहारी, रोज मछली खाने वाले) के खून में कोलेस्ट्रॉल का स्तर बहुत कम भी पाया गया। वास्तव में यह गुण जो कि नारियल तेल और नारियल की खपत से खून का अच्छा कोलेस्ट्रॉल एचडीएल बढ़ता है, हृदय रोग से लड़ने में सहायक है।

हाल में हृदयरोगविद् डाक्टरों के एक सिंपोसियम में इस बात का खास उल्लेख हुआ था कि केरलवासियों में

जो दिल के मरीज़ हैं उनमें से अधिकांश लोगों में खून में एचडीएल कोलेस्ट्रॉल बहुत कम होते (35 मि.ग्रा. से भी कम) पाया जाता है। पहले बताए गए परीक्षणों के नतीजों से यह ज़ाहिर होता है कि यह स्थिति नारियल तेल के कारण नहीं पैदा होती है। जबकि दूसरे असंतृप्त तेल जैसे सूरजमुखी तेल, सफोला तेल, सोयाबीन तेल, मकई का तेल आदि खून में एचडीएल कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम करेंगे। केरल में हृदय रोग के कारण होने वाली मृत्यु दर अधिक है ना सही, मगर इसका कारण नारियल तेल नहीं है। क्योंकि हृदय रोग के कारण मरने वाले अधिकांश लोगों के खून में कोलेस्ट्रॉल का स्तर सामान्य देखा गया है।

हाल के अनुसंधानों के नतीजों से यह ज़ाहिर हुआ है कि हमारे खून में निहित वसा अम्लों का ऑक्सीकरण बढ़ने से भी हृदयरोग का खतरा होता है। असंतृप्त तेलों का उपयोग अधिक होने से भी यह प्रवृत्ति बढ़ जाती है। जबकि नारियल तेल जैसे संतृप्त तेलों का उपयोग यह प्रवृत्ति कम करने में सहायक है। केरल विश्वविद्यालय में इस पर भी अनुसंधान चलाए गए थे। जिन 70 लोगों पर परीक्षण चलाया गया था उन्होंने जब नारियल तेल का उपयोग किया था उस समय उनके खून में वसा अम्लों के ऑक्सीकरण से उत्पन्न संघटक मूँगफली तेल की खपत किए गए लोगों की अपेक्षा बहुत कम पाए गए। जबकि नारियल तेल की खपत किए गए लोगों में वसा अम्लों के ऑक्सीकरण को

रोकने में सहायक प्रति ऑक्सीकारक जैसे केरोटिन, विटामिन सी, विटामिन ए, ग्लूटाथियोन आदि अधिक पाया गया। अनुसंधानों से यह साबित हुआ है कि ये प्रवृत्ति हृदय रोग से लड़ने में सहायक हैं।

इन सभी तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि हमारे रहनसहन और खानपान में नारियल एवं नारियल तेल के उपयोग से खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा नहीं बढ़ती है और न कि यह हृदय रोग का कारण बन जाता है, बल्कि यह शरीर के लिए अत्यंत गुणकारी होता है।

कैंसर की इलाज और रोग प्रतिरोधिता बढ़ाने में नारियल तेल की क्षमता

मुख कैंसर की इलाज में और इसे रोकने के लिए नारियल तेल के विविध संयुक्तों और इसमें निहित प्रोटीनों के गुणकारी प्रभावों का पता चल चुका है। नारियल तेल में निहित लारिक अम्ल, बीटा-सिटोस्टेरोल, ओलिक अम्ल और पामिटिक अम्ल को 20 प्रकार की कैंसर



कोशिकाओं के खिलाफ प्रतिरोधिता की क्षमता है। मुख के कैंसर को रोकने में नारियल तेल का जो रोगरोधी प्रभाव है वह सबसे असरदार पाया गया है। इसके अलावा स्तन कैंसर और ब्लड कैंसर के खिलाफ भी नारियल तेल का प्रयोग काफी हद तक सहायक है। नारियल तेल में निहित बीटा-सिटोस्टेरोल इस संबंध में अधिक सक्रिय रूप से कार्य करता है। लेकिन इस मामले में बीटा-सिटोस्टेरोल की क्षमता के बारे में अधिक जानने के लिए और अधिक अनुसंधान चलाने की ज़रूरत है।

(थाइलैंड के बैंकोक में 15-18 मार्च 2017 को संपन्न द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय नारियल तेल सम्मेलन में भुबनेश्वर के अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्था के सहायक प्रोफेसर डा. अमित घोष द्वारा प्रस्तुत आलेख का संक्षेप)

मस्तिष्क कैंसर के चयापचयी क्रियाओं के बारे में चलाए गए एक अध्ययन में नियंत्रित मात्रा में कीटोन निहित आहार मरीजों को दिया गया। यह तरीका कैंसर के वारबर्ग सिद्धांत, चयापचय नियंत्रण सिद्धांत जैसे तत्वों के आधार पर किया गया था। यह अध्ययन रोग की गंभीर अवस्था वाले 16 मरीजों पर चलाया गया। कीटोन निहित आहार दिए गए रोग की गंभीर स्थिति वाले मरीजों में भी इसका स्पष्ट असर दर्शित हुआ। यही नहीं सामान्य आहार देने से जो दुष्प्रभाव होता है वह इसमें नहीं प्रकट हुआ।

विर्जिन नारियल तेल और एचआईवी

इनसान के जीवन के विविध अवस्थाओं पर बुरा असर डालने वाली वैश्विक समस्या है एचआईवी एड्स।

श्री एम.आर.शंकर नारायण रेड्डी बोर्ड का नया उपाध्यक्ष

श्री एम.आर.शंकर नारायण रेड्डी को पटना में 27 जनवरी 2018 को संपन्न बोर्ड की 132 वीं बैठक में बोर्ड का नया उपाध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष के रूप में उनकी नियुक्ति एक वर्ष के लिए है। वे बोर्ड के सदस्य के रूप में कर्नाटक के नारियल किसानों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।



इसका असर मुख्यतः इनसान की रोगप्रतिरोधिता पर पड़ता है। इस स्थिति में टी कोशिकाओं के सीडी4 ऊतकों का नुकसान होता है। इलाज के दौरान मरीजों के शरीर की सीडी4 गिनती की जाँच की जाती है। एचआईवी की गंभीरता का निर्णय इस के आधार पर किया जाता है। नारियल तेल की कई खूबियाँ हैं। यह सिर्फ ऐसे मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों का स्रोत ही नहीं जिसका ऊतक आसानी से अवशोषण कर सकते हैं, बल्कि इसमें रोगप्रतिरोधिता बढ़ाने वाले लारिक अम्ल और कैप्रिक अम्ल भी निहित होते हैं। इनमें रोगाणुओं और वायरसों को मारने की क्षमता होती है। जाकार्ता के एक खास स्वास्थ्य केन्द्र में इसके संबंध में परीक्षण चलाया गया। 40 एचआईवी मरीजों को रोजाना तीन बार, हरेक बार 15 मिली लीटर के हिसाब से, छह हफ्ते तक विर्जिन नारियल तेल दिया गया। विर्जिन नारियल तेल की खपत किए एचआईवी मरीजों के सीडी 4 टी ऊतकों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि दर्शित हुई। विर्जिन नारियल तेल में निहित लारिक और कैप्रिक अम्लों की बैक्टीरिया रोधी क्षमता दीर्घश्रृंखला वसा

अम्लों की अपेक्षा बेहतर तरीके से एचआईवी वायरसों को नष्ट करता है। (नई दिल्ली में 28 और 29 सितंबर 2015 को नारियल तेल पर संपन्न प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सिंपोसियम में डा.के.धर्म विद्यार्थ द्वारा प्रस्तुत किए गए आलेख का संक्षेप)

जुलाई 2000 में चेन्नै में संपन्न 37वें एपीसीसी कोकोटेक बैठक में डा. कोनरेडो डेयरिट ने नारियल तेल की एड्स प्रतिरोधी क्षमता के बारे में चलाया गया दूसरा अध्ययन प्रस्तुत किया था। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि नारियल तेल में निहित मोनोलारिन एचआईवी एड्स को रोकने की क्षमता रखता है। नारियल तेल की वायरस रोधी क्षमता एचआईवी एड्स की इलाज में गुणकारी है या नहीं, यह जानने के लिए किया गया पहला नैदानिक अध्ययन था यह। एड्स से पीड़ित मरीजों को शामिल करके चलाए गए अध्ययन में शरीर का वजन बढ़ते और खून में वायरसों की संख्या कम होते और सीडी4 की संख्या बढ़ते पाया गया। इसमें सबसे बड़ी उपलब्धि यह पायी गयी कि वायरसों की संख्या में भारी कमी दर्शित हुई थी।



नारियल बागों में मासिक कार्य

जनवरी से मार्च तक

अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

जनवरी

नारियल थालों की सिंचाई करके खरपतवार निकाल दें। खाद के गड्ढों को घुलनीय 50 प्रतिशत कार्बरिल पाउडर प्रति लीटर 5 ग्राम के हिसाब से घोल बनाकर शराबोर करके गैंडाभृंगों के अंडों और सूँडियों का नाश करें। ताड़ों की सिंचाई करें। सिंचाई की आवृत्ति और पानी की मात्रा मृदा का प्रकार और सिंचाई की विधि आदि पर निर्भर है।

फरवरी

अलाभकर और जीर्ण पेड़ों को काट दें और बागों से कचरा निकाल दें। बाग की निराई करके साफ रखें। नर्सरी को सिंचित करें। ताड़ों की सिंचाई जारी रखें। नियमित रूप से फल प्राप्त होने वाले और वार्षिक पैदावार सौ फल से कम न होने वाले चयनित मातृताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें।

मार्च

नर्सरी की सिंचाई जारी रखें। मातृ वृक्षों से बीजफल इकट्ठा करना शुरू करें। बुआई के पहले करीब एक महीने तक बीजफल रेत में सुरक्षित रखें। खरपतवार निकालकर और अनावश्यक पेड़ों को काटकर निकालके नई रोपाई के लिए ज़मीन की तैयारी करें।

कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया है तो पत्तों के निचले तल पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोवॉस से छिड़काव करें। जब तक कीट की संख्या कम नहीं हो जाती तब तक कीट की अवस्था के अनुरूप 15 दिन के अंतराल में उपयुक्त परजीवियों को छोड़ दें। यदि रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया है तो मित्रकीटों को तीन हफ्ते के बाद ही छोड़ देना चाहिए, नहीं तो वे मर जाएंगे। इसका निवारणोपाय अपनाने के पहले सबसे बाहर के गंभीर रूप से प्रकोपित सूखे पत्तों को काटकर जलाना चाहिए।

औंध्र प्रदेश

जनवरी

ताड़ों के शिखर को साफ करें। पत्ता भक्षक इल्ली से पीड़ित पत्तों को काटकर जला दें। गैनोडेर्मा मुर्झा रोग का पता लगाएं और पौधे के थालों को कैल्किस्न 5 प्रतिशत या 1 ग्राम ऑरियोफंगिन + 1ग्राम कोपर सल्फेट 5 लीटर पानी में

घोलकर तैयार किए गए ऑरियोफंगिन घोल से शराबोर कर दें। वही उपचार 15 दिन बाद भी करें। रोगग्रस्त ताड़ को उसके चारों तरफ गहरा गड्ढा खोदकर अलग कर दें। रोगग्रस्त ताड़ों के सबसे निकट स्थित स्वस्थ ताड़ों का भी उपरोक्त घोल से इसी प्रकार से उपचार करें ताकि रोग फैलने



कृष्ण शीर्ष इल्ली

से रोक सकें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो नीम तेल-लहसुन-साबुन का घोल 2 प्रतिशत या अज़ाडिरेक्टिन प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर छिड़काव करें या 7.5 मि.लीटर की दर पर तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ के ज़रिए दें। बारिश के समय हल्के तौर से जुताई करें। ताड़ों को सींचना शुरू कर दें।

फरवरी

बागों को सिंचित करें। यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो गंभीर रूप से रोगग्रस्त 2-3 बाह्य पत्तों को काटकर जला दें। शेष पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत

क्विनालफोस से छिड़काव करें। यदि कीटों का प्रकोप अधिक हो तो 15 दिन के अंतराल में छिड़काव फिर से करें। रासायनिक पदार्थों के छिड़काव के तीन हफ्ते बाद कीटों की अवस्था के अनुसार ताड़ों पर विशेष परजीवियों को छोड़ दें। डिंभक अवस्था के लिए *गोनियोज़स नेफान्टिडिस*, प्यूपा पूर्व अवस्था के लिए *इलास्मस नेफान्टिडिस* और प्यूपा अवस्था के लिए *ज़ैन्थोपिम्प्ला पंक्टाटा* (*इक्न्यूमोनिड*) को छोड़ दें। परजीवियों को प्राप्त करने के लिए निकटतम परजीवी प्रजनन प्रयोगशाला से संपर्क करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो इसका उपचार करें।

मार्च

पेड़ों के शिखरों पर भृंग अंकुश द्वारा गैंडा भृंग की तलाश करें और भृंगों को मार डालें। पेड़ के भीतरी तीन पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीने रेत मिलाकर भरें। खाद के गड्ढों में 0.01 प्रतिशत कार्बरिल का छिड़काव करें। सिंचाई जारी रखें। चुनिंदा बागों से चुने हुए मातृ वृक्षों से बीजफल इकट्ठा करें।

यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो मित्रकीटों को छोड़ दें। अगर पेड़ों पर शल्क कीटों का प्रकोप पाया जाता है तो 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें।

असम

जनवरी

सिंचाई जारी रखें। ताड़ के चारों तरफ निराई गुड़ाई कर दें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करते रहें और इसे छायेदार शुष्क जगह पर भंडारण करें। नारियल बागों में तालाब की गाद डालें। पौदों के प्रतिरोपण के लिए 8मी. x 8मी. की दूरी में 1 मी x 1 मी x 1मी आकार के चौकोर गड्ढे खो दें।

फरवरी

बागों की सिंचाई करें। चयनित मातृताड़ों से फल इकट्ठा करना जारी रखें और नारियल पानी का सूख जाना रोकने के लिए उपयुक्त भंडारण तरीका अपनाएं। पौदों के प्रतिरोपण के लिए 8मी. x 8मी. की दूरी में 1मी x 1मी x 1मी आकार के चौकोर गड्ढे खो दें। गड्ढों के 40 सें.मी. तक भाग खाली

छोड़ते हुए ऊपरी मृदा, 500 ग्राम रोक फोस्फेट, 50 कि.ग्रा. सूखा गोबर/कम्पोस्ट खाद आदि के मिश्रण से 60 सें.मी. ऊँचाई तक भरें। दीमकों के आक्रमण से बचने के लिए 100 ग्राम 10 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस का प्रयोग करें। कलिका विगलन, तना स्रवण या गैंडाभृंग और लाल ताड़ घुन जैसे कीटों के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ों के शिखर को साफ करें और यदि पहले नहीं किया गया हो तो रोगरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। यदि तना स्रवण पाया जाए तो तने के रोगग्रस्त ऊतकों को निकाल दें और घाव पर 5 प्रतिशत कैल्किस्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा तब गरम कोलतार लगाएं। रोगग्रस्त ताड़ों को हर तीन महीने बाद जड़ों के ज़रिए प्रति ताड़ 5 मि.ली. कैल्किस्सिन 100 मि.ली.पानी में घोलकर दें। उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ 5 कि.ग्रा. नीम

खली प्रति वर्ष प्रति ताड़ दें। बारिश के मौसम में उचित जल निकासी की और गर्मियों के दौरान सिंचाई की व्यवस्था करें।

मार्च

गैनोडेर्मा रोग से ग्रस्त पेड़ों के नीचे से 2 मीटर की दूरी पर एक मीटर गहरी और 30 से.मी. चौड़ी खाई खोदकर उसे

दूसरे पेड़ों से अलग करें। बागों से अधिक आयुवाले अनुत्पादक पेड़ों को काटकर निकालें। यदि गड्ढे जनवरी या फरवरी में नहीं खोदे गए हैं तो इस महीने खोदें और पौद रोपने के लिए



गैनोडेर्मा रोग ग्रस्त पेड़



गड्ढे के 60 से.मी. तक ऊपरी मृदा + रेत + गोबर वाले गड्ढा मिश्रण से भरें। एकाध बारिश के बाद पेड़ों के चारों ओर की मृदा अच्छी तरह जोत लें। बीजफल रोपने हेतु नर्सरी क्यारियाँ बनाना शुरू करें।

बिहार/झारखंड/छत्तीसगढ़

जनवरी

ताड़ों के शिखरों को साफ करें। सिंचाई जारी रखें। यदि पानी की कमी हो तो ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाएं। ताड़ के थालों से खरपतवार निकाल दें। नई रोपित पौधों के लिए छाया प्रदान करने की व्यवस्था करें। सूखे पत्तों से ताड़ों के थालों का पलेवा करें। नारियल बागों में टंकी की गाद/जंगली मिट्टी/कम्पोस्ट आदि डालें। शिखर पर ब्लाइटोक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर पर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर घोल बनाकर शिखर तथा गुच्छों पर छिड़काव करें ताकि ठंड के कारण होने वाले रोग-संक्रमण से पेड़ों को बचाया जा सके।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। ठंड से पड़ने वाले रोगसंक्रमण से बचने के लिए शिखरों और गुच्छों पर ब्लाइटोक्स 5 ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर पर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर घोल कर छिड़काव करें। निम्नवर्ती क्षेत्रों में थाले में प्रति वयस्क ताड़ 500 ग्राम यूरिया, 1000 ग्राम सिंगल सुपरफोस्फेट और 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेस डालकर ऊपरी मिट्टी से ढक दें। बीजपौधों का

सतही रोपण ऐसे क्षेत्रों में किया जा सकता है जहाँ पर भौम जल स्तर ऊँचा हो। नए रोपित बीजपौधों को छाया उपलब्ध कराने के लिए बीजपौधे से 2 मीटर की दूरी पर केले के पौधे लगाएं।

मार्च

ताड़ों की सिंचाई करें। रोगकीटों और रोगों के प्रकोप को रोकने के लिए पौधा संरक्षण रासायनिक पदार्थों का प्रयोग करें। सिंचाई चैनलों की मरम्मत करें। भूमि तैयार करें और गड्ढों के बीच 8 मीटर की दूरी छोड़कर 1मी. x 1मी. x 1मी. आकार के गड्ढे खोदें। निम्नवर्ती क्षेत्रों के बीजपौधों का पुनरोपण/प्रतिरोपण करें। यदि जल स्तर ऊंचा है तो सतही रोपण किया जा सकता है। दीमक के प्रकोप की विशेषकर छोटे पेड़ों पर, तलाश करें। दीमक के प्रबंधन के लिए मृदा में पर्याप्त नमी बनाए रखना पूर्वापेक्षित है। नर्सरी को 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के बीच भिगो दें। गैड़ा भृंग/ लाल ताड़ घुन की रोकथाम के लिए पेड़ के भीतरी तीन पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीने रेत मिलाकर भरें।

छत्तीसगढ़

फरवरी

बागों को सिंचित करें। नारियल ताड़ों को उर्वरकों की तीसरी मात्रा दें। रोगकीटों से बचने के लिए पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। थालों में पलेवा करें और बागों में निराई गुड़ाई करें।

मार्च

बागों के ताड़ों, नर्सरियों और अंतरा फसलों की सिंचाई करें। पेड़ों में रोग-कीटों की जाँच करें और पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। भूमि की जुताई करें और थालों में पलेवा करें। गर्मियों में उगने वाली सब्जियों और अन्य अंतराफसलों की रोपाई करें। नारियल ताड़ों में केंचुआ खाद का प्रयोग करें।



बागों से खरपतवार निकाला जा रहा है

कर्नाटक

जनवरी

ताड़ों को नियमित रूप से सिंचित करें। ड्रिप प्रणाली के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 60-70 लीटर पानी दिया जाए। सिंचित अवस्था में उपयुक्त अंतराफसलें उगाएं। यदि पर्ण चित्ती रोग पाया जाता है तो पत्तों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। यदि ताड़ पत्ता भक्षी इल्लियों से पीड़ित हैं तो गंभीर रूप से रोगग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें। पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत मैलाथियॉन या 0.02 प्रतिशत डाइक्लोवॉस से छिड़काव करें। बाग में उपयुक्त अवस्था के परजीवियों को छोड़ें। रोगपीड़ित क्षेत्रों में रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया हो तो 15 दिन बाद ही परजीवियों को छोड़ दें। यदि

ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा दें। बारानी स्थिति में भूमि की जुताई करें और खरपतवारों को निकाल दें।

फरवरी

बागों की सिंचाई करें। ड्रिप सिंचाई के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 60-65 लीटर पानी दें। गैंडा भृंग के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ के शिखरों को साफ करें और सबसे ऊपर के 3 पर्णकक्षों को सेविडॉल 8 जी (25ग्राम) + बारीक रेत (200 ग्राम/ताड़) से या प्रति पर्ण कक्ष 10.5 ग्राम नैफथलीन गोलियाँ (प्रति शिखर 3-4 गोलियाँ) बारीक रेत से ढककर 45 दिनों के अंतराल में भरें। खाद के गड्ढों और अन्य संभाव्य प्रजनन स्थानों को 0.1 प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें जो कि हर तीन महीने में दोहराना चाहिए। पर्ण चित्ती रोग से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। पत्ता भक्षी इल्लियों के प्रकोप से बचने के लिए एकीकृत नियंत्रण उपाय अपनाया



गैंडा भृंग

जाए। रोगसंक्रमण पाए जाने के तुरंत बाद और बाद में 3 बार पन्द्रह दिनों के अंतराल में मित्रकीटों को छोड़ देना चाहिए। यदि रोगप्रकोप अधिक हो तो गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त निचले पत्तों को काटकर जला दें और शेष पत्तों के निचले भाग पर क्विनालफोस 0.05 प्रतिशत से छिड़काव करें। पीड़कनाशियों के छिड़काव या जड़ों द्वारा पिलाने के तुरंत बाद फसल नहीं काटनी चाहिए। उपचारित ताड़ों से फसल काटने के लिए 45 दिनों की सुरक्षित अवधि बनायी रखनी चाहिए। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए घोल से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ छींटों को पड़ने दें। लाल ताड़ घुन के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए बाग की साफ-सफाई ज़रूरी है। पूर्ण रूप से रोगग्रस्त और जीर्ण पेड़ों को काटकर जला दें। यदि कीट का प्रकोप पाया जाता है तो प्रति ताड़ कार्बेरिल (50 प्रतिशत) का 1 प्रतिशत घोल 1 लीटर इंजेक्ट करें। कीटनाशी का घोल कीप के ज़रिए इंजेक्ट करें। इंजेक्ट करने के बाद रोगग्रस्त तने के सभी छेद बंद करें। प्रति हेक्टर एक फेरोमोन फंदा से घुनों को पकड़ा जा सकता है।

मार्च

बागों की सिंचाई करें। ड्रिप सिंचाई से प्रति दिन प्रति ताड़ 70-80 लीटर पानी दें। सिंचित अवस्था में उपयुक्त अंतराफसलों की रोपाई करें। गैंडा भृंग के प्रकोप की जाँच

करें। ताड़ के शिखरों को साफ करें और ऊपर के तीन पर्ण कक्षों को 250 ग्राम नीम खली और महीन रेत (250 ग्रा./ ताड़) के मिश्रण से भर दें। 45 दिनों के अंतराल में पर्ण कक्ष दो नैपथलीन गोलियों और उसके ऊपर महीन रेत से भर दें। हर तीन महीने में एक बार खाद के गड्ढों और गैंडा भृंग के संभावित प्रजनन स्थानों में 0.1 प्रतिशत कार्बेरिल से उपचारित करें। हर तीन महीने में एक बार इसे दोहराएं। पर्णचित्तियों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप को रोकने के लिए एकीकृत नियंत्रणोपाय अपनाएं। रोगकीटों का प्रकोप पाए जाने पर उपयुक्त अवस्था के मित्रकीटों को तुरंत छोड़ दें और बाद में दो हफ्ते के अंतराल से तीन बार यह दोहराएं। लंबे पेड़ों और फलोद्यानों के लिए जैविक और रासायनिक प्रणालियों का मिला-जुला प्रयोग अनुशंसित है। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीम तेल मिश्रण का छिड़काव करें। इसकी छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों में पड़नी चाहिए। मृदा की पौष्टिक अवस्था सुधारने के लिए ताड़ों के थालों में ढ़ेंचा जैसी हरी खाद फसलें उगाएं और 45 दिनों में इसे मिट्टी में गाड़ दें। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 25 कि.ग्रा. की दर पर जैव खाद डाल दें। 5 कि. ग्राम नीम की खली प्रति पेड़ प्रति वर्ष डाल दें।

केरल/लक्षद्वीप

जनवरी

छोटी पौधों और वयस्क ताड़ों को सिंचित करें। ताड़ों के शिखरों को साफ करें। बाग के सभी अधिक आयु वाले अनुत्पादक ताड़ों को काट कर निकाल दें। नियंत्रणोपाय के रूप में या तो बोर्डो मिश्रण या बाज़ार में उपलब्ध कोई दूसरा तांबा युक्त फफूँदनाशी का छिड़काव जारी रखें। यदि पत्ता भक्षक इल्लियों का प्रकोप पाया जाता तो रोगग्रस्त पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। बीजफल इकट्ठा करने के लिए मातृताड़ों का चयन करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो ताड़ के शिखर को साफ करें और नीम तेल-लहसुन-साबुन का घोल 2 प्रतिशत या अज़ाडिरेक्टिन

4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से तैयार किए गए मिश्रण का छिड़काव करें या 7.5 मि.ली. अज़ाडिरेक्टिन तुल्य मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा दें।



एरियोफिड माइट

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। वयस्क ताड़ों के थालों में 200-250 लीटर पानी से चार दिन में एक बार सिंचित करें। ड्रिप सिंचाई के ज़रिए 60-65 लीटर पानी दिया जाए। यदि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है तो छोटे पौधों के लिए छाया प्रदान

करना, पलेवा करना और पिचर सिंचाई जैसे नमी संरक्षण उपाय अपनाए जाएं। सभी पुराने शूकीछद, अनुपर्ण आदि जो आसानी से हाथ से खींचकर निकाल सकते हैं, निकाल कर शिखर को साफ करें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप अधिक है तो एकीकृत नियंत्रण उपाय अपनाएं। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ मिश्रण की छींटें पड़ने दें। बीजफलों को एकत्र करना शुरू करें। सिंचित बागों में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का एक चौथाई भाग डाल दें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें। चुनिंदा मातृवृक्षों से बीजफल इकट्ठा करना जारी रखें और उन्हें ठंडे सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें। अगर बरुथी (mite) का प्रकोप पाया जाता है तो नीम तेल मिश्रण 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन (नीमाज़ॉल) 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। इसकी छींटें दूसरे से पाँचवें गुच्छों में पड़नी चाहिए।



माइट प्रकोपित नारियल

कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया है तो पत्तों के निचले तल पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। जब तक कीटों की संख्या कम नहीं हो जाती तब तक कीट की अवस्था के अनुरूप 15 दिन के अंतराल में उपयुक्त परजीवियों को छोड़ दें। यदि रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया है तो मित्रकीटों को तीन हफ्ते के बाद ही छोड़ देना चाहिए नहीं तो वे मर जाएंगे। इसका निवारणोपाय अपनाने के पहले सबसे बाहर के गंभीर रूप से प्रकोप वाले और सूखे पत्तों को काटकर जलाना चाहिए।

महाराष्ट्र/गोवा/गुजरात

जनवरी

मृत और सड़ी हुई चीज़ों को हटाकर ताड़ों के शिखर साफ करें। यदि फफूंदी रोग पाया जाता है तो पेड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। सभी रोगग्रस्त पत्ते काटकर निकाल दें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप अधिक हो तो, पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें। छिड़काव के 15 दिन बाद ही परजीवियों को छोड़ दें।

फरवरी

एनाबेरोगा रोग से ग्रस्त पेड़ों को काटकर नष्ट कर दें। रोगग्रस्त ताड़ों के चारों ओर खाई खोदकर ताड़ों को अलग कर दें। 5 कि.ग्राम. नीम खली प्रति ताड़ दें। थालों को 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण वाले 40 लीटर घोल से शराबोर कर दें। वयस्क ताड़ों पर तना स्रवण रोग की जाँच करें। रोगग्रस्त ताड़ों का उपचार करें। तने से रोगग्रस्त ऊतकों को निकालने के बाद 5 प्रतिशत कैल्किक्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा गरम

कोलतार लगाएं। रोगग्रस्त ताड़ों को उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. नीम खली डालें। बागों की सिंचाई जारी रखें। नए रोपण के लिए 7.5 मीटर के अंतरण में गड्ढे खोदें। यदि प्रस्तुत भूमि चढ़ाई वाली हो तो कॉटूर बांध या पुश्टों का तरीका अपनाएं।



एनाबेरोगा रोग ग्रस्त पेड़

मार्च

बाग की निराई-गुड़ाई करें। खरपतवार एवं झाड़ियाँ आदि निकालकर जला दें। रोग कीटों के प्रकोप की

जाँच करें और उनकी रोकथाम के लिए उचित उपाय अपनाएं। सिंचाई जारी रखें। बीजफलों को इकट्ठा करना शुरू करें।

ओड़िशा

जनवरी

मौसमीय फसलें लगाएं। नारियल और अंतराफसलों की सिंचाई करें। हरी खाद मिलाएं। नारियल थालों को कयर गूदा/छिलके आदि से पलेवा करें।

कीटों/रोगों के प्रकोप के अनुसार पौधा संरक्षण रासायनिकों का प्रयोग किया जाए। यदि एरियोफिड माइट का प्रकोप पाया जाता है तो एजाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत 7.5 मि.ली.की दर पर तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा दें। शिखर की सफाई करें। नारियल और अंतराफसलों की अनुरक्षण गतिविधियाँ जारी रखें।

फरवरी

झाड़ियों और खरपतवार को निकाल दें। खेत तैयार करें और कंद मूल वाली फसलें जैसे अदरक, हल्दी आदि लगाएं। नारियल पेड़ों को उर्वरकों की दूसरी मात्रा दें। बागों को सिंचित करें। कयर गूदा/छिलका आदि से नारियल थालों पर पलेवा करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अजाडिरेक्टिन/ नीमाजॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण का छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ मिश्रण की छींटें पड़ने दें। शिखरों को साफ करें और अन्य अनुरक्षण उपाय करते रहें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप पाया जाता है तो रोगग्रस्त पत्तों के निचले हिस्से पर 0.05 प्रतिशत



नारियल बाग में अदरक की खेती

क्विनालफोस से छिड़काव करें। ऐसी जगहों पर जहाँ ठंड ज्यादा पड़ती है कलिका विगलन जैसे रोगों से बचने का उपाय अपनाया जाए। ऐसे मामलों में शिखरों पर ब्लाइटॉक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर पर या 2 ग्राम डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी की दर पर छिड़काव करें।

मार्च

ताड़ों की सिंचाई करें। बागों से खरपतवार निकाल दें। नमी संरक्षण के लिए सूखे नारियल पत्तों और कयर गूदे से पलेवा करें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करके ठंडे और सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर तैयार किए गए 0.1 प्रतिशत अजाडिरेक्टिन/ नीमाजॉल युक्त नीम तेल मिश्रण से छिड़काव करें। इस मिश्रण की छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों में पड़नी चाहिए।

नेफेन्टिस सेरिनोपा (कृष्ण शीर्ष इल्ली) से प्रकोपित पेड़ों पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें। अगर प्रकोप गंभीर हो तो छिड़काव 15 दिन के बाद दोहरायें। छिड़काव के पहले प्रकोपित पत्तों को काट कर जला दें ताकि आगे का प्रकोप रोका जा सके। छिड़काव के 15 दिन बाद प्रकोपित पेड़ों पर परजीवियों को बारी बारी से छोड़ दें। जिन पेड़ों पर परजीवियों को छोड़े गए हैं उन पर कीटनाशियों का छिड़काव न करें क्योंकि इससे ये भी मारे जाएंगे। सिंचित बागों में उर्वरकों का एक चौथाई भाग डालें।



नारियल थालों में कयर गूदे से पलेवा किया गया है

तमिलनाडु / पुतुच्चेरी

जनवरी

ताड़ के शिखर को साफ करें। यदि जनवरी के प्रारंभ में बारिश नहीं हुई तो नियमित ग्रीष्मकालीन सिंचाई शुरू करें। तना स्रवण रोगग्रस्त ताड़ों के रोगग्रस्त ऊतकों को निकालकर कोलतार या बोर्डो लेप लगाकर उपचारित करें। तंजावूर मुर्झा से ग्रस्त ताड़ों के थालों से 2 मीटर की दूरी पर 1 मीटर गहरी और 50 सें.मी चौड़ी खाई खोदकर ताड़ों को अलग रखें। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्राम नीम खली डालें। थालों को प्रति ताड़ एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण के 40 लीटर से शराबोर करें। एक साल के लिए हर तिमाही में 100 मि.ली. कैलिकिसिन 5 प्रतिशत जड़ों द्वारा दें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या अज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

फरवरी

गर्मियों में मृदा के प्रकार के अनुरूप 4 से 7 दिनों में एक बार सिंचाई जारी रखें। सिंचित स्थिति में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का एक चौथाई भाग यानी 250 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सुपरफोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश डालें। ताड़ों के शिखरों पर गैंडाभृंग का पता लगाएं और भृंग अंकुश से भृंगों को मारें। ताड़ के सबसे ऊपर के 4 पर्णकक्षों में सेविडॉल 8 जी (25 ग्राम) और महीन रेत (200 ग्राम) का मिश्रण भरें। पर्णकक्षों में 12 ग्राम नैफथलिन

गोलियाँ (लगभग 3 गोलियाँ) और उसके ऊपर महीन रेत 45 दिन के अंतराल में भरना भी बेहतर है। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ इस मिश्रण की छींटें पड़ने दें।

मार्च

यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर तैयार किया गया 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल युक्त नीमतेल मिश्रण से छिड़काव करें। इस मिश्रण की छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों पर पड़नी चाहिए। बुतामों और रोगग्रस्त फलों के परिदल-पुंजों पर खासतौर पर छिड़काव करना चाहिए। जब छिड़काव करना मुश्किल हो जाता है तो जड़ों द्वारा दवा दें। इसके पहले सभी परिपक्व फलों को तोड़ लें और जड़ों द्वारा पिलाने और रासायनिक प्रयोग के 45 दिनों के बाद फलों की अगली तुड़ाई करनी चाहिए। 7.5 मि.ली. अज़ाडिरेक्टिन 50% का 7.5 मि.ली. पानी में घोलकर जड़ों द्वारा देना चाहिए। सिंचाई जारी रखें। सूँड़ियों पर नियंत्रण



पाने के लिए जैव खाद गड्डों और गैंडा भृंग के अन्य संभाव्य प्रजनन स्थानों को 0.01 प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें। चुनिंदा मातृ वृक्षों से बीजफलों को इकट्ठा करते रहें और ठंडे सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें।

त्रिपुरा

जनवरी

3-4 दिनों के अंतराल में ताड़ों को सिंचित करें। प्रत्येक ताड़ के थालों में पत्तों से पलेवा करें ताकि मृदा की नमी नष्ट होने

से बचाया जा सके। थालों में पलेवा करने से पहले, दीमकों के प्रकोप से बचने के लिए 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर कर दें। नए पौधों को तेज़ धूप से बचाने के लिए दक्षिण पश्चिम

दिशा में भागिक रूप से छाया प्रदान कर दें। कलिका विगलन या पत्ता सड़न रोग से ताड़ों को बचाने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या कोई भी ताँबे के फफूँदनाशक का छिड़काव करें।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। ताड़ों को खासतौर पर छोटे ताड़ों को दीमक के आक्रमण से बचाएं। 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार नर्सरी को शराबोर करना भी अनुशंसित है। महीने के दौरान पुराने और सूखे पत्तों से पलेवा करना चाहिए। यदि जनवरी में रोगों और कीटों से बचने के लिए आवश्यक रोगनिरोधी उपाय नहीं अपनाया है तो वह अभी करें।



नारियल थालों में पत्तों से पलेवा लगाया गया है

मार्च

सिंचाई जारी रखें और सिंचाई का अंतराल प्राप्त वर्षा की मात्रा के आधार पर निश्चित करें। नियमित सिंचाई से फलदार पेड़ों के उत्पादन में सुधार आ जाएगा।

पश्चिम बंगाल

जनवरी

नारियल के फलों की तुड़ाई जारी रखें। बाग तथा नर्सरी की छोटी पौधों को सिंचित करना शुरू कर दें और छाया प्रदान कर दें। बीजफलों को एकत्रित करने के लिए मातृताड़ों का चयन करें।

फरवरी

बागों और नर्सरी की सिंचाई करें और नई रोपित छोटी पौधों के लिए छाया प्रदान करें। बोनो के लिए बीजफलों को एकत्रित करें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें। मृदा की नमी संरक्षण क्षमता के अनुसार हफ्ते में दो बार थालों में 200 लीटर पानी दें। यदि ड्रिप सिंचाई अपनाई हो तो प्रति दिन प्रति ताड़ 70 से 80 लीटर पानी दें। नए रोपित बीजपौधों को अच्छी तरह से छाया प्रदान करें। नमी संरक्षण के लिए नारियल छिलका, हरे पत्ते, सूखे नारियल पत्ते आदि की 3 से 4 परतों से या 6 इंच की मोटाई में थालों में कयर गूदे से पलेवा करें।

परिपक्व फलों की तुड़ाई करें। नियमित रूप से फलदायी और कम से कम वार्षिक पैदावार 100 फल से न कम वाले चुनिंदा मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें। इकट्ठे किए गए फलों का छाया में भंडारण करें। गैंडा भृंग के आक्रमण (नए तर्कु पत्तों में त्रिकोणीय आकार की कटाई) की जाँच करें। भृंग अंकुश से भृंगों को निकाल दें। ताड़ों के शिखरों को साफ करें और ताड़ के सबसे ऊपर के पर्णकक्षों को 45 दिनों के

कलिका विगलन रोगग्रस्त नारियल पेड़



अंतराल में सेविडोल 8 जी (25 ग्राम) + महीन रेत (200 ग्राम/ताड़) के मिश्रण से भर दें। खाद के गड्ढों को हर तीन महीने में एक बार 0.1 प्रतिशत कार्बरिल से उपचारित करें। यदि कलिका विगलन रोग पाया जाए तो सभी रोगग्रस्त ऊतकों को हटा दें। घाव को बोर्डो मिश्रण या ब्लाइटॉक्स पेस्ट से उपचारित करें। शिखर पर प्रति लीटर पानी में 5 ग्राम की दर पर ब्लाइटॉक्स का या प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर डाइथेन एम 45 का छिड़काव करें। एरियोफाइड बरुथी के प्रकोप को रोकने के लिए प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन /नीमाज़ॉल का छिड़काव करें। छिड़काव ऊपर के पाँच गुच्छों पर करना चाहिए। 7.5 मि.ली. पानी में 7.5 मि.ली. नीमाज़ॉल (5%) का घोल बनाकर बारी-बारी से जड़ों द्वारा दें। पेड़ों के बीच की जगह को जोतकर खरपतवार निकाल दें। अंतरा-फसल के रूप में ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ और गेंदे जैसे फूलों की कृषि करें।

नारियल बदलेगी किसानों की तकदीर

काशी में गंगा की बाढ़ से तबाही को नारियल से रोकना चाहते हैं प्रधान मंत्री

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी बनारस के उन किसानों की तकदीर बदलना चाहते हैं जिन्हें हर साल गंगा, वरुणा और गोमती नदियाँ तबाह कर देती हैं। गंगा के किनारे नारियल(कोकोनट) की खेती कराई जाएगी। सबसे पहले बनारस के ढाब इलाके की तस्वीर बदलने की योजना है।

प्रधान मंत्रीजी के निर्देश पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने बड़ी संख्या में नारियल का पेड़ बनारस भेजा है। लालपुर में चल रहे किसान मेले में टोकेन मनी से किसानों को नारियल का पेड़ मुहैया कराया जा रहा है। पेड़ लेने के लिए पिछले दो दिनों से किसानों का रेला उमड़ रहा है। सिर्फ दो दिनों में 15 हजार से अधिक नारियल के पेड़ों की बिक्री हो चुकी है। बिहार की तर्ज पर बनारस में भी नारियल विकास बोर्ड का दफ्तर खोलने की योजना है।

बनारस में नारियल की खेती को लेकर केन्द्र सरकार किसानों को प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रही है। यूपी से सटे बिहार में 14,900 हेक्टर भूमि में नारियल की खेती होती है। केन्द्र सरकार का अनुमान है कि यूपी में गंगा किनारे बाढ़ प्रभावित इलाकों में नारियल उत्पादन की योजना को मूर्त रूप दिया जाए तो करीब पचास हजार हेक्टर में खेती हो सकती है। विश्व बाज़ार में नारियल की जबर्दस्त डिमांड है। बनारस में नारियल को कामयाब फसल बनाने की सारी संभावनाएं मौजूद हैं। यहाँ किसान आम, अमरूद के साथ नारियल भी लगा सकते हैं। इसकी खेती किसी भी प्रकार की मिट्टी में हो सकती है, लेकिन बलुई-दोमट मिट्टी में सबसे उत्तम खेती होती है। बनारस में नदियों के किनारे के सभी खेतों में इसी तरह की मिट्टी पाई जाती है। दरअसल समुचित मूल्यवर्धन के अभाव में बनारस पिछड़ा हुआ है। बनारस ही नहीं, समूचे उत्तर भारत में ताजे नारियल के पानी की जबर्दस्त डिमांड है। इस माँग को पूरा करने के लिए नारियल को कोलकाता से लाना पड़ता है, जिसमें भारी लागत आती है। अकेले बनारस में हर साल करीब एक

करोड़ से ज्यादा का नारियल पानी बिक जाता है। यहाँ कच्चे नारियल का तेल(सौंदर्य उत्पाद व औषधि), नारियल चिप्स, नारियल का शहद, नारियल गुड़, नारियल चीनी, आइसक्रीम, चॉकलेट और मिठाइयाँ भी बिकती हैं। नारियल पानी की तरह बोटलबंद नीरा को अहम नारियल उत्पाद के तौर पर देखा जा रहा है। भारतीय सब्जी अनुसंधान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा.सुधाकर पांडेय के मुताबिक बनारस का ढाब इलाका नारियल की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। लालपुर के मेले में किसानों को नारियल के जो पौधे बाँटे जा रहे हैं उन्हें छत्तीसगढ़ के सर्वाधिक पिछड़े जिले बस्तर से लाया गया है। यहाँ कोंडागाँव के कोपाबेड़ा में नारियल विकास बोर्ड का फार्म है। बनारस के किसानों को संकर प्रजाति की एवं लंबी और बौनी प्रजातियों के पौधे दिए गए हैं। डा.पांडेय बताते हैं कि बनारस के किसान नारियल की खेती से अपना भविष्य संवार सकते हैं। देश-विदेश में नारियल के उत्पाद डाब, खोपड़ा, नारियल तेल, कच्ची गरी, नारियल तेल खली, नीरा,

नारियल के पौधों की खूब हुई बिक्री

चांदमारी में बड़ा लालपुर स्थित पंडित दीनदयाल हस्तकला संकुल में लगे क्षेत्रीय किसान मेले के स्टालों का किसानों ने भरपूर लाभ उठाया। कृषि विज्ञान केन्द्र, कल्लीपुर, वारणासी की तरफ से लगाए गए स्टाल पर नौजवान से लेकर बुजुर्ग तक मशरूम के उत्पादन की विधि की जानकारी हासिल करते नज़र आए। वहाँ नारियल विकास बोर्ड की तरफ से नारियल के पौधों की खूब बिक्री की गयी। जिसे देखो, वो नारियल का पौधा ही लिए जा रहा था। हर तरफ नारियल ही नारियल का पौध नज़र आ रहा था। छत्तीसगढ़ से ट्रक पर लादकर चार हजार पौधे लाए गए थे। नारियल के एक-एक पौधे को 10-10 रुपए में बेचा गया। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, कानपुर, पंडित दीनदयाल शोध संस्थान, गोण्डा सहित दर्जनों स्टाल लगाए गए थे।

नारियल फलवर सिरप, नारियल गुड़, नारियल चीनी, नारियल ताड़ी, नारियल लकड़ी, नारियल पत्ते और कयर गूदा की मांग बढ़ती ही जा रही है। नारियल चिप्स, नारियल दूध, नारियल शक्कर, नारियल नीरा, डाब, नारियल शहद, नारियल गुड़, नारियल दूध शेक, नारियल स्नैक्स, नारियल नेचुरल क्रीम, नीरा कुकीज़ से बड़ी संख्या में लोगों को रोज़गार मिल सकता है। नारियल उत्पादन में भारत विश्व में सबसे अग्रणी देश है। भारत का वार्षिक नारियल उत्पादन 20.82 लाख हेक्टर में 2,395 करोड़ नारियल है। उत्पादकता प्रति हेक्टर 11,505 नारियल है। किसान मेले में आए नारियल बोर्ड के एक अधिकारी ने बताया कि भारत में एक करोड़ से अधिक लोगों को आर्जीविका नारियल से प्राप्त होता है। बिहार-बंगाल के साथ ही असम, त्रिपुरा, मिज़ोरम और नागालैंड में नारियल की खेती के प्रति किसानों का रुझान तेज़ी से बढ़ रहा है। वर्ष 2016-17 में भारत में 2084 करोड़ रुपए के नारियल उत्पादों का निर्यात किया गया। मलेशिया, इंडोनेशिया और श्रीलंका को नारियल तेल का निर्यात किया जा रहा है। किसानों को इसकी खेती के लिए प्रोत्साहित करने की योजना चलाई जा रही है। प्रति हेक्टर की दर से दो किस्तों में 6500 रुपए अनुदान दिया जा रहा है। कम से कम दस पौधे और अधिकतम चार हेक्टर नारियल रोपण करने वाले किसान इसका फायदा उठा सकते हैं।

साभार: जनसंदेश टाइम्स

तकनीक सीखी नहीं, पौधों के लिए होड़

लालपुर के मेले में नारियल के पेड़ों के लिए किसानों की लाइन लग रही है। दीगर बात है कि पूर्वांचल के किसानों को यह पता नहीं है कि इसकी खेती कैसे होगी? पेड़ों को कहाँ और कैसे रोपा जाएगा? कब और कितना उर्वरक दिया जाएगा? कोई बीमारी लगी तो बचाव कैसे होगा? नारियल के पेड़ों पर फूल आते हैं, पर फल क्यों नहीं लगते? इस बात से अनजान किसानों ने महज दो दिनों में नारियल के हज़ारों पेड़ खरीद लिए।

कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक नारियल उत्पादन के लिए बनारस की आबोहवा उपयुक्त है। जरूरत है तो किसानों को प्रशिक्षण की। और यह बताने कि बगैर परागण के नारियल के पेड़ों पर फल नहीं लगते। केरल को छोड़कर भारत में नारियल के पेड़ों पर चढ़ने का काम केवल पुरुष ही करते हैं। अब महिलाओं को भी परागण करने की ट्रेनिंग दी जा रही है। यह दायित्व भारतीय कृषि अनुसंधान के केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्था को सौंपा गया है। नारियल के परागणकर्ता को महीने में लगभग आठ से दस बार नारियल के पेड़ पर चढ़कर यह काम करना पड़ता है। केरल के कासरगोड़ जिले का कुट्टिकोल गाँव की महिलाओं ने नारियल के ऊँचे पेड़ों पर चढ़ने की ट्रेनिंग लेकर इसकी खेती को शिखर पर पहुँचाने को नई आधारशिला रखी है।

एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक-तरावा, किरिबाती

53 वाँ एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक 24-28 अक्टूबर 2017 के दौरान तरावा, किरिबाती में संसद भवन में संपन्न हुआ। डा. बी.एन.एस मूर्ति, अध्यक्ष, नाविबो ने बैठक में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व किया और चर्चा में भाग लिया।

वर्ष 2017 का एपीसीसी अध्यक्ष, किरिबाती सरकार ने वाणिज्य, उद्योग और सहकारिता मंत्रालय और पर्यावरण, भूमि और कृषि विकास मंत्रालय के माध्यम से एपीसीसी सत्र आयोजित किया। महामहिम तनेती मामउ, राष्ट्रपति, किरिबाती ने उद्घाटन सत्र में भाग लिया। माननीय वाणिज्य, उद्योग और सहकारिता मंत्री श्री अटरके नत्तारा और श्री अलेक्सान्डर

तिबो, माननीय पर्यावरण, भूमि और कृषि विकास मंत्री ने सत्र की अध्यक्षता की। फिजी सरकार की ओर से माननीय कृषि सह मंत्री श्री वियाम पिल्लै, पपुआ न्यू गिनिया सरकार की ओर से माननीय कृषि एवं पशुधन उप मंत्री श्री हेन्नी आमे एम पी, समोआ सरकार की ओर से माननीय कृषि एवं मत्स्य पालन मंत्री श्री लोपावो नतानियेलु मुआ, सोलोमन द्वीप समूह सरकार की ओर से माननीय वाणिज्य, उद्योग, श्रम एवं आप्रवासन मंत्री श्री विल्लियम ब्रड्फोर्ड मराउ और मार्शल द्वीप गणराज्य की ओर से माननीय सांसद के उपाध्यक्ष, जेज्वारविक आन्टोन, तुवालु सरकार की ओर से माननीय प्राकृतिक संसाधन मंत्री



श्री पुवखेना बोर्हाम पसूणा आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। एपीसीसी सदस्य देशों के वरिष्ठ सरकारी कर्मचारियों और इंटरनेशनल फंड फोर एग्रिकल्चर डेवलपमेंट (आईएफएडी), दि पसेफिक कम्यूनिटी (एसपीसी), सेंटर फोर एग्रिकल्चर एण्ड बयोसाइन्स इंटरनेशनल (सीएबीआई), सेन्ट्रो डी इन्वेस्टिगेशन सियन्टिफिया डी युकाटान (सीआईसीवाई), करीबियन कम्यूनिटी (करीकोम) का प्रतिनिधित्व करते हुए करीबियन कृषि अनुसंधान एवं विकास संस्थान (सीएआरडीआई) और मेलनेसियन स्पियर ग्रुप (एमएसजी) के प्रतिनिधियों एवं प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम में कुल 72 प्रतिनिधियों तथा प्रेक्षकों ने भाग लिया।

सभी नारियल उत्पादक देशों को कम्यूनिटी का सदस्य बनाकर एपीसीसी को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा दिलाने का ऐतिहासिक निर्णय लेना ही 53वें एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक का मुख्य विषय रहा। वर्ष 2015 में कोची में संपन्न 51वें एपीसीसी सत्र के दौरान एपीसीसी को अंतर्राष्ट्रीय संगठन के स्तर पर उठाने हेतु भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत कार्यसूची के फलस्वरूप ही यह निर्णय लिया गया। सदस्य देशों के सभी साधिकार प्रतिनिधियों ने अनुमोदन संबंधी संकल्प पर हस्ताक्षर किया, जिसे अंतर्राष्ट्रीय हैसियत की अंतिम समर्थन हेतु संयुक्त राष्ट्र संगठन को भेजा गया है।

नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य व पौष्टिक विशेषताओं को प्रभावी रूप से समर्थित और प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता को घोषित करनेवाले तरावा करार में अनुसचिवीय बैठक में भागीदार सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किया। हृदय रोग एवं संतृप्त वसाओं पर अमेरिकन हार्ट एसोसियेशन

की अध्यक्षीय सलाहकार के कुप्रचार के कारण नारियल तेल चुनौतियों का सामना कर रहा है। प्रतिनिधियों ने स्थिति की गंभीरता को समझ लिया और वे एकजुट होने के लिए और नारियल आहार के साथ स्वस्थ जीवन शैली तथा खाद्य नारियल उत्पादों की स्वास्थ्यकर स्थिति के बारे में सच्चाई को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हो गए।

सदस्य देशों के साधिकार प्रतिनिधियों ने देश में नारियल उत्पादन, प्रसंस्करण एवं विपणन में, क्षेत्र द्वारा सामना की जानेवाली बाधाओं तथा फार्म उत्पादकता एवं किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए देश में कार्यान्वित नीतियों और कार्यक्रम को सविस्तार प्रस्तुत करनेवाला आलेख प्रस्तुत किया। देश में नारियल के क्षेत्र में शुरू किए जानेवाले अनुसंधान और विकास गतिविधियों पर नवीनतम विवरण भी प्रस्तुत किए गए। ये देश भविष्य में नारियल के क्षेत्र में क्या-क्या करना चाहते हैं और नारियल क्षेत्र के निरंतर विकास के लिए एपीसीसी से क्या सहायता मांगते हैं- यह भी प्रतिनिधियों ने व्यक्त की। देशीय आलेख प्रस्तुतीकरण से विभिन्न देशों में नारियल के क्षेत्र में हो रही विकासात्मक गतिविधियों को समझने का अवसर मिला। इसके द्वारा फसल उत्पादन, गुणवत्ता आश्वासन, प्रसंस्करण एवं विपणन में शीर्षस्थ देशों से विचारों का आदान-प्रदान, संभाव्य सहयोग के लिए और प्रौद्योगिकी समर्थन को समझने के लिए अवसर प्राप्त हुए।

देशीय आलेखों के प्रस्तुतीकरण के बाद नारियल क्षेत्र के विकास के लिए कार्यरत पर्यवेक्षक संगठनों ने अपनी अभिव्यक्ति प्रकट की। दि पसेफिक कम्यूनिटी (एसपीसी)



डा. बी. एन.एस. मूर्ति, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार एवं अध्यक्ष, नाविबो

श्री उरोन एन सालूम, कार्यकारिणी निदेशक, ए पी सी सी

जो कि 22 सदस्य देशोंवाला अंतरसरकारी संगठन है जिसका दायरा पसेफिक महासागर तक है, ने यूरोपियन यूनियन द्वारा वित्त पोषित -पसेफिक के लिए नारियल उद्योग विकास (सीआईडीपी)- पर और न्यू साउथ पसेफिक इंटरनेशनल नारियल जीन बैंक के उन्नयन तथा सुदृढीकरण विषयक डार्विन पहल परियोजना पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। फिजी, तोंगा, समोआ, किरिबाती और सोलोमन द्वीप समूह में शुरू की गई नारियल क्षेत्र की परियोजनाओं के विवरण सहित कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय निधि और अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण संस्थाओं की गतिविधियाँ भी प्रस्तुत की गईं। इसके बाद मेलनेसियन स्पियरहेड ग्रुप (एमएसजी), फिजी, पपुआ न्यू गिनिया, सोलोमन द्वीप समूह और वनातु सदस्य देशों के साथ उप क्षेत्रीय अंतर सरकारी संगठन द्वारा प्रस्तुतीकरण संपन्न हुआ। सत्र में करीबियन कम्यूनिटी के प्रतिनिधित्व करनेवाला करीबियन कृषि अनुसंधान और विकास संस्था (सीएआरडीआई) ने यूरोपियन संघ के सहयोग से करीबिया

द्वारा कार्यान्वित नारियल उद्योग विकास कार्यक्रम के बारे में और इंटरनेशनल सेंटर के बारे में भी संक्षिप्त विवरण दिया।

एपीसीसी कार्यकारिणी निदेशक श्री उरोन एन सालुम ने कम्यूनिटी द्वारा शुरू की गई विभिन्न गतिविधियों, नारियल क्षेत्र की वैश्विक स्थिति, आगे के अवसर तथा चुनौतियों, नारियल बागों, जो सठिया बनकर जल्दी ही अनुत्पादक हो रहे हैं, के पुनर्रोपण तथा पुनरुज्जीवन की तत्काल आवश्यकता और नारियल के विकास के लिए भविष्य की योजनाओं पर विस्तृत विवरण के साथ वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

सत्र ने एपीसीसी द्वारा शुरू करने हेतु प्रस्तावित कार्यक्रमों और परियोजनाओं से संबंधित विभिन्न कार्यसूची मर्दों पर चर्चा एवं विचार-विमर्श किया। इनमें एपीसीसी के सहयोग से नारियल अनुसंधान संस्थान, श्रीलंका द्वारा प्रस्तावित नारियल रोपण प्रबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, एपीसीसी तथा सीएबीआई के संयुक्त सहयोग से एशिया व पसेफिक



ए पी सी सी बैठक के प्रतिनिधिगण परिचर्चा करते हुए

एपीसीसी बैठक की कुछ झाँकियाँ



के लिए होलिस्टिक रीजनल बयोसेक्यूरिटी विकसित करने हेतु प्रस्तावित परियोजना, अंतर्राष्ट्रीय कोकोनट जेनेटिक रिसोर्स नेटवर्क तथा सिराड के संबंध में एपीसीसी एवं बयोवैसिटी इंटरनेशनल का प्रस्तावित सहयोग और अनुसंधान सहयोग तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के संबंध में सीआईसीवाई के साथ सहयोग शामिल हैं। एपीसीसी द्वारा शुरू की गई अतिरिक्त कार्यक्रम जैसे अंतर्राष्ट्रीय नारियल ऊतक संवर्धन फोरम, अंतर्राष्ट्रीय नारियल आईपीएम नेटवर्क और अंतर्राष्ट्रीय नारियल तेल फोरम को भी सत्र द्वारा अनुमोदन दी गई।

इसके बाद सत्र ने एपीसीसी का तकनीकी पैनल और 47वाँ एपीसीसी कोकोटेक की रिपोर्ट तथा सिफारिशों का समर्थन दिया। 48वें एपीसीसी कोकोटेक सम्मेलन के लिए

- क्लैमेट स्मार्ट खेती के माध्यम से टिकाऊ नारियल का विकास- विषय निश्चित किया गया। सत्र के रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया और मलेशियन सरकार को अध्यक्षता सौंप दी गयी और वे वर्ष 2018 की अंतिम तिमाही में आयोजित किए जानेवाले 54वें एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक की मेजबानी करेंगे।

प्रतिनिधियों ने 28 अक्टूबर 2017 को किरिबाती नारियल विकास लिमिटेड (जो नारियल तेल, विजिन नारियल तेल और साबुन का निर्माण करता है), किरिबाती मत्स्य लिमिटेड, उंवानीबॉंग राष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र व संग्रहालय, थाइवान की सहायता से कृषि एवं पशुपालन प्रभाग वनस्पति परियोजना और कृषि नर्सरी यार्ड की दौरा की।

नाविबो ने देश भर में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए राज्य केंद्र, कोलकाता

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, कोलकाता ने विभिन्न नारियल उत्पादक समितियों तथा नारियल उत्पादक फेडरेशनों के सहयोग से गोलपार्क, कोलकाता में 16 नवंबर 2017 को नारियल उत्पादन तथा मूल्य वर्धन की पहलुओं और संभावनाओं पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की।

कार्यक्रम की मुख्यातिथि श्रीमती प्रतिमा मंडल, माननीय सांसद ने अपने भाषण के दौरान नारियल विकास बोर्ड की पहलों की सराहना की। उन्होंने 24 साउथ परगनास के नारियल किसानों के साथ बातचीत करने की अपनी इच्छा व्यक्त की और नारियल उत्पादक समितियों के साथ समवाय



मंच का दृश्य: स्वामी सुपर्नानंदजी महाराज, सचिव, रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, डा. बी. एन.एस. मूर्ति, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार एवं अध्यक्ष, नाविबो, श्रीमती प्रतिमा मंडल, सांसद और डा. ए.के. नंदी, सचिव, नाविबो

हेतु सांसद की कुछ योजनाएं/निधि प्रदान करने का वादा किया ताकि राज्य में नारियल खेती के अधीन क्षेत्र तथा मूल्य वर्धन बढ़ सकें। उन्होंने नारियल उत्पादक समितियों से विभिन्न मूल्य वर्धन गतिविधियाँ शुरू करने का आग्रह किया।

स्वामी सुपर्नानंदजी महाराज, सचिव, रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राज्य के नारियल किसानों के कल्याण हेतु आयोजित कार्यशाला के लिए नाविबो के प्रति अपना आभार प्रकट किया। उन्होंने किसानों को आगे आने के लिए और कृषक समूहों की आमदनी बढ़ाने हेतु मूल्य वर्धन शुरू करने के लिए आह्वान किया। नारियल की कई चिकित्सा अहमियत के साथ साथ स्वास्थ्य लाभ भी हैं, इसलिए इनका राज्य के लोगों द्वारा लाभ उठाना तथा उपयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने नाविबो से राज्य के सभी जिलों में बोर्ड की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाते हुए राज्य में नारियल के अधीन क्षेत्र बढ़ाने का अनुरोध किया।

डा.बी.एन.एस. मूर्ति, बागवानी आयुक्त एवं अध्यक्ष, नाविबो ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कार्यक्रम में भाग लेने हेतु नारियल किसानों तथा बागवानी/कृषि विभाग के गणमान्य व्यक्तियों एवं अधिकारियों के प्रति अपना आभार प्रकट किया। उन्होंने नारियल उत्पादन तथा उत्पादकता के वैश्विक एवं भारतीय परिदृश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल राज्य नारियल उत्पादकता के मामले में प्रगति कर रहा है जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है। उन्होंने अधिक आय प्राप्त

करने हेतु नारियल मूल्य वर्धन अपनाने के लिए किसानों को आह्वान किया।

कें रो फ अ सं तथा बिधान चंद्रा कृषि विश्वविद्यालय से तकनीकी विशेषज्ञों तथा राज्य विभाग/कृषि विश्वविद्यालयों से पदाधिकारियों और विभिन्न जिलों से 1000 से अधिक नारियल किसानों ने कार्यशाला में भाग लिया।

श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो, कोलकाता ने सभा का स्वागत किया और डा.अनुप कुमार नंदी, सचिव, नाविबो ने कृतज्ञता ज्ञापित की। उद्घाटन सत्र के बाद श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नाविबो, गुवाहटी की अध्यक्षता में तकनीकी सत्र संपन्न हुआ। श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो, कोलकाता ने पश्चिम बंगाल में नारियल खेती की संभावनाओं पर बात की। डा.दीपक कुमार घोष, प्रभारी वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बिधान चंद्रा कृषि विश्वविद्यालय, कल्याणी ने नारियल की उत्पादन प्रौद्योगिकी पर बात की और डा. अरुण कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, कें रो फ अ सं, मोहितनगर ने नारियल के मूल्य वर्धन तथा उसके प्रयोगों के बारे में कहा।



सभा का दृश्य

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने 14 अक्टूबर 2017 को मोतिपुर, बिहार में किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। श्री सुनिल कुमार चौधरी, एसएमएस, केवीके राघोपुर, सुपौल, मुहम्मद हकीम, पीएसीएस अध्यक्ष, राघोपुर, श्री रामदेव दास, सरपंच, मोतिपुर पंचायत, श्री राजीव भूषण प्रसाद, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, श्री संतोष कुमार झा, अध्यक्ष, ग्राम भारती फाउंडेशन ट्रस्ट, सिमुलतला, जमुई जिला, श्री अमरेंद्र यादव, भूतपूर्व मुखिया, हरिरहा पंचायत, श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, क्षे.का., पटना और भीमपुर ब्लोक के किसान तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।



कार्यक्रम के उद्घाटन का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने भीमनगर, बिहार में 13 अक्टूबर 2017 को किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। श्रीमती लीला कुमारी, प्राचार्य, मोद नारायण इंटर कोलेज, भीमनगर, सुपौल, डा.बी.के मंडल, कार्यक्रम समन्वयक, केवीके राघोपुर, सुपौल, श्री राजीव भूषण प्रसाद, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, श्री संतोष कुमार झा, अध्यक्ष, ग्राम भारती फाउंडेशन ट्रस्ट, सिमुलतला, जमुई जिला, श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना और भीमपुर ब्लॉक के किसान तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्री संतोष कुमार झा, अध्यक्ष, ग्राम भारती ने सभा का स्वागत किया और श्री राजीव भूषण प्रसाद, उप निदेशक,

श्री संतोष कुमार झा, अध्यक्ष, ग्राम भारती ने सभा का स्वागत किया और श्री राजीव भूषण प्रसाद, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने विषय-प्रवेश भाषण दिया। श्री सुनिल कुमार चौधरी, एसएमएस, केवीके राघोपुर, सुपौल ने अपने उद्घाटन भाषण में किसानों को सूचित किया कि नाविबो इस क्षेत्र में अच्छा काम कर रहा है और घोषणा की कि किसान लोग आगे आएँ और नाविबो योजनाओं का लाभ उठाएँ।

तत्पश्चात् संपन्न तकनीकी सत्र में श्री सुनिल कुमार चौधरी, सुपौल ने नारियल खेती, रोग एवं कीट प्रबंधन तथा नारियल के विपणन में कैसे सुधार लायें आदि विषयों पर बात की। श्री राजीव भूषण प्रसाद ने नर्सरी की स्थापना तथा प्रबंधन, नारियल खेती प्रणालियों, प्रसंस्करण, मूल्य वर्धन, विपणन आदि पर विस्तृत विवरण दिया। श्री संतोष कुमार झा, ग्राम भारती ने वर्मी कंपोस्ट उत्पादन तथा उसके उपयोगों पर बात की। श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी ने नाविबो योजनाओं के बारे में कहा। श्री संतोष कुमार झा के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने परिचयात्मक टिप्पणी दी। मुख्यातिथि श्रीमती लीला कुमारी ने अपने उद्घाटन भाषण में नाविबो योजनाओं का लाभ उठाने के लिए किसानों



मंच का दृश्य

को आह्वान किया और नारियल खेती करने के लिए किसानों को प्रेरित किया। श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, पटना ने धन्यवाद अदा किया।

तकनीकी सत्र में डा.बी.के मंडल, कार्यक्रम समन्वयक, केवीके राघोपुर, सुपौल ने नारियल खेती, कीट एवं रोग प्रबंधन और नारियल का विपणन कैसे सुधारें आदि विषयों पर बात की। श्री राजीव भूषण प्रसाद, उप निदेशक,

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल खेती, प्रौद्योगिकी, प्रसंस्करण तथा मूल्य वर्धन पर बात की। श्री संतोष कुमार झा, ग्राम भारती ने वर्मी कंपोस्ट उत्पादन तथा उसके उपयोगों पर बात की। श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी ने नाविबो योजनाओं के बारे में कहा। कार्यक्रम के भाग स्वरूप बातचीत सत्र भी संपन्न हुआ।

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने यूनिवर्सल नारियल उत्पादक समिति के सहयोग से 13 सितंबर 2017 को कृषि विज्ञान केंद्र, करीमगंज में वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों तथा नारियल के मूल्य वर्धन पर जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित की।



श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो, गुवाहटी विषय प्रवेश भाषण देते हुए

श्री एस.के.एन.के.सिंह, जिला विकास आयुक्त, करीमगंज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने बेहतर आय प्राप्त करने हेतु नाविबो के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बेरोज़गार युवा किसानों को प्रेरित किया। श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो, गुवाहटी ने अपने मुख्य भाषण में बोर्ड की विभिन्न योजनाएं, असम में नारियल परिदृश्य तथा नारियल के मूल्य वर्धन के बारे में विस्तृत प्रस्तुति की।

श्री आशिश तरुल पॉल, जिला कृषि अधिकारी, करीमगंज ने करीमगंज जिले में नारियल पर कार्यशाला आयोजित करने के लिए नारियल विकास बोर्ड को धन्यवाद अदा किया। उन्होंने गांव में ब्लॉक रोपण तथा नारियल क्षेत्र विस्तार शुरू करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने किसानों को वैज्ञानिक रोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि नारियल उत्पादन बढ़ा सकें।

डा.अब्दुल हाफिस, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, करीमगंज ने नारियल के मूल्य वर्धन एवं अहमियत पर बात की। उन्होंने नाविबो के प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेषतया नारियल आधारित खाद्य प्रशिक्षण एवं हस्तशिल्प प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया।

उन्होंने नाविबो से नारियल प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए अनुरोध किया। डा.सफीकुल हुस्सैन, मुख्य वैज्ञानिक, आरएआरएस, करीमगंज ने नारियल खेती के तहत क्षेत्र विस्तार तथा नारियल बाग में अंतराफसल लगाने का सुझाव दिया जिससे कि किसानों की आमदनी बढ़ सकें। श्री रवींद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, गुवाहटी ने नारियल खेती प्रौद्योगिकियों पर बात की। श्री फक्रुल इस्लम, सचिव, यूनिवर्सल नारियल उत्पादक समिति ने सभा का स्वागत किया और उन्होंने कृतज्ञता भी ज्ञापित की। लगभग 135 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने पैन नारियल उत्पादक समिति, बोको के सहयोग से 4 अगस्त 2017 को धूपगुरी, सुकुनैपारा, बोको में नारियल खेती प्रौद्योगिकी, फसलोत्तर मूल्य वर्धन पर ब्लॉक स्तरीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। श्री प्रणव ठाकुर, अध्यक्ष, पैन नारियल उत्पादक समिति ने सभा का स्वागत किया। श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो, गुवाहटी ने अपने मुख्य भाषण में नारियल के मूल्य वर्धन पर बात की।

श्री राजू राय, नाविबो ने बोर्ड की योजनाओं के बारे में कहा। श्री रवींद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी, नाविबो ने नारियल खेती प्रौद्योगिकियों पर भाषण दिया। इस अवसर पर श्री उत्पल राभा, अध्यक्ष, बेकियल राभा छात्र संघ और श्री नरेन

चंद राभा, जनेरल कार्डसिलर, स्वायत्त राभा परिषद, बोको ने भी बात की। इसके बाद संपन्न बातचीत सत्र में नारियल रोपण, पौधा संरक्षण और बोर्ड की विभिन्न योजनाओं के बारे में किसानों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान किया गया।

राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर ने कालिकट गांव, दक्षिण अंडमान, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 15 नवंबर 2017 को नारियल विषयक किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। श्री एम.गणेशन, प्रधान, कालिकट गाँव ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.अजित



जागरूकता कार्यक्रम के भाग स्वरूप आयोजित बातचीत सत्र के दृश्य कुमार वामन, वैज्ञानिक, मसाले और रोपण फसल, आईसीएआर-केंद्रीय द्वीप कृषि अनुसंधान संस्थान (सी.आई.ए.आर.आई), दक्षिण अंडमान, श्री अविनाश नोर्मन, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर तथा दक्षिण अंडमान के विभिन्न क्षेत्रों के किसानों ने इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्री एम.गणेशन, प्रधान, कालिकट गाँव ने अपने उद्घाटन भाषण में सूचित किया कि नारियल द्वीप की मुख्य फसल है इसलिए किसान बोर्ड की योजनाओं से निश्चय ही लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर नारियल खेती करने के लिए किसानों को आह्वान किया।

बाद में संपन्न तकनीकी सत्र में डा.अजित कुमार वामन, वैज्ञानिक, मसाले और रोपण फसल, आईसीएआर-केंद्रीय द्वीप कृषि अनुसंधान संस्थान (सी.आई.ए.आर.आई) ने नारियल खेती, नर्सरी तकनीकियाँ, विभिन्न फसल, सिंचाई, नारियल का जैव उत्पादन, मातृ-वृक्ष चयन, नारियल रोग एवं कीट प्रबंधन आदि पर संक्षिप्त विवरण दिया। श्री अविनाश नोर्मन, तकनीकी अधिकारी ने नाविबो योजनाओं जैसे क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, निदर्शन प्लॉटों की स्थापना, मूल्य वर्धन, एफ ओसीटी, सीपीएस, नारियल पेड़ बीमा योजना आदि पर बात की।

कार्यक्रम के भाग स्वरूप बातचीत सत्र भी संपन्न हुआ जिसमें नारियल खेती पर किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया। कार्यक्रम में 40 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

नारियल विषयक व्यवसाय उद्यमी सम्मेलन

नाविबो राज्य केंद्र, कोलकाता ने रामकृष्ण मिशन आश्रम, कोलकाता में 16 नवंबर 2017 को नारियल विषयक व्यवसाय उद्यमी सम्मेलन आयोजित की। कार्यक्रम में किसान उत्पादक संगठन के सदस्यों एवं विभिन्न जिलों से लगभग 150 नारियल उद्यमी सह नारियल किसानों ने भाग लिया। डा.मानस घोष, प्रधान आचार्य, एटीसी, रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेंद्रपुर, डा.अरुण कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, सीपीसीआरआई, मोहितनगर, डा.नारायण चंद्र साहू, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एसएसकेवीके, नरेंद्रपुर, श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नाविबो, गुवाहटी, डा.ए.के.नंदी, सचिव,

नाविबो और श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो, कोलकाता ने सत्र में भाग लिया। तकनीकी सत्र में श्री एस.एस.चोयल, उप निदेशक एवं श्री के.एस.सेबास्टियन, सहायक निदेशक (विपणन), नाविबो, कोची ने प्रस्तुति की।

उद्घाटन सत्र के बाद संपन्न तकनीकी सत्र में श्री प्रदीप आहूजा, मेरिको लिमिटेड, कोयंबतूर ने नारियल तेल एवं खोपरा तथा अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों पर बात की। उन्होंने न्यूनतम समर्थन भाव प्रदान करके किसानों से अच्छी गुणवत्ता के एफएक्यू खोपरा प्राप्त करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। श्री के.एस.सेबास्टियन,



व्यवसाय उद्यमी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का दृश्य

सहायक निदेशक (विपणन), नाविबो, कोची ने मूल्य वर्धित नारियल उत्पाद एवं उसके संभावित निर्यात पर बात की। उन्होंने निर्यात प्रोत्साहनों जैसे एमईआईएस तथा ड्यूटी ड्यू बैंक योजनाओं के बारे में बताया। श्री एस.एस चोयल,

उप निदेशक ने नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की योजनाओं पर तथा नारियल प्रौद्योगिकी मिशन कार्यक्रम के अधीन नारियल आधारित इकाइयों की स्थापना हेतु बोर्ड द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायताओं के बारे में बात की।

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण संपन्न

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने 22 जनवरी 2018 को बोर्ड के मुख्यालय की हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी गतिविधियों का निरीक्षण किया। डा. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, संसद सदस्य(लोक सभा) समिति के संयोजक थे। उनके साथ डा. सुनील बलिराम गायकवाड़, संसद सदस्य(लोक सभा) और श्री लक्ष्मी नारायण यादव, संसद सदस्य(लोक सभा) निरीक्षण बैठक में उपस्थित रहे। डा. बी.एन.एस.मूर्ति, अध्यक्ष, नारियल

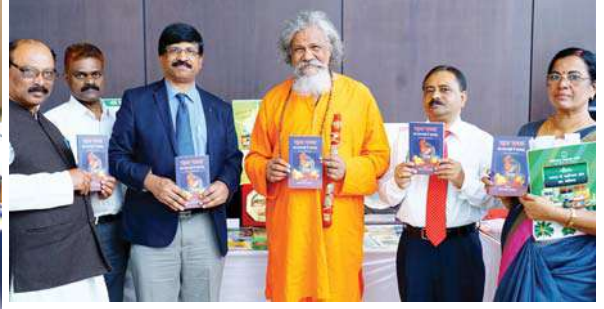
विकास बोर्ड एवं बागवानी आयुक्त, भारत सरकार, श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी और श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक(रा.भा.) ने बैठक में भाग लिया। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग के प्रभारी सहायक निदेशक(रा.भा.) श्री सुशील कुमार ने भी बैठक में मंत्रालय का प्रतिनिधित्व किया। संसदीय समिति के वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी डा. सत्येन्द्र सिंह, हिंदी अधिकारी श्री विकास वर्मा,



निरीक्षण बैठक में (बाएं से) श्री लक्ष्मी नारायण यादव, संसद सदस्य (लोक सभा), डा. सुनील बलिराम गायकवाड़, संसद सदस्य(लोक सभा), डा. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, संसद सदस्य (लोक सभा) एवं संयोजक, संसदीय राजभाषा समिति, डा. सत्येन्द्र सिंह, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, श्री विकास वर्मा, हिंदी अधिकारी, श्रीमती नीरजा, अनुसंधान सहायक एवं श्री अब्दुल मोहीब, सहायक



निरीक्षण बैठक का दृश्य (बाएं से): श्री सुशील कुमार, प्रभारी सहायक निदेशक (रा.भा), डा.बी.एन.एस. मूर्ति, अध्यक्ष, नाविबो एवं बागवानी आयुक्त, भारत सरकार, श्रीमती बीना एस, सहायक निदेशक (रा.भा) और श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी



डा. प्रसन्नकुमार पाटसाणी, संसद सदस्य (लोकसभा) बोर्ड के अधिकारियों के साथ नाविबो स्टाल में विश्वमुक्ति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण करते हुए

अनुसंधान सहायक श्रीमती नीरजा और सहायक श्री अब्दुल मोहीब भी बैठक में उपस्थित थे। समिति के

सदस्यों ने बोर्ड द्वारा लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का भी दौरा किया।

नाविबो ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह का अनुपालन किया

जिंदगी के सभी क्षेत्रों से भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के संबंध में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए नारियल विकास बोर्ड ने 30 अक्टूबर से 4 नवंबर 2017 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का

को संबोधित किया। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सरकारी कर्तव्यों में पारदर्शी एवं उत्तरदायी होने के लिए आह्वान किया जो भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए परम आवश्यक है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन समारोह



श्री आर. ज्ञानदेवन, उप निदेशक (विकास) शपथ दिलाते हुए



बोर्ड के पदाधिकारी शपथ लेते हुए

अनुपालन किया। सप्ताह का विषय रहा - मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत। सतर्कता जागरूकता सप्ताह बोर्ड के सभी सदस्यों द्वारा 30 अक्टूबर 2017 को एकता प्रतिज्ञा से शुरू हुआ। बोर्ड के सतर्कता अधिकारी श्री आर.ज्ञानदेवन ने सतर्कता एवं सतर्कता जागरूकता सप्ताह का अनुपालन करने की प्रासंगिकता एवं अहमियत पर बात की। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के भाग स्वरूप श्री एम.डी बालसुब्रमण्यम, सतर्कता अधिकारी, कोचीन शिपयार्ड ने बोर्ड के कर्मचारियों

3 नवंबर 2017 को संपन्न हुआ। श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो, डा.ए.के.नन्दी, सचिव और श्री आर.ज्ञानदेवन, उप निदेशक एवं सतर्कता अधिकारी ने इस अवसर पर बात की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अनुपालन का लक्ष्य अधिकांश जनता को भ्रष्टाचार संबंधी व्यवहार के बारे में और इसके बारे में रिपोर्ट कैसे करें के बारे में शिक्षित करना है। यह भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोगों का जन-आंदोलन है।

किसान मेला 2017

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने 3 से 5 दिसंबर 2017 को राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पुसा, समस्तिपुर में संपन्न किसान मेला 2017 में भाग लिया। श्री राधा मोहन सिंह, माननीय कृषि मंत्री, भारत सरकार ने

कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री रामचंद्र पासवान, माननीय सांसद, समस्तिपुर, डा.ए.के.सिंह, उप महानिदेशक, भाकृअप, डा.अंजनी कुमार, निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग और अनुसंधान संस्थान, पटना और डा.रमेश चंद्र श्रीवास्तव,



माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

कुलपति, डा.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इस अवसर पर उपस्थित थे।

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने स्टाल में नारियल आधारित उत्पाद, हस्तशिल्प वस्तुएं तथा सूचनापरक पोस्टर प्रदर्शित किए। बोर्ड के अधिकारियों ने किसानों की नारियल खेती और प्रसंस्करण संबंधी समस्याओं का समाधान किया। प्रदर्शनी में लगभग 15000 किसानों ने भाग लिया।

नारियल पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली, ओडिशा ने 1 दिसंबर 2017 को बालासोर में नारियल खेती प्रौद्योगिकी और नारियल उत्पादक समिति के गठन पर जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। श्री सरवेश्वर बगुराय, उप निदेशक, बागवानी, बालासोर ने स्वागत भाषण दिया। श्री हरीश जेना, ब्लॉक विकास अधिकारी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, श्रीमती नीतु थोमस, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, पित्तापल्ली और डा.सुनिल कुमार महापात्र, वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, बालासोर इस अवसर पर उपस्थित थे।

दूसरी तकनीकी सत्र में डा.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नाविबो, पित्तापल्ली ने नाविबो योजनाओं और एकीकृत कीट एवं पोषण प्रबंधन तरीकों पर भाषण दिया। उन्होंने नयी नारियल उत्पादक समितियों के गठन की आवश्यकता



मंच का दृश्य

तकनीकी सत्र में डा.एस.के.महापात्र ने भोगराय और बलियापाल क्षेत्रों में नारियल खेती की समस्याओं एवं संभावनाओं पर बात की। उन्होंने नारियल की फसल, नारियल में रोपण पद्धति, मृदा और उर्वरक पर विशेष जोर दिया।

पर बात की क्योंकि बोर्ड के अधिकांश कार्यक्रम किसान उत्पादक संगठन सदस्यों के हित के लिए कार्यान्वित किए जा रहे हैं। श्रीमती नीतु थोमस, तकनीकी अधिकारी ने नाविबो योजना तथा नारियल के मूल्यवर्धन पर बात की।

बातचीत सत्र के दौरान किसानों ने नारियल खेती, नाविबो योजना, मूल्य वर्धन, नारियल उत्पादक समितियों के गठन आदि के बारे में प्रश्न उठाए। नाविबो अधिकारियों ने किसानों की समस्याओं का समाधान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को नारियल की वैज्ञानिक खेती संबंधी पहलुएं,

नारियल के मूल्य वर्धन, नारियल विकास बोर्ड की योजनाएं आदि पर जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायक बन गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 100 किसानों ने भाग लिया। श्री संतोष महापात्र, क्षेत्र अधिकारी, नाविबो के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

एग्रो विशन

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ठाणे ने एग्रो विशन फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा रेशीमबाग, नागपुर, महाराष्ट्र में 10 से 13 नवंबर 2017 को आयोजित एग्रोविशन प्रदर्शनी 2017 के 9वां संस्करण में भाग लिया।

एग्रोविशन प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत के माननीय उप राष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू ने श्री देवेंद्र फडणवीस, माननीय मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र सरकार, श्री नितिन गडकरी, माननीय केंद्रीय परिवहन मंत्री, भारत सरकार, श्री श्रीपद नाइक, माननीय आयुष राज्य मंत्री, महाराष्ट्र सरकार,



बोर्ड के स्टाल का दृश्य

श्री सुधीर मुनगंटीवार, माननीय वित्त मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, श्री पांडुरंग फुंडकर, माननीय कृषि मंत्री, महाराष्ट्र सरकार और श्री गिरीश महाजन, माननीय चिकित्सीय शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र सरकार और केंद्र सरकार व राज्य सरकार के अधिकारियों की उपस्थिति में किया। 170 से अधिक मशीनों एवं उपकरणों के राष्ट्रीय एवं स्थानीय प्रदर्शकों, कृषि आदान सामग्री आपूर्तिकर्ताओं और खाद्य उद्योग में अल्प संसाधित उत्पादों के निर्माताओं ने अपने उत्पादों, खाद्य पेय सामग्री आदि प्रदर्शित किए।

नारियल विकास बोर्ड ने विदर्भा क्षेत्र से नारियल के वितरकों, व्यवसायियों और फुटकर विक्रेताओं को पहचानने के उद्देश्य से इस प्रदर्शनी में भाग लिया। विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटेड नारियल पाउडर, विर्जिन प्लस कैपस्यूल, नारियल क्रीम, नारियल चिप्स के निर्माता केराटेक (प्रा.) लि., केरल के प्रतिनिधि और डाब पानी निर्माता सर्वश्री मोजोको प्रा. लि., पोल्लाच्ची के प्रतिनिधि ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पादों को प्रदर्शित किया। बोर्ड के स्टाल में नारियल के विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल और बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए गए।

कृषिथॉन

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ठाणे ने 23 से 27 नवंबर 2017 तक महाराष्ट्र के नासिक में संपन्न कृषिथॉन प्रदर्शनी 2017 के 12 वें संस्करण में भाग लिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री राधाकृष्ण विखे पाटील, भूतपूर्व कृषि मंत्री एवं विपक्षी नेता, महाराष्ट्र सरकार ने श्री हरिश्चंद्र चौहान, माननीय सांसद, लोकसभा, डिंडोरी, नासिक

जिला, श्री संजय न्याहरकर, अध्यक्ष, मानव सेवा फाउंडेशन, नासिक और अन्य अतिथियों की समुपस्थिति में किया। प्रदर्शनी में मशीनों, उपकरणों, कृषि आदान सामग्री आपूर्तिकर्ताओं और खाद्य उद्योग में अल्प संसाधित उत्पादों के निर्माताओं में से सबसे अच्छी कंपनियों ने अपने उत्पादों, खाद्य पेय सामग्री आदि को प्रदर्शित किया।



नाविबो स्टाल में दर्शकगण

मराठवाडा क्षेत्र के नारियल उत्पाद वितरकों, व्यवसायियों और फुटकर विक्रेताओं ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पादों एवं सेवाओं को प्रदर्शित किया। विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटेड नारियल पाउडर, विर्जिन प्लस कैपस्यूल, नारियल क्रीम आदि के निर्माता केराटेक (प्रा.)लि.,

केरल के प्रतिनिधि और डाब पानी निर्माता सर्वश्री मोजोको प्रा.लि., पोल्लाच्ची के प्रतिनिधियों ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पादों की बिक्री की।

नारियल विकास बोर्ड ने अपने स्टाल में नारियल के विभिन्न मूल्य

वर्धित उत्पादों जैसे पैकेटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल और सूचनात्मक चार्ट तथा नारियल के स्वास्थ्य लाभों पर पोस्टर प्रदर्शित किए। स्टाल में बोर्ड के प्रकाशनों, पत्रिकाओं, लीफलेट तथा ब्रोशर वितरित भी किए गए।

नारियल आधारित सुविधाजनक खाद्य पदार्थों पर प्रशिक्षण

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ओडिशा ने ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सहयोग से भुवनेश्वर में 4 से 7 दिसंबर 2017 तक नारियल आधारित सुविधाजनक खाद्य पदार्थों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कोलज ऑफ कम्प्यूनिटी साइन्स, गृह विज्ञान विभाग, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ। प्रशिक्षणार्थियों को ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने स्वयं सहायता समूहों और कट्टक, पुरी, देनकनाल, खुर्दा एवं साम्बलपुर जिले के विविध नारियल उत्पादक समितियों से चयन किया।

डा.मानसी मोहन्ती, निदेशक, सीसीएस, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.रजत कुमार पाल, उप निदेशक ने भागीदारों का स्वागत

किया। डा.दीप्तिमयी जेना, एसोसिएट प्रोफेसर, सीसीएस, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया और इच्छुक महिला प्रशिक्षणार्थियों को देखकर अपनी खुशी प्रकट की। श्रीमती ऋतान्जली परीदा और श्रीमती पुष्पान्जली भोल, मुख्य प्रशिक्षकों ने परंपरागत तरीके में विर्जिन नारियल तेल की तैयारी और नारियल अचार की तैयारी तथा विभिन्न उत्पादों के लिए विभिन्न परिरक्षकों के उपयोग पर प्रशिक्षण दिया।



प्रशिक्षण सत्र का दृश्य

प्रशिक्षणार्थियों को नारियल जैम, नारियल चिप्स, नारियल कैन्डी और नारियल स्क्वैश तैयार करने में 05 दिसंबर 2017 को प्रशिक्षण दिया गया। डा.चित्रोत्पला देबदर्शिनी, एसिस्टेंट प्रोफेसर, सीसीएस, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने प्रसंस्कृत नारियल खाद्य उत्पादों के पैकिंग एवं विपणन की अहमियत पर और विविध नारियल उत्पादों के प्रसंस्करण में प्रयुक्त मशीनरियों, उसके व्यय तथा उपलब्धता पर बात की।

प्रशिक्षणार्थियों को नारियल कुकीस, नारियल चीरा, नारियल चटनी पाउडर और नारियल बर्फी तैयार करने में 06 दिसंबर 2017 को प्रशिक्षण दिया गया। डा.दीप्तिमयी जेना, एसोसिएट प्रोफेसर, सीसीएस, ओडिशा

कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने प्रसंस्कृत आहार के उत्पादन में खाद्य सुरक्षा की अहमियत पर बात की और खाद्य सुरक्षा तथा प्रसंस्कृत आहार की स्वच्छता संबंधी पहलुओं एवं एफएसएसआई पर व्याख्यान दिया।

उत्पादों को पैक करने, लेबल लगाने तथा प्रदर्शित करने में 07 दिसंबर 2017 को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के बाद नाविबो द्वारा प्रशिक्षणोत्तर मूल्यांकन चलाया गया। डा.मानसी मोहन्ती, निदेशक, सीसीएस, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर की उपस्थिति में समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सभी भागीदार प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

बोर्ड की 131वीं बैठक संपन्न



131वीं बोर्ड बैठक का दृश्य



डा.बी.एन. श्रीनिवास मूर्ति, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार तथा अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड की अध्यक्षता में नारियल विकास बोर्ड की 131वीं बैठक 6 अक्टूबर 2017 को दिल्ली में संपन्न हुई। श्री पी.सी.मोहनन मास्टर, उपाध्यक्ष और बोर्ड के सदस्य डा.पी.चौडप्पा, निदेशक, सीपीसीआरआई, श्री पी.आर.मुरलीधरन, केरल, श्री

एस.मोहनराज, तमिलनाडु, श्री एम.आर.शंकरनारायण रेड्डी, कर्नाटक और श्री संजीव कुमार सिंह, बिहार ने बैठक में भाग लिया। श्री एस.जनार्दनन, अपर निदेशक, केरल सरकार, डा.जी.एस.पाण्डेय, उप निदेशक (कृषि इंजीनियरी), अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और नारियल विकास बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और आरोग्या एक्सपो 2017

नारियल विकास बोर्ड ने सेंट थोमस कोलेज, पाला, कोट्टयम, केरल द्वारा 18 व 19 सितंबर 2017 को आयोजित परंपरागत एवं वैकल्पिक चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और आरोग्या एक्सपो 2017 को प्रायोजित किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डा.पी.आर.कृष्णकुमार, कुलाधिपति, अविनाशिलिंगम विश्वविद्यालय तथा आर्य वैद्य फार्मसी (एवीपी) अनुसंधान फाउंडेशन, कोयंबतूर, तमिलनाडु के संस्थापक ने किया। डा.कृष्णकुमार ने अपने उद्घाटन भाषण में वैकल्पिक

चिकित्सा उपयोग एवं प्राकृतिक उत्पादों के बीच के संबंध को उजागर किया। आगे उन्होंने विभिन्न रोगों और जनता की रोजमर्रा जिन्दगी में विर्जिन नारियल तेल की गुणकारी भूमिका के बारे में भी विवरण दिया।

डा. मुहम्मद मजीद, संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक, सामी लैब लिमिटेड, बेंगलूरु ने न्यूट्रास्यूटिकलों की गुंजाइश पर बात की। उन्होंने न्यूट्रास्यूटिकल दवाओं के क्षेत्र में अपनी नई खोजों द्वारा सभी भागीदारों को प्रेरणा दी। विर्जिन नारियल तेल उनकी कंपनी का एक प्रमुख उत्पाद है। इंसान के लिए परिचित संतृप्त वसा का सबसे धनी स्रोत नारियल तेल है जिसमें निहित 90 प्रतिशत वसा अम्ल संतृप्त होती है। तथापि, नए आंकड़ों के अनुसार संतृप्त वसाएं ज्यादातर दोषरहित होती हैं। इसके साथ ही, नारियल तेल में निहित संतृप्त वसाएं चीस या स्टीक में पाई जानेवाली संतृप्त वसाओं के समान नहीं हैं। इसके बदले इसमें मध्यमश्रृंखला ट्राइग्लिसराइड (एमसीटी) निहित हैं जो मध्यम लंबाईवाला वसा अम्ल हैं। आहार में निहित अधिकतर वसा अम्ल दीर्घश्रृंखला वसा अम्ल है लेकिन नारियल में निहित एमसीटी अलग ढंग से चयापचय करती हैं। अतः वे सीधे पाचन तंत्र से जिगर तक जाती हैं जहाँ इन्हें ऊर्जा के त्वरित स्रोत के रूप में उपयोग किया जाता है या तथाकथित कीटोन्स के रूप में बदल दिया जाता है, जिसके विभिन्न चिकित्सकीय प्रभाव होते हैं। डा. मजीद के अनुसार अलज़ाइमर और मिरगी रोग की चिकित्सा में प्रभावी, हृदयधमनियों को पोषणदायक, मूत्रनालियों के संक्रमण को रोकने में सक्षम, गुर्दा एवं जिगर को स्वस्थ बनाए रखने, उत्तेजक प्रतिक्रियाओं का समर्थन करने, संधियों को स्वस्थ रखने, प्रतिरक्षी तंत्र सक्षम बनाने, बौद्धिक स्वास्थ्य बनाए रखने और दिमाग की



डा.पी.आर. कृष्णकुमार, कुलाधिपति, अविनाशलिङ्गम विश्वविद्यालय तथा आर्य वैद्य फार्मसी अनुसंधान फाउंडेशन, कोयंबतूर परंपरागत दीप प्रज्वलित करके समारोह का उद्घाटन करते हुए

क्रियाएं अनुकूल बनाने, ऊर्जा और सहनशक्ति बढ़ाने, पाचनक्रियाएं बेहतर बनाने, त्वचा की अवस्थाओं (जलन, एक्सिमा, रूसी, डर्मेटिटिस एवं सोरायसिस) की इलाज में बेहतर, मसूडों की बीमारियाँ और दाँतों के सड़न रोकने में सहायक, खून में शर्करा की मात्रा स्वस्थ रखने तथा वजन प्रबंधन में सहायता करने जैसे नारियल तेल के कई चमत्कारी एवं अनगिनत स्वास्थ्य लाभ होते हैं।

भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु से डा. एस संध्या, वैज्ञानिक और सेंट थोमस कालेज, पाला के जीव रसायन विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. रतीष ने नीरा तथा इसके स्वास्थ्य लाभों पर व्याख्यान दिया। दुनिया में रोग एवं मृत्यु दर का मुख्य कारण शराब का दुरुपयोग है। रिपोर्ट किया गया



सभा का दृश्य

है कि दीर्घकालिक शराब का उपयोग जिगर के ऊतकों में ओक्सीकारक दबाव तथा सूजन का कारण बनता है। प्रतिऑक्सीकारी, सूजन विरोधी, गुर्दा को सुरक्षित रखने, पीड़ाहर, अल्सर रोधी जैसे नीरा के विभिन्न लाभकारी गुण होते हैं। तथापि दीर्घकालिक शराब से प्रेरित जिगर की विषाक्तता में इसकी अहमियत पर ठीक जानकारी की कमी है। शराब प्रेरित जिगर सूजन के विरुद्ध नीरा की जिगर सुरक्षात्मक गतिविधि पर अनुसंधान की गई है। श्री श्रीकुमार पोदुवाल, प्रसंस्करण इंजिनियर,

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल तथा इसके उत्पादों के स्वास्थ्य एवं पौष्टिक पहलुओं पर बात की। सम्मेलन में देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों से विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं एवं प्राध्यापकों ने भाग लिया और आरोग्य एक्सपो का दौरा किया। करीब 2000 लोगों ने नाविबो के स्टाल का दौरा किया और बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों के बारे में पूछ-ताछ की। उन्होंने नीरा एवं नीरा उत्पादों के स्वाद का मज़ा भी लिया।

तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी, कण्णूर को राष्ट्रीय उद्यमिता पुरस्कार 2017 से सम्मानित



तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष श्री सण्णी जोर्ज और सीईओ श्री षैबी सक्करिया माननीय केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली से राष्ट्रीय उद्यमिता पुरस्कार ग्रहण करते हुए

तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, कण्णूर को कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित बेयरफुट उद्यमिता श्रेणी के तहत राष्ट्रीय उद्यमिता पुरस्कार 2017 प्राप्त हुआ। श्री सण्णी जोर्ज, अध्यक्ष और श्री षैबी सक्करिया, सीईओ, तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड ने श्री अरुण जेटली, माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार से 9 नवंबर 2017 को एनडीएमसी कन्वेंशनल सेंटर, संसद मार्ग, नई दिल्ली में पुरस्कार ग्रहण किया। इस पुरस्कार में 5 लाख रुपए, ट्रॉफी एवं प्रमाणपत्र शामिल हैं।

तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड एक ऐसा उत्पादक कंपनी है जो नारियल विकास बोर्ड, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रवर्तित है। यह भारतीय कंपनी अधिनियम के अधीन 3 जून 2013 को पंजीकृत हुआ। तेजस्विनी भारत सरकार की केंद्रीय योजनाओं और केरल सरकार की राज्य योजनाओं को एग्रि बिज़नेस गतिविधियों में लघु और सीमांत किसानों के कृषि विकास के लिए कार्यान्वित कर रही है। कंपनी किसानों से नारियल तथा कृषि उत्पादों को खरीदती है और केरल के कण्णूर के

पेरिंगोम में स्थित अपने संयंत्र में इसका प्रसंस्करण करती है। नारियल विकास बोर्ड के कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के भाग स्वरूप कंपनी ने अपने प्रशिक्षण केंद्रों में एफओसीटी के 24 बैचों और नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम के 5 बैचों का आयोजन किया है।

तेजस्विनी सामूहिक शक्ति एवं बड़े पैमाने की किफायत के साथ किसानों को सक्षम बनाने के लिए किसान उत्पादक संगठनों के दायरे में लघु और सीमांत किसानों को एकत्रित करने में अग्रणी है। फिलहाल तेजस्विनी के साथ 272 किसान उत्पादक संगठनों तथा 15 किसान उत्पादक फेडरेशनों के ज़रिए 30000 से अधिक लघु और सीमांत किसान सदस्य संबद्ध है। यह लघु और सीमांत किसानों को कृषि आदान सामग्रियों की बढ़ती प्राप्यता एवं सस्ती उपलब्धता के लिए एक मंच प्रदान करती है और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में निर्यात एवं स्रोत संपर्क स्थापित करती है। इस पहल ने स्थायी

व्यवसाय मॉडल तथा संवर्धित आय के खास उद्देश्य के साथ केरल के कण्णूर और कासरगोड़ जिलों में किसानों के एकत्रीकरण को तेज़ बना दिया है। हाल ही में कंपनी ने रेस्पॉन्सिबिल टूरिज़म के क्षेत्र में प्रवेश किया है जो पर्यटन में अवसरों का उपयोग करने हेतु उत्पादों, सेवाओं तथा स्थानीय समूह के एकत्रीकरण के लिए केरल सरकार के पर्यटन विभाग की एक पहल है।

राष्ट्रीय उद्यमिता पुरस्कार देश भर में उद्यमिता की संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय द्वारा स्थापित हुआ है। इन पुरस्कारों के माध्यम से अपने उत्कृष्ट प्रयासों के लिए उद्यमियों और उद्यमिता पारिस्थितिकीय निर्माणकर्ताओं को पहचानना तथा सम्मान करना ही इसका लक्ष्य है। पुरस्कार दूसरों को अनुकरण तथा सुधार करने हेतु उत्कृष्टता के मॉडल उजागर करने का प्रयास करता है।

कैबिनेट ने 2018 मौसम के लिए खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव बढ़ाने हेतु अनुमोदन दिया

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने औसत अच्छी किस्म (एफ ए क्यू) पेषण खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव वर्ष 2017 के प्रति किंवटल 6500 रुपए से 2018 मौसम के लिए प्रति किंवटल 7500 रुपए तक बढ़ाने के लिए अनुमोदन दिया है। एफ ए क्यू गोल खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव 2017 के प्रति किंवटल 6785 रुपए से 2018 मौसम के लिए प्रति किंवटल 7750 रुपए तक बढ़ाया गया है।

खोपरे के न्यूनतम समर्थन भाव से किसानों को उपयुक्त न्यूनतम भाव सुनिश्चित करने एवं नारियल खेती में निवेश बढ़ाकर देश में उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने की प्रतीक्षा है।

कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर अनुमोदन दिया गया है जो न्यूनतम समर्थन भाव की सिफारिश करते समय खाद्य तेलों की उत्पादन लागत, देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाव, खोपरा एवं नारियल तेल की समग्र माँग एवं आपूर्ति, नारियल तेल बनाने के लिए खोपरे के प्रसंस्करण की लागत तथा उपभोक्ताओं पर सिफारिश की गई न्यूनतम समर्थन भाव का असर आदि ध्यान में रखता है।

नारियल उत्पादक राज्यों में न्यूनतम समर्थन भाव पर मूल्य समर्थन संबंधी कार्य करने के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसियों के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नाफेड) तथा भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ (एन सी सी एफ) कार्यरत रहेंगे।

बागवानी पर अंतर्राष्ट्रीय सिंपोसियम: प्राथमिकताएं और उभरती प्रवृत्तियाँ



डा.बी.एन.एस.मूर्ति, बागवानी आयुक्त एवं अध्यक्ष, नाविबो बोर्ड के स्टाल में

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु ने बागवानी पर अंतर्राष्ट्रीय सिंपोसियम: 'प्राथमिकताएँ और उभरती प्रवृत्तियाँ' के सिलसिले में जे.एम.टाटा सभागार, मल्लेश्वरम, बेंगलूरु में 5 से 8 सितंबर 2017 तक संपन्न प्रदर्शनी में भाग लिया। यह सिंपोसियम भा कृ अ प - भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु द्वारा आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री वाजुभाई रुदाभाई वाला, माननीय कर्नाटक राज्यपाल ने श्री अनंत कुमार, माननीय केंद्रीय संसदीय कार्य, रसायन और उर्वरक मंत्री की उपस्थिति में किया।

डा.बी.एन.एस.मूर्ति, बागवानी आयुक्त एवं अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड और डा.रत्तिनम, भूतपूर्व अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया। नारियल विकास बोर्ड ने मूल्य वर्धित उत्पादों, नारियल खोपड़ा तथा लकड़ी पर आधारित हस्तशिल्पों, नारियल उत्पादों व तकनीकियों



विषयक प्रकाशनों को प्रदर्शित किया। बोर्ड अधिकारियों द्वारा नारियल खेती, मूल्य वर्धित उत्पादों के प्रसंस्करण, कीट और रोग प्रबंधन, नीरा प्रसंस्करण तथा उत्पादन और नाविबो योजनाओं पर अनेक तकनीकी प्रश्नों का समाधान किया गया। सर्वश्री केराटेक (प्रा) लि. और श्री अशोक कुमार, हस्तशिल्प निर्माता ने नाविबो स्टाल में अपने उत्पादों का प्रदर्शन एवं बिक्री किया।

नारियल खेती और मूल्य वर्धन पर संगोष्ठी

नारियल खेती और मूल्य वर्धन पर संगोष्ठी सह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राग्ना भवन, अगरतला, त्रिपुरा में 11 अक्टूबर 2017 को संपन्न हुआ। श्री अघोर देबर्मा, माननीय कृषि मंत्री, त्रिपुरा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और श्री जितेंद्र चौधरी, माननीय सांसद (लोकसभा), त्रिपुरा पूर्व ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

श्री अघोर देबर्मा, माननीय कृषि मंत्री, त्रिपुरा ने अपने उद्घाटन भाषण में नारियल और उसके उपोत्पादों की अहमियत

पर बात की। उन्होंने कृषक समूहों से नारियल खेती के लिए अपनी भूमि का उपयोग करने का अनुरोध किया। उन्होंने बोर्ड से राज्य के कृषक समूहों को सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करने का अनुरोध भी किया। त्रिपुरा के सभी भागों में नारियल के तहत क्षेत्र एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों को अच्छी गुणवत्ता के नारियल पौधों को प्रदान किया जा सकता है। उन्होंने नाविबो को त्रिपुरा में



श्री अघोर देबर्मा, कृषि मंत्री, त्रिपुरा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी स्वागत भाषण देते हुए

अपनी गतिविधियों के विस्तार के लिए सारी मदद करने का भी वादा किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री जितेंद्र चौधरी, माननीय सांसद (लोक सभा), त्रिपुरा पूर्व ने कृषक समूह की आमदनी बढ़ाने के लिए नारियल खेती और उसके लाभ की अहमियत पर बात की। उन्होंने वैज्ञानिक तरीके से राज्य में नारियल खेती को बढ़ावा देने और नारियल के मूल्य वर्धन के लिए विविध प्रौद्योगिकियाँ अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि किसान प्रति इकाई क्षेत्र से अधिक आमदनी हासिल कर सके, जो समाज के कमजोर वर्ग की आजीविका में सुधार लाएँ। उन्होंने प्रतिभागी किसानों से अपनी खेती योग्य भूमि की सीमा तथा तालाब के किनारे नारियल लगाने की सलाह दी। उन्होंने बोर्ड को प्रबीउ फार्म, हिच्चाचेरा, त्रिपुरा के विकास के लिए सारी मदद एवं सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड ने सभा का स्वागत किया। उन्होंने त्रिपुरा में लघु और सीमांत किसानों की आजीविका सुधारने के लिए नारियल खेती और उसी प्रकार मूल्य वर्धन की

अहमियत पर बात की। उन्होंने विश्व में नारियल का परिदृश्य तथा भारत एवं त्रिपुरा में नारियल की स्थिति के बारे में संक्षेप में कहा। उन्होंने अपने भाषण में नारियल के मूल्य वर्धन पर जोर दिया। डा.बसंत कंठपाल, संयुक्त निदेशक, भा कृ अ प, त्रिपुरा ने नारियल और उसके मूल्य वर्धन की उपयोगिता पर बात की। डा.ए.के.नंदी, सचिव, नाविबो ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उद्घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र संपन्न हुआ। श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, क्षेत्रीय कार्यलय, गुवाहटी, श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो, राज्य केंद्र, कोलकाता और डा.बिश्वजीत दास, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी, भा कृ अ प, त्रिपुरा ने नारियल खेती, कीट एवं रोग, बोर्ड की योजनाएँ और त्रिपुरा में नारियल खेती की संभावनाओं पर बात की। समारोह में त्रिपुरा के विविध भागों से 300 से अधिक किसान और अधिकारी उपस्थित थे। कृषि और बागवानी विभाग से अधिकारियों और त्रिपुरा के विविध भागों से किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।



संगोष्ठी सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी

आहार

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ठाणे ने 11 से 14 अक्टूबर 2017 तक सिड्को प्रदर्शनी केंद्र, वाशी, नवी मुंबई, महाराष्ट्र में संपन्न आहार इंटरनेशनल फुड एण्ड होस्पिटैलिटी फेयर-2017 में भाग लिया। मेले का उद्घाटन श्री विजय वाघमारे, प्रबंध निदेशक, महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडल, मुंबई और आईटीपीओ के वरिष्ठ अधिकारियों, विभिन्न राष्ट्रीय कंपनियों और बिजनस समूहों के अधिकारियों ने नाविबो के स्टाल का दौरा किया। भारत

खेती एवं उद्योग से संबंधित चार्ट एवं अन्य पोस्टर प्रदर्शित किए। श्री विजय वाघमारे, प्रबंध निदेशक, महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडल, मुंबई और आईटीपीओ के वरिष्ठ अधिकारियों, विभिन्न राष्ट्रीय कंपनियों और बिजनस समूहों के अधिकारियों ने नाविबो के स्टाल का दौरा किया। भारत

नारियल विकास बोर्ड ने प्रदर्शनी के साथ एक बी2सी मीट कार्यक्रम आयोजित किया। आहार में भाग लेने एवं बी2सी मीट आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य भारत में नारियल उत्पादों के वितरकों, उद्यमियों तथा खुदरे विक्रेताओं को नए बाजारों की खोज आसान बनाना है। श्री के.एस सेबास्टियन, सहायक निदेशक(विपणन), नाविबो ने भारत और विदेश में नारियल उत्पादों के विपणन में रुचि रखनेवाले बिजनस समूहों के साथ नारियल निर्माता कंपनियों को बातचीत करने के लिए अवसर प्रदान करके बी2सी मीट सुगम बना दिया। कार्यक्रम में नारियल उत्पादक कंपनियों सहित लगभग 10 नारियल उत्पादक निर्माताओं ने भाग लिया।



नारियल विकास बोर्ड ने प्रदर्शनी में विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों जैसे पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विजिन नारियल तेल तथा नारियल

नाविबो स्टाल में दर्शकगण

सरकार का उद्यम, भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन द्वारा प्रदर्शनी आयोजित हुई।

कृषक नर्सरी समाधान- गुणवत्ता पूर्ण रोपण सामग्रियों के लिए उपाय

बागवानी प्रौद्योगिकी संस्था, ग्रेटर नोयडा, उत्तर प्रदेश द्वारा 13 से 14 अक्टूबर 2017 को बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय कैम्पस, किसान प्रशिक्षण केंद्र, खानापाड़ा, गुवाहटी में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी: 'कृषक नर्सरी समाधान' में नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय,

गुवाहटी ने भाग लिया। श्री के.के.मित्तल भाप्रसे, कृषि उत्पादन आयुक्त, कृषि विभाग, असम सरकार, श्री प्रबीन हज़ारिका, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय, असम सरकार, श्री एच.सी.भट्टाचार्य, निदेशक, विस्तार शिक्षा, असम कृषि विश्वविद्यालय, श्री जयंता समल, उप महाप्रबंधक,

नबार्ड, असम, श्री एस.सी.पन्वार, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, असम, डा.ए.के. त्रिपाठी, निदेशक, भा कृ अ प, श्री संजय सुदन, सह-अध्यक्ष, आईएचटी और डा.उमेष कोहली, निदेशक, आईएचटी ने कार्यक्रम में भाग लिया और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में जैव उद्यमिता विकसित करके किसानों की आमदनी दुगुनी करने के लिए किसानों के कौशल बढ़ाने की संभावनाओं पर बात की।



सभा का दृश्य

नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकी और मूल्य वर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला संपन्न शिल्पग्राम, गुवाहटी

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने शिल्पग्राम, पंचबारी, गुवाहटी में 11 दिसंबर 2017 को

कार्यालय, गुवाहटी ने अतिथियों एवं किसानों का स्वागत किया। स्वागत भाषण देते वक्त उन्होंने कहा कि



श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो स्वागत भाषण देते हुए

नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकी और मूल्य वर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। श्री के.के.मित्तल, भाप्रसे, अपर मुख्य सचिव एवं कृषि उत्पादन आयुक्त, असम सरकार मुख्यातिथि रहे। श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, राज्य केंद्र, कोलकाता, डा.अल्पना दास, प्रभारी वैज्ञानिक, भाकृअप, काहिकुची, डा.जे.सी.नाथ, प्रधान सचिव, एचआरएस, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची और श्री पुरन चेत्री, अध्यक्ष सह प्रबंधन निदेशक, आबाद एग्रो फार्मेर्स कंपनी लिमिटेड कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 300 किसानों ने भाग लिया। श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय

पूर्वोत्तर क्षेत्रों में पूजा अनुष्ठानों के लिए तक भी नारियल अपर्याप्त है। श्री के.के.मित्तल, भाप्रसे, अपर मुख्य सचिव एवं कृषि उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.अल्पना दास, प्रभारी वैज्ञानिक, भाकृअप,

काहिकुची ने असम में नारियल की अहमियत पर बात की।

इस अवसर पर भाषण देते हुए श्री के.के.मित्तल, भाप्रसे, अपर मुख्य सचिव एवं कृषि उत्पादन आयुक्त, असम सरकार ने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य राज्य में नारियल खेती और उद्योग को सुधारना है। उन्होंने किसानों को सूचित किया कि हाल ही के वर्षों में बाजार की स्थिति बदल गई है और नारियल अब मानव स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए लाभकारी माना जाता है। उन्होंने राज्य एवं किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए नारियल रोपण पर सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया।

श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, राज्य केंद्र, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र समाप्त हुआ।

तकनीकी सत्र में डा.जे.सी.नाथ, प्रधान सचिव, एचआरएस, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची ने वैज्ञानिक नारियल रोपण पर बात की। श्री पुरन चेत्री, अध्यक्ष सह

प्रबंधन निदेशक, आबाद एग्रो फार्मर्स कंपनी लिमिटेड ने असम में किसान उत्पादक संगठन का स्तर व संभावनाओं के बारे में कहा। श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, राज्य केंद्र, कोलकाता ने नाविबो योजनाओं और नारियल के मूल्य वर्धन पर भाषण दिया।

दीमापुर, नागालैंड

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने बागवानी विभाग, नागालैंड के सहयोग से बागवानी विभाग, ग्रीन पार्क, दीमापुर, नागालैंड में 21 दिसंबर 2017 को नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकी और मूल्य वर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। श्री अलन गोन्मेई, भाप्रसे, आयुक्त एवं सचिव, नागालैंड सरकार कार्यक्रम के मुख्यातिथि रहे। श्री एलिनथुंग लोथा, बागवानी निदेशक, नागालैंड सरकार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। नागालैंड के छह जिलों से 100 से अधिक किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

श्रीमती तेजसीनो, बयो-टेकनलोजिस्ट, बागवानी विभाग, ग्रीन पार्क, दीमापुर, नागालैंड ने कार्यक्रम के अतिथियों तथा भागीदारों का स्वागत किया।

मुख्य भाषण में श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने नाविबो योजना और मूल्यवर्धन पर बात की। उन्होंने नारियल उपोत्पादों की अहमियत पर भी जोर दिया जिनकी क्षेत्रीय व अंतर्राष्ट्रीय तौर पर खपत होती है, जैसे पानी के लिए ताज़ा हरा नारियल और खोपरा, तेल, क्रीम आदि के लिए पका फल। उन्होंने उचित एवं समयबद्ध उपायों को अपनाकर नारियल का उत्पादन तथा उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को सूचित किया कि मूल्य वर्धन आर्थिक रूप से उत्पादों का मूल्य बढ़ाता है। नारियल के विभिन्न भागों का उपयोग करके 300 से अधिक मूल्य वर्धित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। नारियल तेल की खपत आहार के रूप में होता है जबकि इसकी अधिकांश हिस्सा



कार्यशाला में श्री अलन गोन्मेई भा प्र से, आयुक्त एवं सचिव, नागालैंड सरकार, श्री एलिनथुंगा लोथा, बागवानी निदेशक, नागालैंड सरकार एवं श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नाविबो

ओलियो-केमिकल उद्योग में सौंदर्य-प्रसाधन, डिटेजेंट, साबुन और अन्य उत्पादों के निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, रेशा, कोयला और विभिन्न उत्पादों के उत्पादन के लिए खोपड़ी और छिलके का उपयोग किया जाता है।

इस अवसर पर भाषण देते हुए श्री अलन गोन्मेई ने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य राज्य में नारियल खेती और उद्योग को सुधारना है। उन्होंने किसानों को सूचित किया कि हाल के वर्षों में बाज़ार की स्थिति बदल गई और नारियल अब मानव स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए लाभकारी माना जाता है। श्री गोन्मेई के अनुसार इस परिवर्तन से क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में कच्चा माल तथा मूल्य वर्धित उत्पादों की माँग में अधिक वृद्धि हुई है।

श्री इयोंगोल अंगामी, उप निदेशक, बागवानी विभाग, नागालैंड सरकार, कोहिमा, नागालैंड के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ। तकनीकी सत्र में श्री लुंहार ओबेद, निदेशक ने नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर बात की।

बाज़ार समीक्षा

सितंबर 2017

नारियल तेल

सितंबर 2017 के दौरान नारियल तेल का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 15700 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति किंवटल 15500 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 16800 रुपए पर खुला। तीनों बाज़ारों में पहले तीन हफ्तों के दौरान भाव में बढ़ाव का रुख रहा। चौथे हफ्ते के दौरान भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ और तत्पश्चात् भाव में बढ़ोत्तरी हुई।

कोची, और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव क्रमशः प्रति किंवटल 1200 रुपए तथा 1400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16900 रुपए पर और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 1700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 18500 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 14000 रुपए पर खुला और भाव में केरल के बाज़ारों के समान रुख रहा तथा प्रति किंवटल 1333 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव नारियल तेल के भाव के अनुरूप रहा। महीने के दौरान कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति किंवटल 10800

रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 10450 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 10900 रुपए पर खुला। पहले के तीन हफ्तों के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में बढ़ोत्तरी दर्शित हुई। चौथे हफ्ते के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव घट गया और तत्पश्चात् बढ़ाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में भाव क्रमशः प्रति किंवटल 900 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 11700 रुपए तथा 11350 रुपए पर बंद हुआ जबकि कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 1200 रुपए के शुद्ध लाभ सहित 12100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव में बढ़ाव का रुख रहा। भाव 9700 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 900 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 10600 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिककोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 12800 रुपए पर खुला और भाव में पहले के तीन हफ्तों के दौरान बढ़ाव का रुख रहा। चौथे हफ्ते के दौरान भाव घट गया और तत्पश्चात् बढ़ाव का रुख रहा। भाव प्रति किंवटल 1600 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14400 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्टुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 12500 रुपए पर खुलकर महीने के दौरान मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13000 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हजार फल 8500 रुपए पर खुला। महीने के पहले पक्ष के दौरान भाव बढ़ता रहा और तत्पश्चात् घटाव का रुख दर्शाकर प्रति हजार फल 1800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 10300 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का भाव प्रति हजार फल 16000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 2000 रुपए के लाभ के साथ 18000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 14000 रुपए पर खुलकर प्रति हजार फल 3000 रुपए के लाभ के साथ 17000 रुपए पर बंद हुआ। बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में भाव प्रति हजार फल 13750 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 250 रुपए के घाटे के साथ 13500 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर एपीएमसी

बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल ग्रेड - 1 गुणवत्ता का भाव प्रति हज़ार फल 21500 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 22500 रुपए पर बंद हुआ।

डाब

कर्नाटक के महूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का भाव प्रति हज़ार फल 10000 रुपए पर खुलकर पूरे महीने उसी भाव पर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

फिलीपीन्स और इंडोनेशिया में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव में महीने के दूसरे पक्ष के दौरान घटाव का रुख रहा जबकि भारत में अनियमित रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल के भाव सारणी में दर्शित हैं।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में दर्शित नारियल के भाव सारणी में दर्शित हैं।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स में खोपरे के देशीय भाव में घटाव का रुख रहा जबकि इंडोनेशिया और श्रीलंका में खोपरे के भाव महीने के दौरान समान रहा। भारत में खोपरे के भाव में मिश्रित रुख रहा। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

ड्रेसिकेटड नारियल

प्रमुख ड्रेसिकेटड नारियल निर्यातक देशों में ड्रेसिकेटड नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

अक्टूबर 2017

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अक्टूबर 2017 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 16800 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 18500 रुपए पर खुला। तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में थोड़ा सा मंदी रुख रहा लेकिन महीने के अंत में तीनों बाज़ारों में भाव में अभूतपूर्व वृद्धि दर्शित हुई।

कोची, आलप्पुषा और कोषिकोट बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल क्रमशः 1100 रुपए, 900 रुपए तथा 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 17900 रुपए, 17700 रुपए तथा 19300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 15200 रुपए पर खुला और भाव में केरल के बाज़ारों के समान रुख रहा तथा प्रति क्विंटल 800 रुपए के शुद्ध

लाभ के साथ 15200 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव नारियल तेल के भाव के अनुरूप रहा। महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 11600 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 11300 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 12100 रुपए पर खुला। महीने के पहले तीन हफ्तों के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में घटाव दर्शित हुआ। चौथे हफ्ते में तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव बढ़ा और तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ।

कोची बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 1100 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 500 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 12700 रुपए, 11800 रुपए और 12600 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव केरल के बाज़ारों के समान रहा। भाव 10600 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 900 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 11500 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिकोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 14300 रुपए पर खुला और भाव में महीने के पहले तीन हफ्तों के दौरान घटाव का रुख रहा। चौथे हफ्ते के दौरान भाव बढ़ता रहा और तत्पश्चात बढ़ोत्तरी का रुख रहा। भाव प्रति क्विंटल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15300 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्टुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 13000 रुपए पर खुला और भाव में महीने के दौरान घट-बढ़ का रुख दर्शाता रहा और प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 12800 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिकोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 10300 रुपए पर खुला। महीने के दौरान भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 450 रुपए के घाटे के साथ 9850 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिलका निकाले गए नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के लाभ के साथ 19000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्चवी बाज़ार में नारियल का भाव 17000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 18000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलके निकाले गए नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13500 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी भाव पर रहा। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में

आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22,500 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी पर स्थिर रहा।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का भाव प्रति हज़ार फल 10000 रुपए पर खुलकर पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

इंडोनेशिया में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान बढ़ाव का रुख रहा जबकि फिलीपीन्स और भारत में अनियमित रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

महीने के दौरान फिलीपीन्स और इंडोनेशिया के बाज़ारों में नारियल के भाव में

थोड़ा घटाव का रुख रहा जबकि भारत और श्रीलंका में नारियल का भाव अनियमित रहा। फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स और इंडोनेशिया के बाज़ारों में खोपरे के भाव में बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ जबकि भारत और श्रीलंका में खोपरे के भाव में थोड़ा घट-बढ़ का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

ड्रेसिकेटड नारियल

प्रमुख ड्रेसिकेटड नारियल निर्यातक देशों में ड्रेसिकेटड नारियल का एफओबी भाव सारणी में दर्शित है।

नारियल खोपड़ी कोयला

अक्तूबर महीने के दौरान फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में नारियल खोपड़ी कोयले के एफओबी भाव सारणी में दर्शित है।

नवंबर 2017

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव नवंबर 2017 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 16900 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 18500 रुपए पर खुला। तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 2100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 19000 रुपए पर बंद हुआ। कोषिकोट बाज़ार में 2800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 21300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 16000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल

1333 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 17333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव नारियल तेल के भाव के अनुरूप रहा। महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 11700 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 11350 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में प्रति क्विंटल

12100 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में बढ़ाव दर्शित हुआ।

कोची बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 2100 रुपए, आलप्पुज़ा बाज़ार में 1200 रुपए और कोषिकोट बाज़ार में 1800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 13800 रुपए, 12600 रुपए और 13900 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव में बढ़ाव का रुख रहा। भाव 11000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 1300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 12300 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिकोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 15000 रुपए पर खुला और भाव में महीने के पहले तीन हफ्तों के दौरान घटाव का रुख रहा। चौथे हफ्ते के दौरान भाव बढ़ता रहा और प्रति क्विंटल 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15100 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिपुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 12800 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 12800 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिकोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हजार फल 10300 रुपए

पर खुला। महीने के दौरान भाव में मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 950 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9350 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ।

नारियल

नेट्टुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिलका निकाले गए नारियल का भाव प्रति हजार फल 18000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 3000 रुपए के लाभ के साथ 21000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव 18000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 19000 रुपए पर बंद हुआ। बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलके निकाले गए नारियल का भाव प्रति हजार फल 13500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हजार फल 500 रुपए के लाभ के साथ 14000 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हजार फल 22,500 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी पर स्थिर रहा।

डाब

कर्नाटक के मद्रूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का भाव प्रति हजार फल 10000 रुपए पर खुलकर पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

फिलीपीन्स में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान अनियमित रुख रहा जबकि इंडोनेशिया में घटाव का रुख रहा। भारत में नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के पहले सप्ताह के दौरान फिलीपीन्स और भारत के बाज़ारों में खोपरे के भाव में बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ जबकि इंडोनेशिया में खोपरे के भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा और शेष हफ्ते के दौरान भाव स्थिर रहा। श्रीलंका में नारियल के भाव में मिश्रित रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

डैसिकेटड नारियल

प्रमुख डैसिकेटड नारियल निर्यातक देशों में डैसिकेटड नारियल का एफओबी भाव सारणी में दर्शित है।

‘भारतीय नारियल पत्रिका’ के वार्षिक चंदे का नवीनीकरण

यदि आप ने भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया है तो कृपया नवीनीकरण हेतु 40 रु. का मनीऑर्डर या अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड के नाम बना रेखांकित डिमांड ड्राफ्ट नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011.

बाज़ार भाव-देशीय

सितंबर 2017

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल				डाब	
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषि ककोट	कंगयम	कोची (एफएस्क्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि ककोट	कंगयम	कोषि ककोट	तिपूर	अरसिकेरे	कोषि ककोट	नेटुमंगाट	अरसिकेरे	बेंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)	मदुर
03.09.2017	15700	15500	16800	14000	10800	10450	10900	9700	12800	12500	रि.प्रा.नहीं	8500	16000	14000	13750	21500	10000
10.09.2017	16700	16200	17700	14867	11700	10800	11500	10100	14200	13500	रि.प्रा.नहीं	11600	16000	15000	13750	21500	10000
17.09.2017	16800	16900	18500	14667	11800	11450	12000	10500	14800	13500	रि.प्रा.नहीं	10900	18000	17000	13750	22500	10000
24.09.2017	16600	16600	18400	15333	11600	11300	11900	10500	14100	13000	रि.प्रा.नहीं	10400	18000	17000	13500	22500	10000
30.09.2017	16900	16900	18500	15333	11700	11350	12100	10600	14400	13000	रि.प्रा.नहीं	10300	18000	17000	13500	22500	10000

अक्टूबर 2017

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल				डाब	
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषि ककोट	कंगयम	कोची (एफएस्क्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि ककोट	कंगयम	कोषि ककोट	तिपूर	अरसिकेरे	कोषि ककोट	नेटुमंगाट	अरसिकेरे	बेंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)	मदुर
01.10.2017	16800	16800	18500	15200	11600	11300	12100	10600	14300	13000	रि.प्रा.नहीं	13000	18000	17000	13500	22500	10000
08.10.2017	16700	16700	18400	14800	11500	11200	11900	10500	13500	12100	रि.प्रा.नहीं	12100	18000	17000	13500	22500	10000
15.10.2017	16600	16600	18400	रि.प्रा.नहीं	11400	11200	11900	रि.प्रा.नहीं	13200	11300	रि.प्रा.नहीं	11300	18000	17000	13500	22500	10000
22.10.2017	16705	16600	18400	14867	11500	11200	12000	10500	15000	12000	रि.प्रा.नहीं	12000	19000	17000	13500	22500	10000
31.10.2017	17900	17700	19300	16000	12700	11800	12600	11500	15300	12800	रि.प्रा.नहीं	12800	19000	18000	13500	22500	10000

नवंबर 2017

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल				डाब	
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषि ककोट	कंगयम	कोची (एफएस्क्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि ककोट	कंगयम	कोषि ककोट	तिपूर	अरसिकेरे	कोषि ककोट	नेटुमंगाट	अरसिकेरे	बेंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)	मदुर
01.10.2017	16900	16900	18500	16000	11700	11350	12100	11000	15000	12800	रि.प्रा.नहीं	10300	18000	18000	13500	22500	10000
05.11.2017	17900	17900	19600	15867	12700	12000	12650	11000	14350	13000	रि.प्रा.नहीं	9850	19000	18000	14000	22500	10000
12.11.2017	17900	17900	19700	रि.प्रा.नहीं	12700	12000	12700	11000	14200	13200	रि.प्रा.नहीं	9350	21000	18000	14000	22500	10000
19.11.2017	18600	18400	20700	16667	13400	12250	13500	11500	15000	13200	रि.प्रा.नहीं	9150	21000	18000	14000	22500	10000
26.11.2017	19000	19000	21300	17200	13800	12600	रि.प्रा.नहीं	12300	15100	13100	रि.प्रा.नहीं	9250	21000	19000	14000	22500	10000
30.11.2017	19000	19000	21300	17333	13800	12600	13900	12300	15100	12800	रि.प्रा.नहीं	9350	21000	19000	14000	22500	10000

स्त्रोत

कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2

कोषिककोट : 'मातृभूमि'

आलप्पुषा : 'मलयाला मनोरमा'

अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे

कोषिककोट बाज़ार में 'ऑफिस पास' खोपरे का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

सितंबर 2017

तारीख	नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)				डेसिकेटड नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				छिलका निकाला नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				नारियल खोपड़ी कोयला (यूएस \$/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय	
	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
02.09.2017	1542	1588	1580	2436	948	987	1506	1675	2502	2430	3052	2634	180	225	307	496	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
09.09.2017	1640	1600	1600	2591	914	987	1506	1675	2502	2430	3124	2688	186	225	322	527	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
16.09.2017	1573	1570	1570	266	908	987	1506	1831	2508	2430	3283	2702	189	221	318	590	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
23.09.2017	1517	1570	1570	2575	905	987	1506	1800	2508	2430	3294	2731	202	214	345	605	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
30.09.2017	1444	1500	1501	2622	899	954	रि.प्रा.नहीं	1815	2508	2430	रि.प्रा.नहीं	2762	203	207	रि.प्रा.नहीं	605	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं

अक्टूबर 2017

तारीख	नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)				डेसिकेटड नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				छिलका निकाला नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				नारियल खोपड़ी कोयला (यूएस \$/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय	
	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
07.10.2017	1370	1393	1370	2567	864	829	1529	1768	2502	2430	3326	2511	204	203	352	584	452	466	404	460
14.10.2017	1445	1387	1421	2552	865	836	1540	1752	2502	2440	3369	2531	203	200	348	576	452	466	403	462
21.10.2017	रि.प्रा.नहीं	1460	1469	2552	891	881	1553	1753	2502	2450	3172	2514	200	197	352	476	452	466	403	465
28.10.2017	रि.प्रा.नहीं	1500	1568	2675	912	911	1472	1875	2502	2450	3666	2514	198	197	358	592	452	466	393	466

नवंबर 2017

तारीख	नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)				डेसिकेटड नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				छिलका निकाला नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				नारियल खोपड़ी कोयला (यूएस \$/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		अंतर्राष्ट्रीय		देशीय	
	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
04.11.2017	1578	1500	1550	2760	931	911	1472	1958	2502	2450	3352	2416	200	222	360	617	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
11.11.2017	1554	1503	1538	2760	934	881	1496	1958	2502	2450	3365	1965	222	237	351	632	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
18.11.2017	1563	1508	1515	2837	934	881	1484	2035	2447	2450	3627	2556	229	237	443	648	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं
25.11.2017	1551	1497	1515	2837	941	881	1485	2128	2447	2450	3453	2679	231	237	445	655	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं	रि.प्रा.नहीं

*भारत

नारियल तेल : कोची बाज़ार
 खोपरा : कोची बाज़ार
 डेसिकेटड नारियल : एफओबी भाव
 नारियल : पोल्लाच्ची बाज़ार
 नारियल खोपड़ी कोयला : एफओबी भाव

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा. बी. एन. एस. मूर्ति
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सरविंदु दास
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
डा. ए. के. नन्दी
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत
कार्यालय ईपीओएक्स: 2376265, 2376553,
2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in,
cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक

श्री. हेमचंद्रा
निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बन्नैघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम

श्री. लुम्हार ओबेद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी - 781 006
दू.भा. : (0361) 2220632,
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु

श्री. राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1, डा. रामस्वामी शालड,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684
23663685
ई-मेल : cdbroc@gmail.com

बिहार

उप निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के सामने,
जगदेवपथ, फुलवारी रोड,
डाक-बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014
E-mail: cdbpatna@gmail.com

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : cdban@rediffmail.com

महाराष्ट्र

उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, युकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाण(वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : cdbthane@gmail.com

ओडिशा

डा. रजतकुमार पाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमारबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 06755-211505, 212505
ई-मेल : cdborissa@gmail.com

आंध्र प्रदेश

श्री आर. जयनाथ
सहायक निदेशक
राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं.4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफैक्स नं. 0866-2842323/मोबाइल: 098866479650
ई-मेल: cdbvijap@gmail.com

पश्चिम बंगाल

श्री खोकन देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, बो.जे.-108-सेक्टर-11
साल्ट लेक, कोलकाता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, 120,
हरगोबिन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा. : 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्केट
(वैलर्ड मार्केट) आनयरा पो.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेल : cdbtvm@yahoo.in

सी आई टी, आलुवा

श्री श्रीकुमार पौदुवाल
प्रसंस्करण इंजीनियर
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाष्ककुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष:0484 2679680,
ई-मेल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

आंध्र प्रदेश

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तंडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359,
ई-मेल : dspfmvuda@gmail.com

असम

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, टेलि. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहार

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक),
मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेल : dspfms@gmail.com

कर्नाटक

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
मंड्या जिला, कर्नाटक-571478 दू.भा.:(08232) 298015
ई-मेल:dspfarmmandya@gmail.com

केरल

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नैयमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेल : cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़

फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेल : cdbkgn1987@gmail.com

ओडिशा

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पितापल्ली,
कुमारबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 211505
ई-मेल : cdbdspfarmmodisha@gmail.com

महाराष्ट्र

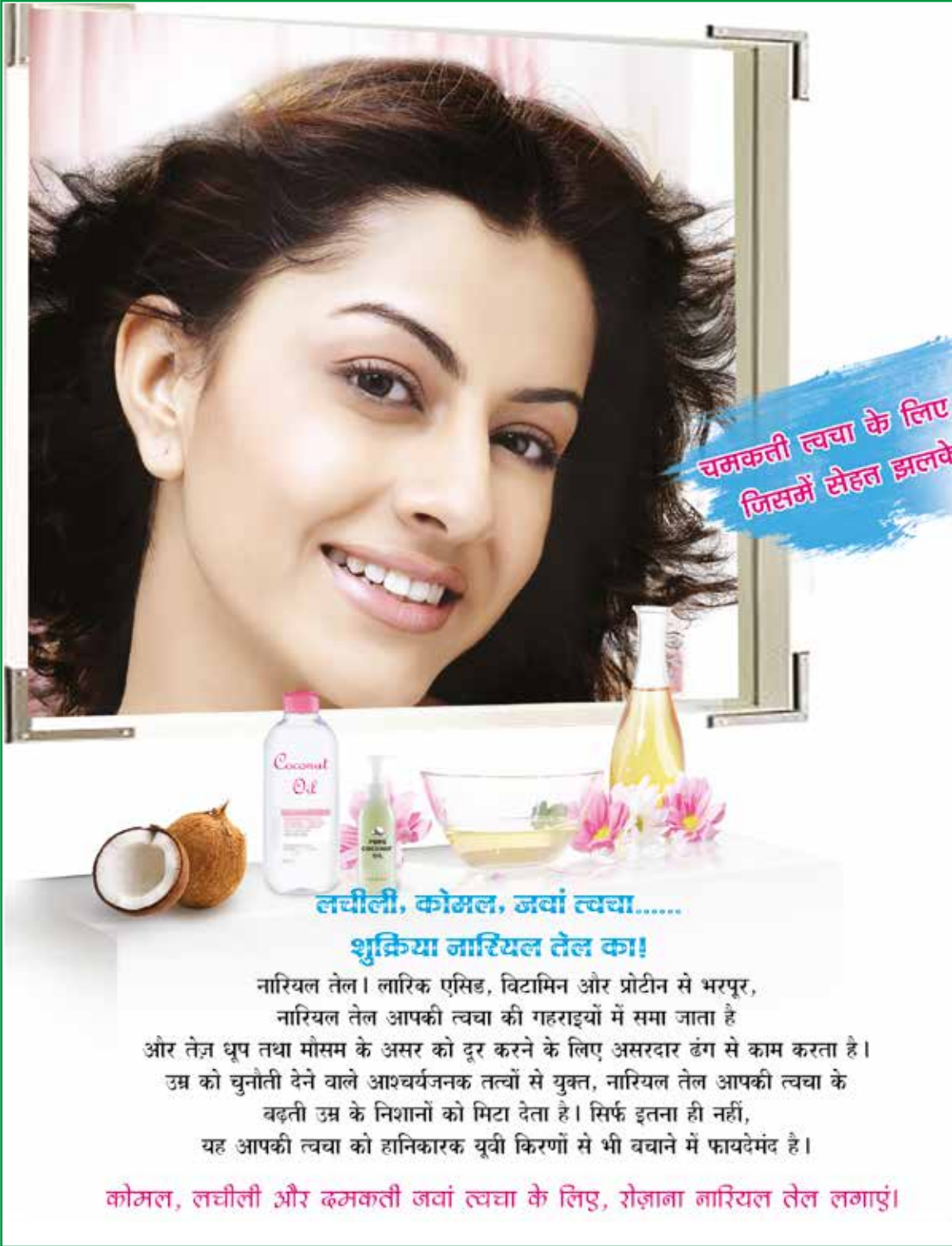
फार्म प्रबंधक, नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म,
पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक,
पालघर-401405, महाराष्ट्र, दू.भा. : 02525 256090
ई-मेल : dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडु

फार्म प्रबंधक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति
नगर डाक, उदुमलपेट,
तमिलनाडु-642112, दू.भा.:(0425) 2290289,
ई-मेल: dspfarmdhali@gmail.com

त्रिपुरा

फार्म प्रबंधक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा,
सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग),
सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा. : 038 23263059
ईमेल- dspfarmhichacharatriपुरा@gmail.com



**चमकती त्वचा के लिए
जिसमें सेहत झलके**

**लचीली, कोमल, जवां त्वचा.....
शुक्रिया नारियल तेल का!**

नारियल तेल। लारिक एसिड, विटामिन और प्रोटीन से भरपूर,
नारियल तेल आपकी त्वचा की गहराइयों में समा जाता है
और तेज़ धूप तथा मौसम के असर को दूर करने के लिए असरदार ढंग से काम करता है।
उम्र को चुनौती देने वाले आश्चर्यजनक तत्वों से युक्त, नारियल तेल आपकी त्वचा के
बढ़ती उम्र के निशानों को मिटा देता है। सिर्फ इतना ही नहीं,
यह आपकी त्वचा को हानिकारक यूवी किरणों से भी बचाने में फायदेमंद है।

कोमल, लचीली और ढमकती जवां त्वचा के लिए, रोज़ाना नारियल तेल लगाएं।



अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय), भारत सरकार, केरा भवन
एसआरवी रोड कोची -682 011, भारत

ई मेल: kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेब: www.coconutboard.nic.in दूरभाष: 0484-2376265, 2377266, 2377267